भारत की स्वतंत्रता की 60 वीं वर्षगांठ

15 अगस्त 2007

लोक सभा सचिवालय
नई दिल्ली

भारत की स्वतंत्रता की 60वीं वर्षगांठ

15 अगस्त 2007

सत्यमेव जयते

लोक सभा सचिवालय
नई दिल्ली

©2007, लोक सभा सचिवालय

अगस्त, 2007

लोक सभा के प्रक्रिया तथा कार्य-संचालन नियम (ग्यारहवां संस्करण) के नियम 382 के अंतर्गत प्रकाशित और जैनको आर्ट इंडिया, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

आमुख

आज भारत की संसद, राष्ट्र के साथ स्वतंत्रता की साठवीं वर्षगांठ मना रही है। वर्षगांठ समारोहों के अंतर्गत संसद भवन के उसी प्रतिष्ठित केन्द्रीय कक्ष में एक स्मरणोत्सव आयोजित किया जा रहा है जहां 14-15 अगस्त, 1947 की मध्यरात्रि को स्वतंत्र भारत की कहानी का आगाज़ हुआ था।

इस पुस्तिका में 14-15 अगस्त, 1947 की भारत की विधान परिषद की कार्यवाही और प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू तथा विधान परिषद के अध्यक्ष, डा. राजेन्द्र प्रसाद के 15 अगस्त, 1947 के रेडियो प्रसारणों को एकसाथ प्रकाशित किया जा रहा है। पुस्तिका में लाल किले पर राष्ट्रीय ध्वज फहराने के पश्चात् पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा दिया गया भाषण भी संकलित है। इस पुस्तिका में स्वतंत्रता दिवस समारोहों की प्रेस कवरेज के फोटो तथा उस समय के ऐतिहासिक क्षणों को दर्शाने वाले चुनिंदा फोटो भी शामिल किए गए हैं।

हम भारत की माननीय राष्ट्रपति, श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील; भारत के माननीय उप-राष्ट्रपति और राज्य सभा के सभापति, श्री मोहम्मद हामिद अंसारी; और माननीय प्रधानमंत्री, डा. मनमोहन सिंह के अत्यंत आभारी हैं कि उन्होंने इस प्रकाशन के लिए अपने प्रेरणादायक संदेश भेजे हैं। हम इस प्रकाशन को अपने मूल्यवान संदेशों से समृद्ध बनाने के लिए माननीय लोक सभा अध्यक्ष, श्री सोमनाथ चटर्जी; भारत के माननीय मुख्य न्यायाधीश, श्री के.जी. बालाकृष्णन; लोक सभा में सदन के माननीय नेता, श्री प्रणब मुखर्जी; लोक सभा में विपक्ष के माननीय नेता, श्री लालकृष्ण आडवाणी; राज्य सभा के माननीय उपसभापति, श्री के. रहमान खान और लोक सभा के माननीय उपाध्यक्ष, श्री चरणजीत सिंह अटवाल के भी आभारी हैं।

हम इस प्रकाशन के लिए उपलब्ध कराए गए अनेक दस्तावेजों के लिए नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय, नई दिल्ली तथा भारत के राष्ट्रीय अभिलेखागार की हार्दिक सराहना करते हैं।

हमारा विश्वास है कि यह पुस्तिका सत्ता के हस्तांतरण की महत्वपूर्ण घटनाओं और 14-15 अगस्त, 1947 की आजादी की भोर की एक झलक प्रस्तुत करेगी।

नई दिल्ली
15 अगस्त 2007

पी.डी.टी. आचारी
महासचिव, लोक सभा

संदेश

सत्यमेव जयते

राष्ट्रपति,
भारत गणतंत्र
PRESIDENT,
REPUBLIC OF INDIA

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि लोक सभा भारत की आजादी की हीरक जयन्ती मनाने के लिए 15 अगस्त 2007 को एक स्मृति समारोह आयोजित कर रहा है।

जिस समय राष्ट्र अपनी आजादी की हीरक जयंती मना रहा है, आइए हम, आजादी के लिए अपनी जान न्यौछावर करने वाले उन शहीदों और स्वतंत्रता सेनानियों को कृतज्ञतापूर्वक स्मरण करें, जिन्होंने कन्धे से कन्धा मिला कर इस संघर्ष में भाग लिया था। मुझे विश्वास है कि यह समारोह सभी महिलाओं और पुरुषों को राष्ट्र के सम्मुख उपस्थित चुनौतियों का सामना करने और एक साथ मिल जुल कर सहयोग के साथ कार्य करने के लिए प्रेरित करेगा।

मैं समारोह की सफलता की कामना करती हूं।

नई दिल्ली
7 अगस्त 2007

प्रतिभा देवीसिंह पाटील

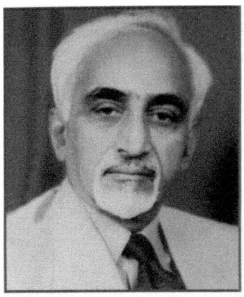

सत्यमेव जयते

उप-राष्ट्रपति, भारत
VICE-PRESIDENT OF INDIA

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि भारत की स्वतंत्रता की 60वीं वर्षगांठ मनाने के लिए 15 अगस्त, 2007 को संसद के केन्द्रीय कक्ष में एक समारोह आयोजित किया जा रहा है।

वर्षगांठ, स्मरण करने और पुन: संकल्प लेने के अवसर हैं। हमने संसदीय लोकतंत्र के दायरे में रहकर अपने राष्ट्रीय जीवन के विविध क्षेत्रों में त्वरित विकास किया है। संवैधानिक साधनों के माध्यम से हमने अपने सभी देशवासियों को अनुपाती न्याय प्रदान किया है। नियमित चुनावों ने सरकारों का शांतिपूर्ण परिवर्तन सुनिश्चित किया है। आज भारत को विश्व का सबसे बड़ा कार्यशील लोकतंत्र होने का गौरव प्राप्त है। अपनी उपलब्धियों का जश्न मनाने के साथ-साथ हमें यह भी याद रखना होगा कि हमें अपने देश के निर्माताओं और उन शहीदों के स्वप्नों को साकार करने के लिए अभी बहुत कुछ करना है जिन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की आहूति दे दी।

इस ऐतिहासिक अवसर पर, आओ हम अपने स्वतंत्रता सेनानियों को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करें और उनके संजोए महान आदर्शों और स्वप्नों को पूरा करने का संकल्प लें।

उनके द्वारा जगाई गई ज्योति सदैव हमारा मार्गदर्शन करती रहे।

नई दिल्ली
12 अगस्त 2007

मोहम्मद हामिद अंसारी

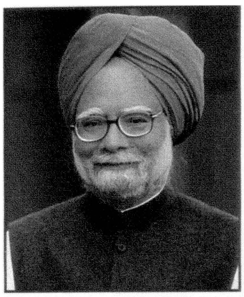

सत्यमेव जयते

प्रधान मंत्री
PRIME MINISTER

संदेश

प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने साठ वर्ष पूर्व 14-15 अगस्त, 1947 की मध्य रात्रि में इसी परिसर में बोलते हुए हमारे ''नियति से मिलन'' के बारे में कहा था और इसी केन्द्रीय कक्ष में संविधान सभा के सदस्यों को स्मरण कराया था कि हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने हमारी जनता से जो प्रतिज्ञा की थी उसे पूरा करने का दायित्व ''भारत की संप्रभु जनता का प्रतिनिधित्व करने वाले संप्रभु निकाय, इस सभा पर है।''

इन साठ वर्षों में, स्वतंत्र भारत का सबसे बड़ा योगदान यह प्रदर्शित करना रहा है कि औपनिवेशिक शासन से मुक्ति के पश्चात् विकासशील अर्थव्यवस्था में रहने वाले गरीब लोग खुले समाज और खुली अर्थव्यवस्था के दायरे में रहकर अपनी सामाजिक और आर्थिक स्थिति से उबर सकते हैं। भारत में कार्यशील लोकतंत्र है। यह सच्चे अर्थों में बहुलवादी, उदार, बहु-सांस्कृतिक, बहु-जातीय, बहुभाषी और पंथनिरपेक्ष लोकतंत्र है। कानून के शासन और मौलिक मानवाधिकारों का सम्मान करते हुए, पंथ निरपेक्ष और लोकतांत्रिक संविधान के ढांचे में आर्थिक विकास तथा सामाजिक और राजनीतिक सशक्तीकरण को आगे बढ़ाने की दिशा में भारतीय प्रयोग की सफलता के कारण हमारे देश को विश्व समुदाय के बीच विशिष्ट स्थान प्राप्त है।

भारत की संसद हमारे लोकतंत्र का महान प्रतीक है। यहीं हमारी जनता की आशाएं और अभिलाषाएं अभिव्यक्त होती हैं। यहीं हम जनप्रतिनिधि के रूप में राष्ट्र रूपी जलयान को अच्छे-बुरे समय रूपी जल से खेकर वांछित शांति और प्रगति के उस तट तक ले जाने का अपना दायित्व निभाते हैं। इस साठवीं वर्षगांठ पर आइए हम सब पंथनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक गणराज्य के ढांचे में जन कल्याण के लिए कार्य करने की अपनी प्रतिबद्धता को सुदृढ़ बनाएं। आइए हम सब यह सुनिश्चित करने के लिए सदैव प्रतिबद्ध रहें कि भारत की संसद में हमारी जनता की आशाएं और अभिलाषाएं प्रतिध्वनित होती रहें और यह उनकी अपेक्षाओं पर खरी उतरे।

नई दिल्ली
27 जुलाई 2007

मनमोहन सिंह

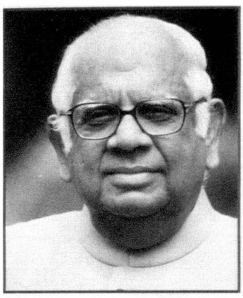

सत्यमेव जयते

अध्यक्ष, लोक सभा
SPEAKER, LOK SABHA

संदेश

साठ वर्ष पूर्व, 15 अगस्त, 1947 को हमने अपने शहीदों और स्वतंत्रता-सेनानियों के बलिदान और संकल्पित संघर्ष के परिणामस्वरूप, दमनकारी साम्राज्यवादी शासन से मुक्ति पाकर अपनी सहस्राब्दिक सभ्यता के जीवन और काल के एक नए युग में प्रवेश किया।

यह स्वतंत्रता-प्राप्ति एक शोषणकारी औपनिवेशिक शासन को समाप्त करने के कटिबद्ध प्रयासों का चरमोत्कर्ष थी जब महाद्वीपीय आयामों और बहुरंगी विविधता वाले एक राष्ट्र ने अपनी नियति पर नियंत्रण पाया ताकि वह अपने लाखों नागरिकों के लिए गरिमा और समृद्धि, मानव-विकास तथा राष्ट्रीय संपदा से भरा-पूरा भविष्य निर्मित कर सके।

भारत की जनता को सत्ता का हस्तांतरण पीड़ा, उथल-पुथल और अनिश्चय की स्थिति में हुआ। हमारे राष्ट्र-निर्माताओं को इन जटिलताओं का पूरा आभास था और उन्होंने हमारे राजनैतिक तंत्र व शासन-प्रणाली की सबसे उपयुक्त संरचना के रूप में संसदीय लोकतंत्र को चुना ताकि विकास और समता पर समान जोर देने वाले एक विकसित राष्ट्र-जिसमें संसद की बुनियादी भूमिका हो-के लक्ष्य को साकार किया जा सके।

आज यदि पीछे मुड़कर देखें तो संसदीय लोकतंत्र को सशक्त बनाने में हमें मिली सफलता से हम काफी संतुष्टि का अनुभव कर सकते हैं। देश की सर्वोच्च प्रतिनिधिक संस्था के रूप में हमारी संसद ने अपनी विशिष्ट, समावेशी, बहुविध और परिचर्यात्मक रीतियों से समाज की कई चुनौतियों से निपटने और भारत को एक आर्थिक महाशक्ति बनाने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

यह सर्वथा उचित ही है कि संसद को पूरी जिम्मेदारी और जवाबदेही से जनता की सेवा करने की अपनी भूमिका को स्वीकार करते हुए इस महत्वपूर्ण अवसर को समुचित रूप से मनाना चाहिए।

तथापि, अब तक की अपनी उपलब्धियों से हमें आत्मसंतोष नहीं कर लेना चाहिए। हमें इस अवसर पर सुसंगत ढंग से आत्मनिरीक्षण करना चाहिए तथा भावी बहुविध कार्यों

को करना चाहिए। जीवंत, गतिशील लोकतंत्र का सपना जनता को उसकी आकांक्षाओं के पूर्ण करने का मार्ग दिखाता रहा है और इसे हमारे सभी प्रयासों का मार्गदर्शन करते रहना चाहिए ताकि हम सभी के लिए न्याय और समता को बढ़ावा दे सकें, मौलिक स्वतंत्रता का संरक्षण कर सकें, अपने पंथनिरपेक्ष ढांचे को सुदृढ़ कर सकें और अपनी एकता और अखंडता की पूर्णरूपेण रक्षा कर सकें। हमें विभाजनकारी और पथभ्रष्ट प्रवृत्तियों का मुकाबला करने हेतु एक होकर प्रयास करने चाहिए और उज्जवल भविष्य वाले देश के रूप में हमारी पहचान होनी चाहिए।

इस स्मरणीय अवसर पर हम उन सभी व्यक्तियों के प्रति अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करें जिन्होंने राष्ट्र के लिए अपने प्राणों की आहूति दे दी और हम शांतिपूर्ण, पंथनिरपेक्ष, प्रगतिशील तथा समृद्ध भारत के उनके लक्ष्य और स्वप्न के प्रति स्वयं को फिर से समर्पित करें।

नई दिल्ली
8 अगस्त 2007

सोमनाथ चटर्जी

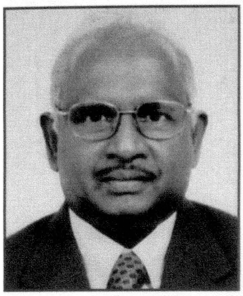

सत्यमेव जयते

भारत के मुख्य न्यायाधीश
CHIEF JUSTICE OF INDIA

संदेश

साठ वर्ष पूर्व आज के ही दिन हमारे देश ने औपनिवेशिक शासन की बेड़ियों से मुक्त होकर नये सिरे से जीवन प्रारंभ किया था। हमने कठोर परिश्रम से वह आजादी हासिल की जो स्वतंत्रता की बलिवेदी पर हमारी कई पीढ़ियों के बलिदान के पश्चात् मिली थी। हमारी स्वतंत्रता के लिए उन शहीदों ने अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया।

पिछले साठ वर्षों में भारत ने एक नवीन स्वतंत्र राज्य से आगे बढ़कर एक वैश्विक महाशक्ति का दर्जा हासिल किया है। हम आज सभी क्षेत्रों में—चाहे वह आर्थिक विकास हो, बौद्धिक श्रेष्ठता का क्षेत्र हो या सैन्यशक्ति—विश्व के सर्वाधिक विकसित देशों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रहे हैं। कई क्षेत्रों में तो हम उनसे भी आगे निकलने की स्थिति में हैं। फिर भी, मंजिलें और भी हैं और उपलब्धियां भी कई हासिल करनी हैं। लेकिन इस यात्रा में हम कभी यह न भूलें कि हम कहीं भी हों; हमारी जाति, पंथ या धर्म कुछ भी हो; हम सभी के हृदय आपस में उस अदृश्य सूत्र, अर्थात् भारतीयता से बंधे हैं। यह सूत्र हम सभी को आपस में जोड़े हुए है, हमारी पहचान है और हमें अपने पूर्वजों के बलिदान का स्मरण कराता है। हमें अपनी इस पहचान को सदैव संजोए रखना है और राष्ट्रहित के लिए कार्य करना है।

भारत की स्वतंत्रता की हीरक जयंती के इस अनुपम अवसर पर मैं आप सबके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूं।

नई दिल्ली
27 जुलाई 2007

के.जी. बालकृष्णन

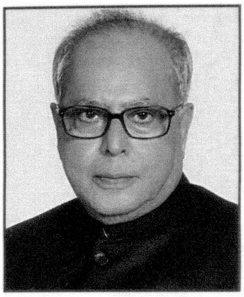

सत्यमेव जयते

सदन के नेता, लोक सभा
LEADER OF THE HOUSE,
LOK SABHA

संदेश

भारत की स्वतंत्रता का हीरक जयंती समारोह ऐसा अवसर है, जो अत्यंत हर्ष और गर्व का भाव जागृत करता है। यह हमारे संविधान-निर्माताओं के योगदान को स्मरण करने का अवसर भी है जिन्होंने एक नव-राष्ट्र को स्थापित होने और विकास करने का आधार प्रदान किया।

भारत को विश्वभर में लोकतांत्रिक मूल्यों और मानदण्डों के लिए संघर्षरत लोगों की आकांक्षाओं का प्रकाशस्तंभ माना जाता है और इसका श्रेय हमारे देश में विद्यमान संसदीय लोकतंत्र के लचीलेपन और सहिष्णुता को जाता है। वास्तव में, यह हमारे संविधान के प्रावधानों से पुष्ट संसदीय लोकतंत्र की सशक्तता ही है जिसके कारण यहां स्वतंत्र प्रेस और स्वाधीन न्यायपालिका जैसी मजबूत राष्ट्रीय संस्थाएं निर्मित करना संभव हो सका। भारत का संविधान हमारी संसदीय प्रणाली का अधिकार-पत्र (मैग्ना कार्टा) है। विगत साठ वर्षों के दौरान हमारे राष्ट्र का राजनीतिक परिदृश्य नई दिशाओं की ओर उन्मुख हुआ है जिसने भारतीय संविधान के विभिन्न पीढ़ियों के विधायकगणों को नयी चुनौतियों का सामना करने का मार्ग दिखाया है।

आज जबकि भारत तेजी से आगे बढ़ता जा रहा है, देश की प्रगति का एकमात्र सिद्धांत ऐसा सर्वसमावेशी विकास होना चाहिए जो देश के सभी वर्गों को लाभान्वित करे। हमारी राजनीतिक प्रणाली, संसदीय पद्धतियां और राष्ट्रीय संस्थाएं भी स्वाभाविक रूप से ऐसे विकास के अनुरूप हैं। मैं आशा करता हूं कि हम इस उद्देश्य के साथ अपने प्रयास जारी रखेंगे। ऐसा करना ही उन शहीदों को हमारी महान श्रद्धांजलि होगी जिन्होंने आजादी के लिए संघर्ष करते हुए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए।

इस खुशी के मौके पर सभी को मेरी शुभकामनाएं।

जय हिंद।

नई दिल्ली
3 अगस्त 2007

प्रणब मुखर्जी

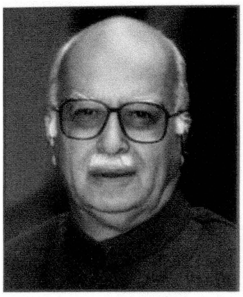

सत्यमेव जयते

नेता विपक्ष, लोक सभा
LEADER OF OPPOSITION,
LOK SABHA

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि भारत की स्वाधीनता की हीरक जयंती समारोहों के अंतर्गत 15 अगस्त, 2007 को संसद भवन के केन्द्रीय कक्ष में स्मरणोत्सव का आयोजन किया जा रहा है।

यद्यपि, औपनिवेशिक शासन से कड़े संघर्ष से मिली आजादी का उत्सव हम हर वर्ष मनाते हैं, तथापि यह हीरक जयंती वर्ष होने के कारण इसका विशेष महत्व है और इसे राष्ट्र द्वारा समुचित रूप से मनाया जाना चाहिए। सामान्यत: इस समारोह में हम उन शहीदों का स्मरण करते हैं जिन्होंने देश की स्वाधीनता के लिए अपने जीवन का बलिदान दिया। इस महत्वपूर्ण अवसर पर यह हमारा परम कर्त्तव्य है कि हम यह सुनिश्चित करें कि आजादी का लाभ कुछेक विशेष व्यक्तियों तक ही सीमित न रहे, बल्कि देश के प्रत्येक नागरिक तक पहुंचे।

मुझे विश्वास है कि भारत की आजादी के हीरक जयंती वर्ष में देशभर में होने वाले सभी आयोजन पूर्णत: सफल होंगे। इस अवसर पर मैं अपने सभी देशवासियों को अपनी शुभकामनाएं देता हूं।

नई दिल्ली
31 जुलाई 2007

लाल कृष्ण आडवाणी

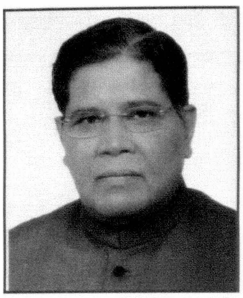

सत्यमेव जयते

उप सभापति, राज्य सभा
DEPUTY CHAIRMAN,
RAJYA SABHA

संदेश

हमारी स्वतंत्रता की हीरक जयंती के अवसर पर मैं समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं। इस ऐतिहासिक अवसर पर मैं, हमारे उन महान स्वतंत्रता-सेनानियों, नेताओं और शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं जिन्होंने विदेशी शासन की बेड़ियों से हमें मुक्त कराने के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। मैं, देश की सेनाओं के वीर सैनिकों को भी सलाम करता हूं जो सभी प्रकार की विषमताओं के बावजूद निर्भीक भाव से हमारी सीमाओं की चौकसी करते हैं।

राष्ट्रपति महात्मा गांधी के सम्मोहक व्यक्तित्व और सक्रिय नेतृत्व ने लोगों में व्यापक जागृति पैदा की थी जो अंततः देश की स्वतंत्रता के रूप में फलीभूत हुई। 15 अगस्त, 1947 के दिन जब पहली बार तिरंगा झंडा लहराया गया तो हमने एक नए, स्वतंत्र और ऊर्जस्वी राष्ट्र के रूप में एक बड़ा कदम आगे बढ़ाया। वह एक ऐसा अद्‌भुत क्षण था जिसके बारे में आधुनिक भारत के निर्माता पं. जवाहरलाल नेहरू ने कहा, ''एक लंबे समय से दमित राष्ट्र की आत्मा को वाणी मिली।'' स्वतंत्रता के साठ वर्ष पश्चात् आज भारत एक राष्ट्र के रूप में विश्व में प्रमुख स्थान प्राप्त कर रहा है। एक समृद्ध और विविध संस्कृति के पोषक, एक अरब से अधिक लोगों के जीवंत लोकतंत्र के रूप में भारत आज तकनीकी रूप से प्रतिस्पर्धी विश्व में लगातार आगे बढ़ रहा है। व्यापार और निगमित क्षेत्र में हमारे देशवासी विज्ञान, प्रौद्योगिकी और अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्रों में अपनी अमिट छाप छोड़ रहे हैं। आज भारत जीवन के बहुआयामी पक्षों में रचनात्मकता, नूतनता और विकास का पर्याय है। हम स्वतंत्रता, कानून-व्यवस्था और समता के माध्यम से लोकप्रगति और लोकसमृद्धि का लक्ष्य हासिल करने का प्रयास करते आए हैं। हमें इस बात का गर्व है कि हमारा देश विश्व की समस्त जनसंख्या के छठे भाग से अधिक की आबादी वाला एक सातत्यपूर्ण और निरंतर सशक्तीकृत लोकतंत्र है।

स्वतंत्रता की हीरक जयंती हमारे लिए अपनी उपलब्धियों और भावी उद्देश्यों पर एक बार फिर नजर डालने का उपयुक्त अवसर है। इसमें संदेह नहीं है कि आने वाले समय

में, एक राष्ट्र के रूप में, भारत क्षेत्रीय और वैश्विक परिदृश्य में उत्कृष्टता और विकास के उच्चतर प्रतिमान स्थापित कर एक उल्लेखनीय भूमिका निभाएगा और समस्त मानवता के स्थैर्य, शांति तथा समृद्धि में अपना योगदान करता रहेगा।

नई दिल्ली
3 अगस्त 2007

के. रहमान खान

सत्यमेव जयते

उपाध्यक्ष, लोक सभा
DEPUTY SPEAKER,
LOK SABHA

संदेश

15 अगस्त, 2007 को पूरे राष्ट्र के साथ हमारी स्वतंत्रता की साठवीं वर्षगांठ मनाना वास्तव में खुशी का अवसर है। इस महत्वपूर्ण अवसर पर हम हिंदू, सिख, मुसलमान, ईसाई और अन्य वर्गों के उन सभी स्वतंत्रता-सेनानियों के प्रति आभार प्रकट करते हैं जिन्होंने औपनिवेशिक शासन से हमारी मातृभूमि को स्वतंत्रता दिलाने के लिए शौर्यपूर्ण बलिदान दिया। भारत की आजादी की यात्रा उस अथक संघर्ष की एक ऐसी गाथा है जिसने लाखों लोगों को क्रांतिकारी भावना के साथ राजनीतिक अभियान छेड़ने के लिए प्रेरित किया। हमारे स्वतंत्रता-संग्राम की समृद्ध विरासत, संविधान-निर्माताओं द्वारा सुविधि से रचित हमारे संविधान और हमारी मूलबद्ध लोकतांत्रिक परंपराओं से प्रेरित हमारी राज्य-व्यवस्था, पूरी ऊर्जस्विता से अपना कार्य करती रही है। हमारे देश में विभिन्न संस्कृतियों और भाषाओं के लोग शांति व सद्भावना से मिल-जुलकर रहते हैं। विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश के रूप में भारत का विश्व समुदाय के बीच एक गौरवपूर्ण स्थान है। हम विश्वासपूर्वक यह दावा कर सकते हैं कि पिछले साठ सालों में हमारे देश ने संपूर्ण सामाजिक-आर्थिक विकास के क्षेत्र में बड़ी उपलब्धियां हासिल की हैं।

आज भारत सूचना-प्रौद्योगिकी और दूरसंचार के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण वैश्विक शक्ति बनकर उभर रहा है। अपने विशाल ज्ञान-भण्डार के साथ हमारा राष्ट्र विश्व के अग्रणी ज्ञानवान समाजों में अपना स्थान सुनिश्चित कर रहा है। तथापि, अभी काफी कुछ किया जाना शेष है और देश को पूर्ण-विकसित राष्ट्र बनाने के लिए हमें उत्कृष्टता की ओर लगातार प्रयास करने होंगे।

इस शुभ अवसर पर, आइए, हम सब स्वयं को राष्ट्र के प्रति समर्पित करते हुए इसकी प्रगति और समृद्धि के लिए कार्य करने का संकल्प दोहराएं।

नई दिल्ली
2 अगस्त 2007

चरणजीत सिंह अटवाल

विषय-सूची

पृष्ठ सं.

- आमुख ..... (i)
- संदेश

  श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील,
  भारत की माननीय राष्ट्रपति

  श्री मोहम्मद हामिद अंसारी,
  माननीय उप-राष्ट्रपति और सभापति, राज्य सभा

  डा. मनमोहन सिंह,
  माननीय प्रधानमंत्री

  श्री सोमनाथ चटर्जी,
  माननीय अध्यक्ष, लोक सभा

  श्री के.जी. बालाकृष्णन,
  भारत के माननीय मुख्य न्यायाधीश

  श्री प्रणब मुखर्जी,
  सदन के माननीय नेता, लोक सभा

  श्री लालकृष्ण आडवाणी,
  माननीय नेता विपक्ष, लोक सभा

  श्री के. रहमान खान,
  माननीय उप सभापति, राज्य सभा

  श्री चरणजीत सिंह अटवाल,
  माननीय उपाध्यक्ष, लोक सभा

- भारतीय विधान परिषद की कार्यवाही
  14-15 अगस्त 1947 1
- पंडित जवाहरलाल नेहरू का भाषण प्रसारण
  15 अगस्त 1947 37
- डा. राजेन्द्र प्रसाद का भाषण प्रसारण
  15 अगस्त 1947 43
- लाल किले पर राष्ट्रीय ध्वज फहराने के पश्चात्
  पंडित जवाहरलाल नेहरू का भाषण
  16 अगस्त 1947 49
- स्वाधीनता दिवस समारोहों की प्रेस कवरेज 53
- संसद में स्वतंत्रता की 25वीं, 40वीं और 50वीं वर्षगांठ के अवसर पर स्मरणोत्सव 57

भारतीय विधान परिषद की कार्यवाही

14-15 अगस्त 1947

भारतीय विधान-परिषद्

बृहस्पतिवार, 14 अगस्त, सन् 1947 ई.

भारतीय विधान-परिषद् का 5वां अधिवेशन कान्स्टीट्यूशन हाउस, नई दिल्ली में रात के 11 बजे, अध्यक्ष (मा. डा. राजेन्द्र प्रसाद) के सभापतित्व में प्रारम्भ हुआ।

वन्दे मातरम् का गान

अध्यक्षः कार्यक्रम का पहला विषय है वन्दे मातरम् का गान। हम सब खड़े होकर इसे सुनेंगे।

[श्रीमती सुचेता कृपलानी (संयुक्त प्रांत : जनरल) ने वन्दे मातरम् गान का प्रथम पद गाया।]

अध्यक्ष का भाषण

अध्यक्ष : *हमारे इतिहास के इस अहम् मौके पर जब वर्षों के संघर्ष और जद्दोजहद के बाद हम अपने देश के शासन की बागडोर अपने हाथों में लेने जा रहे हैं, हमें उस परम पिता परमात्मा को याद करना चाहिये जो मनुष्यों और देशों के भाग्य को बनाता है और हम उन अनेकानेक, ज्ञात और अज्ञात, जाने और अनजाने पुरुषों और स्त्रियों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं जिन्होंने इस दिन की प्राप्ति के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिये, हंसते-हंसते फांसी की तख्तियों पर चढ़ गये, गोलियों के शिकार बन गये, जिन्होंने जेलखानों में और कालापानी के टापू में घुल-घुल कर अपने जीवन का उत्सर्ग किया, जिन्होंने बिना संकोच माता-पिता, स्त्री-संतान, भाई-बहिन यहां तक कि देश को भी छोड़ दिया और धन-जन, सबका बलिदान कर दिया। आज उनकी तपस्या और त्याग का ही फल है कि हम इस दिन को देख रहे हैं।

---

*इस संकेत का अर्थ है कि यह अंग्रेजी वक्तृता का हिन्दी रूपान्तर है।

हम अपनी श्रद्धा और भक्ति का उपहार महात्मा गांधी को भी भेंट करें। तीस वर्षों से वह हमारे पथ-प्रदर्शक (राह दिखाने वाले) और एकमात्र आशा और उत्साह की ज्योति बने रहे हैं। हमारी संस्कृति और जीवन के उस मर्म का वह प्रतीक हैं जिसने हमको इतिहास की आफतों और मुसीबतों में भी जिन्दा रखा। निराशा और मुसीबत के अंधेरे कुएं से हमको उन्होंने खींच निकाला और हमारे दिलों में ऐसी जिन्दगी फूंकी कि हम में अपने जन्म-सिद्ध अधिकार (स्वराज्य) के लिए दावा पेश करने की हिम्मत और ताकत आयी और उन्होंने हमारे हाथों में सत्य और अहिंसा का अचूक अस्त्र दिया जिसके जरिये बिना हथियार उठाये स्वराज्य का अनमोल रत्न इतने कम दाम में, इतने बड़े देश के लिए और यहां के करोड़ों आदमियों के लिए हमने हासिल कर लिया। हमारे जैसे कमजोर लोगों को भी उन्होंने बड़ी चतुराई के साथ, अचल संकल्प के साथ और देश के लोगों में, अपने अस्त्र में और सबसे अधिक ईश्वर में, अटल विश्वास के साथ आगे बढ़ाया। हमारा कर्तव्य है कि हम सच्चे और अटल बने रहें। मैं आशा करता हूं कि अपनी विजय की घड़ी में हिन्दुस्तान उस अस्त्र को नहीं छोड़ेगा और उसके मूल्य को कम करके न आंकेगा जिसने उसे निराशा के गर्त से निकाल कर ऊपर उठाया और जिसने अपनी शक्ति और उपयोगिता को भी प्रमाणित कर दिया है। संसार के भविष्य के निर्माण में जब लड़ाई से दुनिया के लोग ऊब गये और घबराये हुये हैं, उस अस्त्र को बड़ा काम करना है। लेकिन ये बड़ा काम हिन्दुस्तान दूर से दूसरों की नकल करके नहीं पूरा कर सकता है और न हथियारों को जमा करने और ऐसे अस्त्रों के बनाने में, जो ज्यादा से ज्यादा बरबादी कम से कम समय में कर सकते हैं, दूसरों से मुकाबला करके वह पूरा कर सकता है। आज इस देश को मौका मिला है और हम आशा करते हैं कि इसमें उतनी हिम्मत और शक्ति होगी कि वह संसार के सामने लड़ाई, मृत्यु और बरबादी से बचाने का अपना अस्त्र पेश कर सकेगा। संसार को इसकी जरूरत है। अगर वह लड़खड़ाता हुआ बर्बरता के युग में जहां से निकल आने का वह दावा करता है, फिर पहुंचना नहीं चाहता है तो वह इसका स्वागत भी करेगा।

दुनिया के सभी देशों को हम विश्वास दिलाना चाहते हैं कि हम अपने इतिहास के अनुसार सबके साथ दोस्ती, मित्रता का बर्ताव रखना चाहते हैं। किसी से हमारा कोई द्वेष नहीं, हमें किसी के साथ घात नहीं करना है, और हम उम्मीद करते हैं कि हमारे साथ कोई ऐसा नहीं करेगा। हमारी एक ही आशा और अभिलाषा है और वह यह कि हम सबके लिये स्वतंत्रता और मानव जाति में शान्ति और सुख स्थापित करने में मददगार हो सकें।

जिस देश को ईश्वर और प्रकृति ने एक बनाया था, उसके आज दो टुकड़े हो गये हैं। नजदीक के लोगों से बिछुड़ना तो दुखदाई होता ही है। बिछुड़ना हमेशा दुखदाई होता है। ऐसे लोगों से भी बिछुड़ना जिनके साथ थोड़े ही दिनों का संबंध हो, दुखदायी होता है, इसलिए मुझे यह कहना पड़ता है कि इस बंटवारे से हमारे दिल में दुख है। मगर इसके बावजूद हम आपकी तरफ से और अपनी ओर से पाकिस्तान के लोगों को अपनी नेकनीयती और उनकी तरक्की और कामयाबी के लिए अपनी सद्इच्छा, सद्भावना प्रकट करना चाहते हैं। जिस शासन के काम में आज वे लग रहे हैं उसमें हम उनकी पूरी कामयाबी चाहते हैं। ऐसे लोगों को जो बंटवारे से दुखी हैं और पाकिस्तान में रह गये हैं, हम अपनी शुभ-कामना भेजते हैं। उनको घबराना नहीं चाहिए। अपने घर-बार, धर्म और संस्कृति को बचाये रखना चाहिये और हिम्मत और सहिष्णुता से काम लेना चाहिए। उनके ऐसा भय करने का कोई कारण नहीं कि उनके साथ ठीक और न्यायपूर्ण बर्ताव नहीं होगा और उनकी रक्षा नहीं होगी। जो आश्वासन दिया है उसको मान लेना चाहिये और जहां पर आज वे रह रहे हैं वहां अपनी वफादारी और सच्चाई से अपनी मुनासिब जगह, उन्हें हासिल करनी चाहिए।

हिन्दुस्तान में जो अल्पसंख्यक लोग हैं उनको हम आश्वासन देना चाहते हैं कि उनके साथ ठीक और इन्साफ का बर्ताव होगा और उनके और दूसरों के बीच कोई फर्क नहीं किया जायेगा। उनके धर्म और संस्कृति और उनकी भाषा सुरक्षित रहेगी और नागरिकता के सभी अख्तियार और अधिकार उनको मिलेंगे। उनसे आशा की जायेगी कि जिस देश में वे रहते हैं उसकी तरफ और उस देश के विधान की तरफ, वे वफादार बने रहें। सभी लोगों को हम यह आश्वासन देना चाहते हैं कि हमारी अथक कोशिश होगी कि देश से गरीबी और दीनता, भूख और बीमारी दूर हो जाये, मनुष्य-मनुष्य के बीच से भेदभाव उठ जाये, कोई मनुष्य दूसरे का शोषण न करे और सबके लिये सुन्दर समुचित जीवन बिताने का साधन जुटा दिया जाये।

हम एक बड़े काम में लगने जा रहे हैं। हम आशा करते हैं कि देश के सभी लोग हमारे इस काम में मदद और सहयोग देंगे और संसार के दूसरे देश अपनी सहानुभूति और सहायता देंगे। हम आशा करते हैं कि हम अपने को इस योग्य साबित कर सकेंगे।

इसके बाद अब मेरा प्रस्ताव है कि हम उन सब वीरों की पुण्यस्मृति में, जिन्होंने देश में और बाहर स्वातंत्र्य-संग्राम में अपनी बलि दी है, कुछ क्षण मौन खड़े रहें।

(सभा दो मिनट तक मौन खड़ी रही।)

सदस्यों द्वारा प्रतिज्ञा ग्रहण संबंधी प्रस्ताव

अध्यक्षः अब पण्डित जवाहरलाल नेहरू अपना प्रस्ताव उपस्थित करेंगे।

माननीय पण्डित जवाहरलाल नेहरू (संयुक्त प्रांत : जनरल)*: साहब सदर, कई वर्ष हुए कि हमने किस्मत से एक बाजी लगाई थी, एक इकरार किया था, प्रतिज्ञा की थी। अब वक्त आया कि हम इसे पूरा करें। बल्कि वह पूरा तो शायद अभी भी नहीं हुआ, लेकिन फिर भी एक बड़ी मंजिल पूरी हुई। हम वहां पहुंचे हैं। मुनासिब है कि ऐसे वक्त में पहला काम हमारा यह हो कि हम एक प्रण और एक नई प्रतिज्ञा फिर से करें। इकरार करें, आइंदा हिन्दुस्तान और हिन्दुस्तान के लोगों की खिदमत करने का। चन्द मिनटों में यह असेम्बली पूरी तौर से एक आजाद खुदमुख्तार असेम्बली हो जायेगी और यह असेम्बली नुमाइन्दगी करेगी एक आजाद खुद मुख्तार मुल्क की। चुनांचे, इसके ऊपर जबरदस्त जिम्मेदारियां आती हैं और अगर हम इन जिम्मेदारियों को पूरी तौर से महसूस न करें तब शायद हम अपना काम पूरी तौर से न कर सकेंगे। इसलिए यह जरूरी हो जाता है कि इस मौके पर पूरी तौर से सोच-समझ कर इसका इकरार करें। जो रिजोल्यूशन, प्रस्ताव, मैं आपके सामने पेश कर रहा हूं वह इसी इकरार, इसी प्रतिज्ञा का है। हमने एक मंजिल पूरी की और आज उसकी खुशियां मनाई जा रही हैं। हमारे दिल में भी खुशी है और किस कदर गरूर है और इत्मीनान है लेकिन यह भी हम जानते हैं कि हिन्दुस्तान भर में खुशी नहीं है। हमारे दिल में रंज के टुकड़े काफी हैं और—दिल्ली से बहुत दूर नहीं—बड़े-बड़े शहर जल रहे हैं। वहां की गर्मी यहां आ रही है। खुशी पूरे तौर से नहीं हो सकती; लेकिन फिर भी हमें इस मौके पर हिम्मत से इन सब बातों का सामना करना है। न हाय-हाय करना है न परेशान होना है। जब हमारे हाथ में बागडोर आयी तो फिर ठीक तरह से गाड़ी को चलाना है। आम तौर से अगर मुल्क आजाद होते हैं, काफी परेशानियां, मुसीबतों और खूंरेजी के बाद होते हैं। काफी ऐसी खूंरेजी हमारे मुल्क में भी हुई है और ऐसे ढंग से हुई जो बहुत ही तकलीफदेह हुई है। फिर भी हम आजाद हुये, बाअमन तरीकों से, शांतिमय तरीकों से और एक अजीब मिसाल हमने दुनिया के सामने रखी। हम आजाद हुये लेकिन आजादी के साथ मुसीबतें और

---

*अंग्रेजी भाषण का हिन्दी अनुवाद।

बोझे आते हैं। उनका हमें सामना करना है। उनको ओढ़ना है और जो स्वप्न हमने देखा था उसे असल बनाना है। हमें मुल्क को आजाद करना था, मुल्क से गैर-हुकूमत को अलग करना था, यह काम पूरा हुआ। लेकिन, गैर-हुकूमत को अलग करके काम पूरा नहीं होता। जब तक एक-एक इन्सान हिन्दुस्तान का आजादी की हवा में न रह सके और जो मुसीबतें हैं वह हटाई न जायें और जो उसकी तकलीफें हैं, दूर न हो सकें। इसलिए बहुत बड़ा हिस्सा हमारे काम का बाकी है और जब तक वह बातें पूरी न हों उस वक्त तक हमारा काम जारी रहेगा। बड़े-बड़े सवाल हमारे सामने हैं और उनकी तरफ देख कर कुछ दिल दहल जाता है, लेकिन फिर हिम्मत यह सोच कर आती है कि कितने बड़े सवाल हमने पुराने जमाने में हल किये तो क्या हम इन सवालों से दब जायेंगे? ताकत और गुरूर तो हमारा शक्शी और व्यक्तिगत नहीं है। लेकिन कुछ गुरूर है अपने मुल्क पर, और कुछ इत्मीनान है अपने कौम की ताकत पर और उन पर जिन लोगों ने इतनी बड़ी मुसीबतें झेलीं। इसलिए यह भी इत्मीनान होता है कि जो इस वक्त कुछ परेशानियों का बोझ है उनको भी हम ओढ़ेंगे और उन सवालों को भी हम हल करेंगे। आखिर हिन्दुस्तान एक आजाद मुल्क है, अच्छा है। जब हम आजादी के दरवाजे पर खड़े हैं, हम इसको खास तौर से याद रखें कि हिन्दुस्तान किसी एक फिरके का मुल्क नहीं है, एक मजहब वालों का नहीं है, बल्कि बहुत सारे और बहुत किस्म के लोगों का है। बहुत धर्म और मजहबों का है। किस तरह की आजादी हम चाहते हैं? हमारी तरफ से पहले भी यह कहा गया है। जो पहला रिजोल्यूशन मैंने पहले यहां पेश किया था उसमें भी यह कहा गया था कि यह जो आजादी हमारी है, वह हरेक हिन्दुस्तानी के लिये है, हरेक हिन्दुस्तानी का बराबर-बराबर का हक है, हर हिन्दुस्तानी को इस आज़ादी का बराबर-बराबर का हिस्सेदार करना है। इस ढंग से हम आगे बढ़ेंगे और कोई ज्यादती करेगा तो उसे हम रोकेंगे, चाहे वह कोई हो; किसी पर अगर ज्यादती होगी तो उसकी मदद करेंगे, चाहे वह कोई भी हो। अगर हम इस तरह से चलेंगे तो हम बड़े मसले हल कर लेंगे। लेकिन अगर हम तंगख्याली में पड़ जायेंगे तो वह मसले हल नहीं होंगे।

मैं इस रिजोल्यूशन को आपके सामने पेश करता हूं और अंग्रेजी जबान में भी इसको पढ़ कर अभी आपको सुनाऊंगा।

(इसके बाद पं. जवाहरलाल नेहरू ने प्रस्ताव को अंग्रेजी जबान में सभा को पढ़ कर सुनाया)

''निश्चय किया जाता है कि:

(1) रात के बारह बजते ही विधान-परिषद् के सभी उपस्थित सदस्य निम्नलिखित प्रतिज्ञा ग्रहण करेंगे:

'अब जबकि हिन्द वासियों ने त्याग (कुर्बानी) और तप से स्वतंत्रता (आजादी) हासिल कर ली है, मैं ..... जो उस विधान परिषद् (आईन साज मजलिस) का एक सदस्य (मेम्बर) हूं अपने को बड़ी नम्रता (निहायत इनकिसारी) से हिन्द और हिन्दवासियों की सेवा (खिदमत) के लिए अपने को अर्पण (वक्फ) करता हूं ताकि यह प्राचीन (कदीम) देश (मुल्क) संसार में अपना उचित और गौरवपूर्ण (बाइज्जत) जगह पा लेवे और संसार शान्ति स्थापना (अमन कायम) करने और मानव जाति (इन्सान) के कल्याण (बहबूदी) में अपनी पूरी शक्ति लगा कर खुशी-खुशी हाथ बटा सके।'

(2) वे सदस्य जो इस अवसर पर उपस्थित हैं, उस समय जब वे परिषद् के अधिवेशन में इसके बाद उपस्थित हों तो इस प्रतिज्ञा को (ऐसे शाब्दिक परिवर्तनों के साथ जैसा अध्यक्ष निर्धारित करें) ग्रहण करेंगे।'' (तुमुल हर्षध्वनि)

चौ. खलीकुज्जमा (संयुक्त प्रान्त : मुस्लिम) : जनाबे सदर, गालिबन आधी रात के बाद हिन्दुस्तान की तारीख में वह अजीम इन्कलाब होने वाला है जिसके लिए एक सदी से हिन्दुस्तान अपनी आजादी की लड़ाई में मशरूफ रहा। वह घड़ी, वह साइत जिसके लिए बहुत से हिन्दुस्तान के बाशिन्दों ने अपनी जानें भी कुरबान कीं, वह साइत बहुत करीब आ रही है। जहां आज इन कुरबानियों के नतीजे में आपको आजादी नसीब हुई, वहां हमारे सामने एक दूसरा सवाल इससे भी ज्यादा अहम पेश हो जाता है। लड़ाई खत्म हुई, मगर एक दूसरी किस्म की लड़ाई शुरू होने वाली है। वह लड़ाई किसी गैर से नहीं, खुद अपनों ही से होने वाली है। जाहिर

है कि जब किसी कौम से किसी दूसरी किस्म की लड़ाई थी तो उसमें दूसरे किस्म के जज्बात, दूसरे किस्म की हरकात और अमल हमको अख्तियार करना पड़ता। अब वह दौर आने वाला है जब हमको बहुत बड़ी जिम्मेदारियां संभालनी होंगी। इनमें तालियों की गुंजाइश नहीं होगी इनमें बड़े-बड़े नारे न होंगे, क्योंकि जो काम आज के बाद से इस मुल्क के लीडरान और हाउस के जिम्मे आने वाला है, वह दिखाने का नहीं है बल्कि वह मेहनत मशक्कत और खामोशी से इन्सान की खिदमत का है। हम जानते हैं बहुत बड़ी जिम्मेदारी इस असेम्बली के सामने है और वह एक दस्तूर बनाने की है। और एक ऐसा दस्तूर कि जिसमें हिन्दुस्तान की महज अकलियतों को नहीं, बल्कि तमाम बाशिन्दों व अवाम को, गरीब को, हर एक को, वह दस्तूर कफील हो और इसके जरिये से हम हिन्दुस्तान के रहने वाले बाशिन्दों की खिदमत कर सकें। यह बहुत बड़ा अजीम काम है। इस तरह से बहुत सी जिम्मेदारी एडमिनिस्ट्रेशन की खास हाउस को उस वक्त तक जब तक कोई इन्तखाब न हो, संभालना है। एडमिनिस्ट्रेशन की जिम्मेदारी में कभी-कभी लानतें भी पड़ती हैं, कभी-कभी गालियां भी सुननी पड़ती हैं, ईंटें भी फेंकी जाती हैं, इन सबको बर्दाश्त करना पड़ता है। जिस किस्म की प्लैज, हलफ, आपके सामने हैं, इसको पढ़ने से आप यह मालूम कर लेंगे कि इसकी बड़ी जिम्मेदारी है। यों तो हलफ मैं समझता हूं कि जिस वक्त मेम्बरान यहां आये हैं, हलफ लेकर आये हैं कि जहां तक होगा, हकतुल मकदूर हम अपने मुल्क की पूरी खिदमत ईमानदारी और दियानत से करेंगे। एक बाजाब्ता हलफ का कुछ जहनी असर इन्सान की खिलकत और तबियत पर पड़ता है। लिहाजा मैं समझता हूं, यह मौका बहुत अच्छा है कि आज कल इसके कि वह जिम्मेदारी लें, अभी यहां दुनिया के सामने अपने आपको पाबन्द करें। हलफ लेकर अपने आमाल व अफआल में सबसे पहले स्टेट और उसके कायदे को पेश नजर रख कर हम काम करेंगे। इसमें किसी जात के सिफात का खयाल न होगा। इसमें जहां तक होगा ईमानदारी के साथ हम हर शख्स का हक देने की कोशिश करेंगे। आज यह हलफ उठाकर जिस वक्त हम बाहर निकलेंगे, हम हिन्दुस्तान के रहने वालों को एक निवेदन देंगे कि हमने तुम्हारे लिये हलफ उठाया है कि हम ईमानदारी से पूरी जिम्मेदारी को उठायेंगे और जिम्मेदारी को अदा करने में किसी की रिआयत नहीं करेंगे।

मैं इन चन्द अलफाज के साथ हलफनामा और तजवीज की, जो पं. जवाहर लाल ने पेश किया है, ताईद करता हूं। और मैं समझता हूं हर वह मेम्बर जो यहां मौजूद है, निहायत ईमानदारी के साथ, दियानत के साथ इस हलफ को उठायेगा कि हम इस स्टेट की खिदमत में अपनी तमाम जिन्दगी खत्म करेंगे।

श्री एस० राधाकृष्णन (संयुक्त प्रान्त : जनरल) : अध्यक्ष महोदय, यह आवश्यक नहीं है कि इस प्रस्ताव पर, जिसे इतने प्रभावोत्पादक रूप से पं. जवाहरलाल नेहरू ने उपस्थित किया है और जिसका शानदार समर्थन चौ. खलीकुज्जमा ने किया है, मैं कुछ कहूं। आज के दिन को लेकर इतिहास रचा जायेगा तथा गाथायें प्रस्तुत की जायेंगी। हमारे गणतंत्र प्राप्ति के इतिहास में आज का दिन विशेष महत्वपूर्ण है, इससे हमारा एक नया क्रम प्रारम्भ होता है। भारतवासी आज पुनर्निर्माण के प्रयास में संलग्न हैं, वे अपना आमूल परिवर्तन करने में प्रयत्नशील हैं। इनके इस प्रयास के इतिहास में आज का दिन विशेष महत्व रखता है। एक चिरप्रतीक्षा की रजनी के अवसान पर ऐसी रजनी जो भाग्य निर्णायक शुभ-घटनाओं से परिपूर्ण थी, जिसमें स्वातंत्र्य सूर्य के दर्शन के लिये हमने नीरव प्रार्थनायें कीं, जिसमें क्षुधा मृत्यु के भयंकर भूतप्रेत सदा विभीषिश उत्पन्न करते रहे, जिसमें हमारे प्रहरी सदा जागरूक थे और जिसमें प्रकाश का आलोक सदा दीप्त रहा—अब स्वातंत्र्य सूर्य की रश्मियां निकल रही हैं और हम इसका साहोत्साह स्वागत करते हैं। जब हम आज दासता और पराधीनता से मुक्त होकर स्वतंत्रता के प्रांगण में पदार्पण कर रहे हैं तो वस्तुतः यह आनन्द का अवसर है। यह बड़े ही सन्तोष और प्रसन्नता का विषय है कि इस परिवर्तन को इतने सुव्यवस्थित रूप से मर्यादापूर्वक कार्यान्वित किया जा रहा है।

हाउस ऑफ कामन्स में मि. एटली ने जब यह कहा कि यह पहला महान् उदाहरण है जब एक सुदृढ़, शक्तिशाली साम्राज्यवादी राज्य अपनी सत्ता अपने शासितों को सौंप रहा है जिन पर उसने प्रायः दो शताब्दियों तक बड़ी दृढ़ता से और बलपूर्वक शासन किया है, तो उन्होंने एक अभिमान और गौरव का बोध किया था, जो स्पष्ट था। इसकी तुलना के लिए उन्होंने दक्षिणी अफ्रीका से ब्रिटेन के हट जाने का उदाहरण उपस्थित किया था। परन्तु जिस परिस्थिति में और जिस पैमाने पर ब्रिटेन आज भारत से हट रहा है उसकी तुलना में दक्षिणी अफ्रीका से उसका हटना कुछ भी नहीं है। जब हम आज इण्डोनेशिया में डच लोगों के कारनामे देखते हैं, जब हम यह देखते हैं कि फ्रांस किस तरह आज अपने उपनिवेशों से चिपटा हुआ है,

विधान परिषद् के अध्यक्ष, डा. राजेन्द्र प्रसाद, 14–15 अगस्त, 1947 के मध्यरात्रि अधिवेशन को सम्बोधित करते हुए

मध्यरात्रि अधिवेशन में *वन्दे मातरम्* का गान

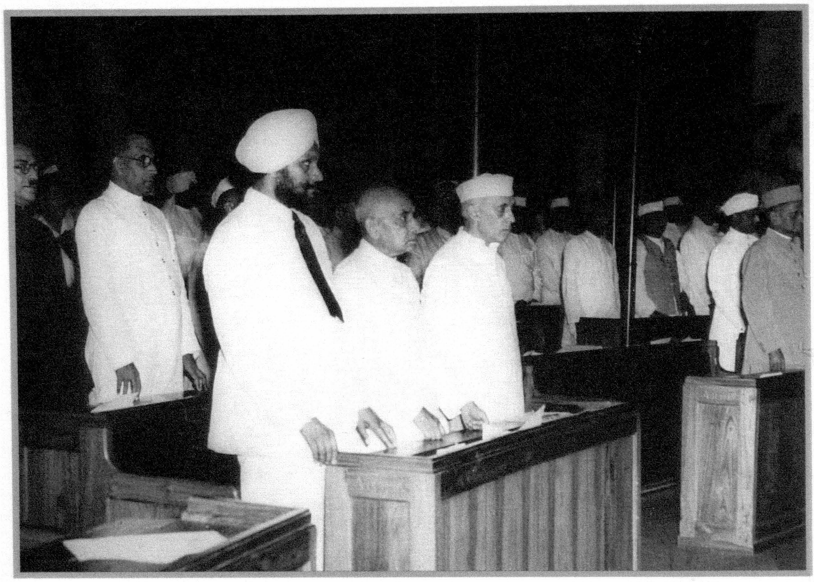

मध्यरात्रि अधिवेशन में शहीदों की याद में मौन धारण करते हुए

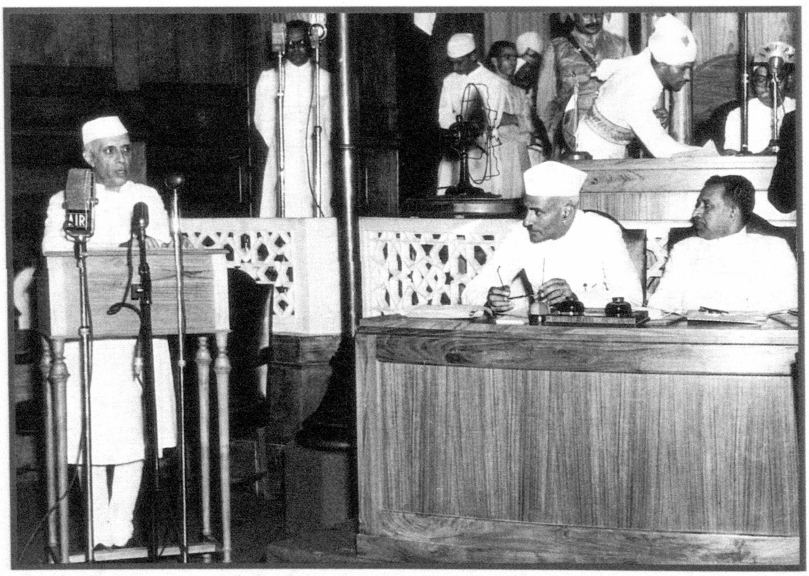

पंडित जवाहरलाल नेहरू मध्यरात्रि अधिवेशन को सम्बोधित करते हुए

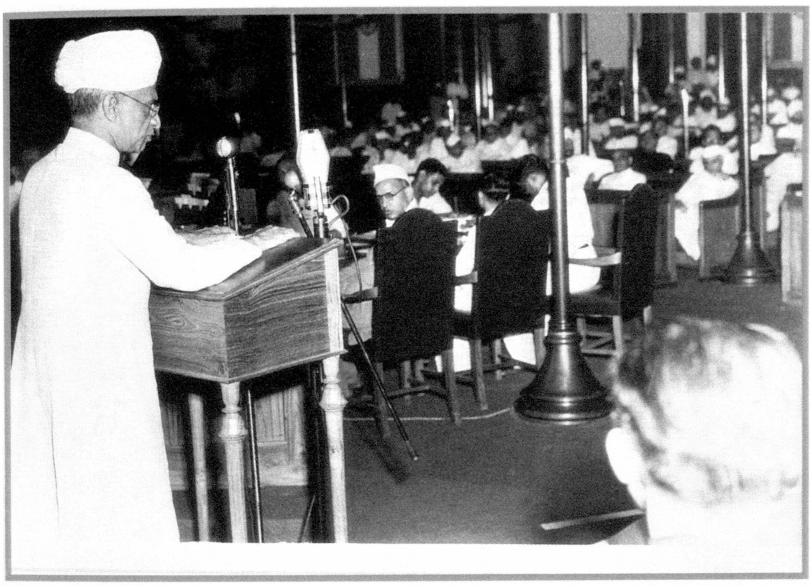

डा. एस. राधाकृष्णन का मध्यरात्रि अधिवेशन में भाषण

विधान परिषद् में 'शपथ' लेते हुए पंडित जवाहरलाल नेहरू तथा अन्य सदस्य

मध्यरात्रि अधिवेशन में राष्ट्रगान का गायन

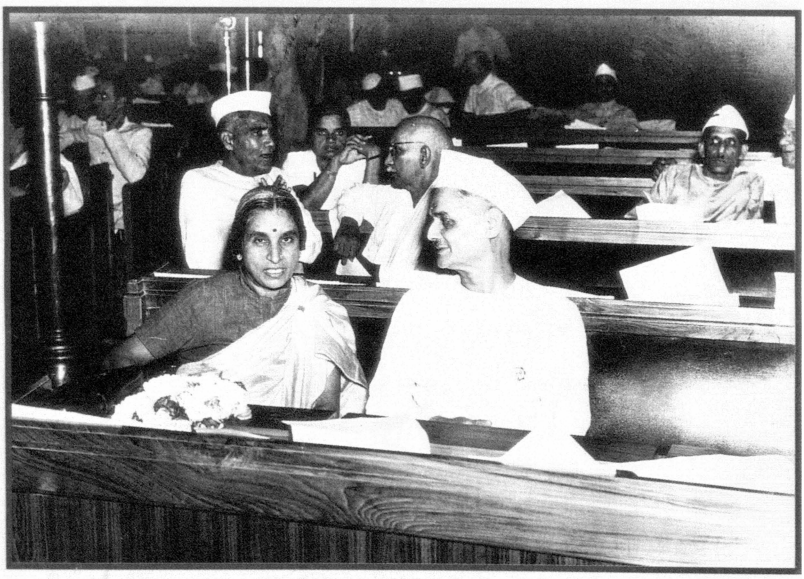

विधान परिषद में श्रीमती अम्मू स्वामीनाथन तथा श्री जी.वी. मावलंकर

मध्यरात्रि अधिवेशन में उपस्थित विशिष्टजनों का एक दृश्य

विशिष्टजनों का एक अन्य दृश्य

तो अंग्रेजों के राजनैतिक साहस और बुद्धिमत्ता की प्रशंसा किये बिना नहीं रहा जाता। (हर्ष ध्वनि)

अपनी ओर से हमने भी विश्व के इतिहास में एक अध्याय जोड़ दिया है। जरा गौर कीजिए कि इतिहास में पराधीन जातियों ने किस तरह अपनी स्वतंत्रता प्राप्त की है। यह भी सोचिये कि किस तरह लोगों ने अधिकार प्राप्त किये हैं। वाशिंगटन, नैपोलियन, क्रामवेल, लेनिन, हिटलर, और मसलिनी सरीखे व्यक्तियों ने किस तरह सत्ता प्राप्त की है? बल प्रयोग, आतंक, हत्या, नरमेध और विप्लव की उन पद्धतियों पर जरा ध्यान दीजिए जिनसे संसार के इन तथाकथित महापुरुषों ने सत्ता प्राप्त की थी। यहां इस देश में हमने उस व्यक्ति के नेतृत्व में जो सम्भवत: इतिहास में इस युग का सर्वश्रेष्ठ महापुरुष कहा जायेगा (तुमुल हर्ष ध्वनि), धीरता से क्रोध का सामना किया तथा आत्मिक शांति से नौकरशाही के अत्याचार के वार संभाले। और आज हम सभ्य एवं शांतिमय उपायों से सत्ता प्राप्त कर रहे हैं। आखिर उसका परिणाम क्या हुआ? इसका परिणाम यह हुआ कि यह महान् परिवर्तन आज बिना लेशमात्र कटुता के, बिना रंचमात्र घृणा के कार्यान्वित किया जा रहा है। लार्ड माउण्टबैटन को हम भारत का गवर्नर-जनरल नियुक्त कर रहे हैं और इस तथ्य से भी हमारी पारस्परिक मैत्री और समझौते की भावना प्रकट है जिसके आधार पर यह समूचा परिवर्तन कार्यान्वित किया जा रहा है। (हर्ष ध्वनि)

अध्यक्ष महोदय, आपने अभी हमारे हृदयस्थित उस दुख और शोक की चर्चा की थी जिससे हमारा आज का आनन्द तिरोहित हो गया है। मैं यह कहना चाहता हूं कि वस्तुत: इसके लिए हम जिम्मेदार हैं, यद्यपि पूर्णरूप से नहीं। सन् 1600 ई. से अंग्रेज यहां आये हैं, उनके पादरी आये, ईश्वर से विकायें आईं, व्यापारी, साहसी यात्री, राजनीतिज्ञ (diplomats), धर्मप्रचारक और आदर्शवादी आये। उन्होंने यहां क्रय-विक्रय किया, लड़ाईयां लड़ीं, षडयंत्र किया और उससे लाभ उठाया, देशवासियों की सहायता की और उनके दुख-दर्द दूर किये। इनमें जो महापुरुष थे उन्होंने इस देश को आधुनिकता से सुसज्जित करना चाहा, इसके बौद्धिक और नैतिक स्तर को, इसकी राजनैतिक प्रतिष्ठा (status) को ऊंचा करना चाहा। उन्होंने समूचे देश को नवजीवन से अनुप्राणित करना चाहा। परन्तु इनमें जो क्षुद्र थे, उन्होंने जघन्य उद्देश्यों की सिद्धि के लिये यहां काम किया। उन्होंने देश में अनैक्य (disunion) बढ़ाने की चेष्टा की और देश को अधिकाधिक निर्धन, दुर्बल और ऐक्य हीन बना दिया। उन्हें भी आज यहां अवसर मिला है। जो स्वाधीनता हमें आज उपलब्ध हो रही है,

वह ब्रिटिश शासकों की इसी द्वैध मनोवृत्ति का परिणाम है। भारत स्वाधीनता तो आज पा रहा है पर जिस ढंग पर इसकी प्राप्ति हो रही है उससे देशवासियों के हृदय में आनन्द नहीं उत्पन्न हो रहा है, उनके चेहरों पर स्वाभाविक आह्लाद की प्रभा नहीं दिखाई पड़ती है। जिन पर इस देश के शासन की जिम्मेदारी थी उनमें से कुछ लोगों ने साम्प्रदायिकता की भावना को और उग्र बनाने की तथा वर्तमान स्थिति लाने की कोशिश की, जो ब्रिटेन के लघु मस्तिष्कों द्वारा अपनायी हुई नीतियों का स्वाभाविक परिणाम है। परन्तु इसके लिए मैं उनको नहीं दोष दूंगा। हम पर लादी हुई पार्थक्य संबंधी प्रवृत्तियों ने क्या हमें पराभूत नहीं किया? क्या हम चरित्र संबंधी अपने उन जातीय दुर्गुणों को दूर नहीं करेंगे जिनके कारण हम में तरह-तरह के अन्धकार संकुचित मनोवृत्ति और अन्धविश्वास जनित कट्टरताओं ने हमें दबा रखा है। दूसरे लोग हमारी कमजोरियों से लाभ उठाने में समर्थ हुए, और इसलिए समर्थ हुए कि कमजोरियां हम में थीं। इसलिए इस अवसर पर मैं आपसे कहूंगा कि आप आत्मपरीक्षण करें, अपने हृदयों को टटोलें, हमने स्वाधीनता प्राप्त की है पर उस तरह नहीं जैसे हम चाहते थे और इसके लिए हम स्वयं जिम्मेदार हैं। और जब हम प्रस्तुत प्रतिज्ञा में यह कहते हैं कि हम अपने देश की सेवा करेंगे तो इन मूलगत दुर्गुणों को दूर करके ही हम देश की सर्वोत्तम सेवा कर सकते हैं। इन दुर्गुणों के कारण ही हम अपने लक्ष्य की—स्वतंत्र, संयुक्त भारत की—प्राप्ति नहीं कर पाये। अब जब भारत विभक्त हो गया है, हमारा यह कर्त्तव्य है कि हम आवेशपूर्ण शब्दों का प्रयोग न करें। इससे कुछ लाभ नहीं। हमें आवेश को रोकना होगा, क्रोध और बुद्धिमत्ता इन दोनों का समन्वय असम्भव है। राजनीतिक दृष्टि से हम भले ही विभक्त हो गये हों पर हमारी सांस्कृतिक एकता अभी पूर्ववत बनी है (हर्ष ध्वनि), राजनैतिक विभाजन, धरातल का बंटवारा बाह्य वस्तु है परन्तु मनोवैज्ञानिक विभाजन की नीति बड़ी गहरी होती है। सांस्कृतिक वैषम्य (cleavages) और भी सांघातिक होता है और हमें चाहिये कि इस वैषम्य को हम कभी न बढ़ने दें। हमारा कर्तव्य यह है कि हम उन सांस्कृतिक बंधनों को, उन आध्यात्मिक बंधनों को स्थायी बनाये रखें जिनके कारण अब तक हम सब एकप्राण थे। धीरतापूर्वक विचार, शिक्षा का शनैः शनैः प्रसार, एक दूसरे की आवश्यकताओं का समन्वय, उन दृष्टि बिंदुओं की खोज जो यातायात, रक्षा, वैदेशिक मामले, आदि के संबंध में दोनों राज्यों के लिए समान रूप से आवश्यक हैं—ये ऐसी बातें हैं कि जिन्हें हमें अपने दैनिक जीवनचर्या में और शासन में प्रश्रय देना होगा। इसी तरह की प्रवृत्ति को समुन्नत करके ही हम पुनः एक दूसरे के सन्निकट आ पायेंगे और देश की खोई हुई एकता को फिर से प्राप्त कर सकेंगे। यही इसका एकमात्र रास्ता है।

हमें समधिक अवसर प्राप्त हैं, पर मैं आपको सावधान करूंगा कि अधिकार के सामने जब योग्यता का तिरस्कार किया जायेगा तो हम दुर्दिन में पड़ जायेंगे। हमें क्षमता और योग्यता को बढ़ाना होगा और इन्हीं की सहायता से हम उन अवसरों को उपयोग कर सकेंगे जो हमें अब प्राप्य हैं। कल सवेरे से, बल्कि आज मध्य रात्रि के उपरान्त से ही हम अंग्रेजों को अब दोष नहीं दे सकते। हम जो कुछ भी करेंगे उसका दायित्व हमें स्वयं ग्रहण करना होगा। भोजन, वस्त्र, आश्रयस्थान तथा सामाजिक सेवाओं के संबंध में सर्वसाधारण नागरिकों के लिए हम जो करेंगे उसी से स्वतंत्र भारत की परख (judge) की जायेगी। उच्च पदस्थ कर्मचारियों को भ्रष्टाचार (nepotism) के अधिकार का मोह, मुनाफाखोरी और चोर बाजारी, इन सबने गत कुछ दिनों से इस महान् देश के सुनाम को कलंकित कर रखा है और जब तक हम इन दूषणों का आमूल विनाश नहीं कर देते तब तक न तो हम देश की शासन व्यवस्था को समुन्नत बना सकते हैं और न जीवनोपयोगी वस्तुओं के उत्पादन और वितरण संबंधी स्तर को ही ऊंचा कर सकते हैं।

विश्व शान्ति और मानव कल्याण की समुन्नति के लिए इस देश की कितनी बड़ी देन होगी, इसकी चर्चा पं. जवाहर लाल नेहरू ने की है। हमारी पताका पर अंकित सम्राट अशोक का यह चक्र एक महान् आदर्श का प्रतीक है। अशोक की महिमा के संबंध में लिखे हुए श्री एच. जी. वेल्स के इन शब्दों पर ध्यान दीजिए: "महत्ता, महिमा, वैभव एवं गौरव आदि गुणों से भूषित पुरुषों का एक दैदीप्यमान आदर्श—सर्वश्रेष्ठ सम्राट अशोक"। सम्राट अशोक ने विभेद और कलह जनित क्लेशों को दूर करने के लिए शिलाओं पर उपदेश खुदवाये। उसका कहना है कि अगर मतभेद हैं तो इसको दूर करने का सर्वोत्तम रास्ता है concord को पढ़ाना "समवाय एव साधु:"। इसके सिवाय हम लोगों के पास और कोई उपाय नहीं है।

यह हमारा सौभाग्य है कि हमें एक ऐसा नेता प्राप्त है जो समस्त संसार का नागरिक है, जो मानवता का महान् पुजारी है, जो परिस्थितियों के विषम रूप से प्रतिकूल होने पर भी, मानव जीवन क्रम में घोर विरोधिता होने पर भी एक दृढ़ आशावादी बना रहता है और सद्बुद्धि पर सदा दृढ़ रहता है। हमने देखा है कि किस तत्परता और समयानुकूल ढंग से उनके विभाग ने इन्डोनेशिया के मामले में हाथ डाला (हर्षध्वनि)। इससे प्रकट है कि अगर भारतवर्ष ने स्वाधीनता प्राप्त की है तो वह उसका उपयोग न केवल अपने कल्याण के लिए ही करेगा बल्कि विश्व-कल्याण के लिए करेगा।

हमारी प्रतिज्ञा में कहा गया है कि यह प्राचीन देश संसार में अपना उचित और गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त करेगा। हमें इस देश की प्राचीनता पर गर्व है क्योंकि इसने इतिहास की पांच सहस्राब्दियां देखी हैं, इसने कई उत्थान और पतन देखे हैं और इस समय भी यह अपने महान् आदर्शों की प्रेरणा प्रदान कर रहा है। सभ्यता एक आन्तरिक वस्तु है, आत्मा की चीज है, यह बाह्य जगत से संबंध रखने वाली और स्थूल और निष्प्राण वस्तु नहीं है। मानव हृदयों की आकांक्षा का यह प्रतिबिम्ब है। यह अन्तरात्मा की लालसा है। यह मानव जीवन के संबंध में अपनी कल्पना-मूलक व्याख्या है, मानव अस्तित्व संबंधी रहस्य की अपनी उपलब्धि या अपना बोध है। सभ्यता वस्तुतः इन्हीं बातों के लिए है। इन महान् आदर्शों को हमें ध्यान में रखना होगा जिनको चिरकाल से हम अपनाते आ रहे हैं। अपने इतिहास के इस महत्वपूर्ण काल में विनय-पूर्वक भगवान के सम्मुख खड़ा होना चाहिये, इस महान् कार्य के लिए कटिबद्ध हो जाना चाहिए जो हमारे सामने है और ऐसा आचरण करना चाहिए जो भारत की चिर प्राचीन भावना के अनुरूप हो। यदि हम ऐसा करें तो मुझे इसमें रंचमात्र भी संदेह नहीं है कि इस देश का भविष्य वैसा ही महान होगा जैसा कि इसका अतीत महिमामय रहा है।

सर्वभूतास्थमात्मानं सर्व भूतानि चात्मनि।
संपश्य आत्म योगावै स्वराज्यं अधिगच्छति।।

ऐसी सहिष्णु प्रवृत्ति का विकास ही स्वराज्य है, जिसमें मनुष्य को मनुष्य में परमात्मा दिखाई देने लगता है। असहिष्णुता हमारी उन्नति में प्रबलतम बाधक रही है। एक दूसरे के विश्वासों, विचारों के प्रति सहिष्णु होना ही एकमात्र मार्ग है जिसे हम अपना सकते हैं। इसलिए मैं बड़ी प्रसन्नता से इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं जिसमें देशवासियों के हम सब प्रतिनिधियों से कहा गया है कि विनम्रता के साथ हम देशवासियों की सेवा में अपने को अर्पण कर दें। यहां विनम्रता का भाव यह है कि स्वयं हम कुछ नहीं हैं। हमारे प्रयास ही हमें बहुत दूर नहीं ले जा सकेंगे। हमें स्वयं अहम् को छोड़कर उस अन्य का, अर्थात् सदाचार और साधुवृत्ति का, सहारा लेना है। यहां विनम्रता का भाव यह है कि व्यक्ति महत्वशून्य है और सर्व महत्वपूर्ण है वह उद्देश्य जिसे पूर्ण करने का हमें आह्वान मिला है। अतः विनम्रता एवं आत्मनिवेदन की भावना से, आइए 12 बजते ही हम सब यह प्रतिज्ञा ग्रहण करें।

अध्यक्ष : अब मैं प्रस्ताव पर मत लूंगा।

पहले मैं प्रस्ताव को सुना देता हूं।

''निश्चय किया जाता है कि:

'(1) रात को बारह बजते ही विधान-परिषद् के सभी उपस्थित सदस्य निम्नलिखित प्रतिज्ञा ग्रहण करेंगे:

''अब जबकि हिन्दवासियों ने त्याग (कुर्बानी) और तप से स्वतंत्रता (आजादी) हासिल कर ली है, मैं..... जो उस विधान-परिषद् (आईन साज मजलिस) का एक सदस्य (मेम्बर) हूं अपने को बड़ी नम्रता (निहायत इनकसारी) से हिन्द और हिन्दवासियों की सेवा (खिदमत) के लिए अर्पण (वक्फ) करता हूं ताकि यह प्राचीन (कदीम) देश (मुल्क) संसार में अपना उचित और गौरवपूर्ण (बाइज्जत) जगह पा लेने और संसार में शांति स्थापना (अमन कायम) करने और मानव जाति (इन्सान) के कल्याण (बहबूदी) में अपनी पूरी शक्ति लगाकर खुशी-खुशी हाथ बटा सके।

(2) वे सदस्य जो इस अवसर पर अनुपस्थित हैं, उस समय जब वे परिषद् के अधिवेशन में इसके बाद उपस्थित हों तो इस प्रतिज्ञा को (ऐसे शाब्दिक परिवर्तनों के साथ जैसा अध्यक्ष निर्धारित करें) ग्रहण करेंगे'।''

श्री एच०वी० कामठ (मध्य प्रांत और बरार: जनरल): श्रीमान् मेरे नाम दो संशोधन हैं, पर चूँकि अपने भाषण में आपने ईश्वर के पवित्र नाम का आह्वान (invoke) किया है और प्रतिज्ञा का जो स्वरूप हमारे सामने है, उसमें संक्षिप्त सुधार करके प्रतिज्ञा में भगवद्-भावना लादी है, और सर्वोपरि इसलिए कि मुहूर्त का समय शीघ्रता से सन्निकट आता जा रहा है, मैं अपना संशोधन नहीं उपस्थित करना चाहता।

अध्यक्ष: धन्यवाद। अब मैं प्रस्ताव पर मत लेता हूं। सदस्यगण 'स्वीकार है' कहकर अपनी स्वीकृति देंगे।

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

अध्यक्ष: अभी हमने यह निश्चय किया कि 12 बजते ही हम प्रतिज्ञा ग्रहण करेंगे। पहले मैं अपनी भाषा में इसका एक-एक वाक्य पढ़ता जाऊंगा और आशा है कि वे सदस्य जो उस भाषा को जानते हैं, उसको दुहराते जायेंगे। उसके बाद में अंग्रेजी में एक-एक वाक्य पढ़ता जाऊंगा और आशा करूंगा कि सदस्य उसे दुहराते

जायेंगे। प्रतिज्ञा ग्रहण करने के समय कृप्या सदस्य खड़े हो जायेंगे, पर दर्शक बैठे रहेंगे। बारह बजने में ठीक आधा मिनट बाकी है। बस घड़ी के 12 की घंटी देने की मैं प्रतीक्षा ही कर रहा हूं।

घड़ी के 12 (मध्य रात्रि) बजाते ही अध्यक्ष तथा सदस्यगण खड़े हो गये और प्रतिज्ञा ग्रहण की। अध्यक्ष ने प्रतिज्ञा का एक-एक वाक्य पहले हिन्दुस्तानी में और फिर अंग्रेजी में पढ़ा और सदस्यों ने उसे दुहराया।

''अब जब कि हिन्दवासियों ने त्याग (कुर्बानी) और तप से स्वतंत्रता (आजादी) हासिल कर ली है, मैं ... ... जो इस विधान परिषद् (आइने साज मजलिस) का एक सदस्य (मेम्बर) हूं अपने को बड़ी नम्रता (निहायत इनकिसारी) से हिन्द और हिन्दवासियों की सेवा (खिदमत) के लिए अर्पण (वक्फ) करता हूं ताकि यह प्राचीन (कदीम) देश (मुल्क) संसार में अपना उचित और गौरवपूर्ण (बाइज्जत) जगह पा लेवे और संसार में शान्ति स्थापना (अमनकायम) करने और मानव जाति (इन्सान) के कल्याण (बहबूदी) में अपनी पूरी शक्ति लगाकर खुशी-खुशी हाथ बटा सकें।''

विधान परिषद द्वारा सत्ता ग्रहण की तथा लार्ड माउन्टबैटन के गवर्नर-जनरल नियुक्त किये जाने की वायसराय को सूचना

अध्यक्ष: मैं प्रस्ताव करता हूं कि:

''वायसराय को इस बात की सूचना दी जानी चाहिए कि:

'(1) भारतीय विधान परिषद् ने भारत का शासनाधिकार ग्रहण कर लिया है,

(2) भारतीय विधान-परिषद् ने इस सिफारिश को स्वीकार कर लिया है कि 15 अगस्त, सन् 1947 ई. से लार्ड माउन्टबैटन इंडिया के गवर्नर-जनरल हों, और

(3) यह संदेश अध्यक्ष तथा पं. जवाहरलाल नेहरू द्वारा लार्ड माउन्टबैटन के पास पहुंचाया जाये'।'' (*हर्षध्वनि*)

मैं मान लेता हूं कि सभा इसे स्वीकार करती है।

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

राष्ट्रीय पताका का उपस्थित किया जाना

अध्यक्ष : अब भारतीय महिला समाज की ओर से श्रीमती हंसा मेहता राष्ट्रीय पताका भेंट करेंगी। (*हर्षध्वनि*)

श्रीमती हंसा मेहता (बम्बई : जनरल): आदरणीय अध्यक्ष महोदय, श्रीमती सरोजिनी नायडू की अनुपस्थिति में, मेरा यह परम् सौभाग्य है और इसका मुझे अभिमान है कि भारतीय महिलाओं की ओर से राष्ट्र को आपकी मार्फत यह पताका भेंट देती हूँ।

1. सरोजिनी नायडू
2. अमृत कौर
3. विजयलक्ष्मी पंडित
4. हंसा मेहता
5. अम्मू स्वामिनाथन्
6. सुचेता कृपलानी
7. कुदसिया ऐजाज रसूल
8. दुर्गाबाई
9. रेणुका राय
10. दाक्षायणी वेलायुदन
11. पूर्णिमा बनर्जी
12. कमला चौधरी
13. मालती चौधरी
14. अबला बोस
15. लक्ष्मीबाई राजवाड़ी
16. मैत्रेयी बोस
17. रामेश्वरी नेहरू
18. शरीफा हमीद अली
19. गोशीबेन कैप्टेन
20. धनवंती रमाराव
21. अनुसुइयाबाई काले
22. प्रेमलीला ठाकरसी
23. मणिबेन पटेल
24. सरलादेवी साराभाई
25. अवन्तिकाबाई गोखले
26. सकीने लुक्मानी
27. जानकीबाई बजाज
28. मुथुलक्ष्मी रेड्डी
29. चारुलता मुकर्जी
30. रुक्मिणी लक्ष्मीपति

31. मित्तनताता लाम
32. हन्नाह सेन
33. असवाह हुसैन
34. राधाबाई सुब्रायन
35. ताराभाई प्रेमचन्द
36. जेठी सिपाही मलानी
37. अम्बुजा अम्मा
38. जानकी अम्मा
39. लीलावती मुंशी
40. लावण्य प्रभादत्त
41. सोफिया वाडिया
42. मृणालिनी चट्टोपाध्याय
43. शारदा बेन मेहता
44. जरीना करीमभाई
45. प्रेम कैप्टेन
46. हेमप्रभा दास गुप्ता
47. प्रेमावती थप्पर
48. जोरा अन्सारी
49. जैश्री रायजी
50. कित्ती शिवाराव
51. शन्नो देवी
52. वायलेट आल्वा
53. सुशीला जुल्कुसिंग
54. वीणादास
55. उमा नेहरू
56. इरावती कोरव
57. रायवन तैय्यबजी
58. आशा आर्यनायकम्
59. मृदुला साराभाई
60. रक्षा सरन
61. मारगरेट कजिन्स
62. कमला देवी
63. लक्ष्मी मेनन
64. लावण्य चन्दा
65. अयाशा अहमद
66. कृष्णा हथीसिंह
67. राजन नेहरू
68. इन्दिरा गांधी
69. सुराया तैयबजी
70. मेमोबाई
71. पद्मजा नायडू
72. किरन बोस
73. कुलसुम सयानी
74. लज्जावती देवी

मेरे पास एक सूची है जिसमें प्रायः भारत के सभी मुख्य सम्प्रदायों की एक सौ महिलाओं के नाम हैं जिन्होंने इस महोत्सव में सम्मिलित समझे जाने की इच्छा प्रकट की है। और भी कई शत महिलाएं होंगी जो इसी तरह इस महोत्सव में सम्मिलित होना चाहती हों। इस परिस्थिति में यह उपयुक्त ही है कि पहली राष्ट्रीय पताका जो इस महिमा-मंडित भवन पर सुशोभित हो, उसे भारतीय महिला समाज एक उपहार की तरह उपस्थित करे (हर्षध्वनि)। इस केसरिया के अभ्युदय का श्रेय हमी को है। हमने देश की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया है, कष्ट उठाये हैं और बलिदान किए हैं। आज हमने अपना ध्येय प्राप्त किया है। अपनी स्वतंत्रता के प्रतीक स्वरूप इन पताकों को उपस्थित करते हुए हम पुनः राष्ट्र के प्रति अपनी सेवाएं अर्पित करती हैं। हम सब इस बात के लिए प्रतिज्ञाबद्ध होती हैं कि महान भारत के निर्माण के लिए, एक ऐसे राष्ट्र के निर्माण के लिए, जिसका सभी देश समादर करें, हम कार्य करेंगी। हम प्रतिज्ञा करती हैं कि प्राप्त स्वाधीनता के स्थायी बनाने के महत्तर उद्देश्य के लिए हम कार्य करेंगी। हमें उन महती परम्पराओं को, जिनके कारण अतीत काल में भारत इतना महान था, स्थायी रखना है। भारत के प्रत्येक स्त्री-पुरुष का यह धर्म है कि वह इम परम्पराओं की रक्षा करे ताकि भारतवर्ष संसार पर अपना आध्यात्मिक प्रभुत्व बनाये रखे। यह पताका हमारे महान् भारत का प्रतीक हो। यह सदा फहराती रहे और विश्व पर आज जो संकट की कालिमा छाई है, उसमें उसे यह प्रकाश दे। इसकी छत्र-छाया में रहने वाले प्राणियों को यह सुख और शांति दे। (हर्षध्वनि)

अध्यक्षः सभा की स्वीकृति की आशा करके मैंने चीन के भारत स्थित दूत, हिज एक्सिलेंसी डा. चियालानलो, द्वारा रचित एक कविता कि इस अवसर के लिए सधन्यवाद स्वीकार किया है।

राष्ट्रीय गीतों का गायन

अध्यक्षः कार्यक्रम का दूसरा विषय है—''सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा'' तथा ''जन मन गण अधिनायक जय हे'' शीर्षक कविताओं की प्रथम चन्द पंक्तियों का गान।

(श्रीमती सुचेता कृपलानी ने इन दोनों कविताओं की प्रथम कुछ पंक्तियों का गायन किया।)

अध्यक्ष: अब सभा कुछ घंटों के लिए कल प्रात: 10 बजे तक स्थगित होती है।

इसके बाद सभा शुक्रवार, 15 अगस्त, सन् 1947 ई. को
प्रात: 10 बजे के लिए स्थगित हुई।

---

15 अगस्त, 1947 को वायसराय हाउस, नई दिल्ली में एक समारोह में लार्ड माउंटबेटन, पंडित जवाहरलाल नेहरू को प्रधानमंत्री पद की शपथ दिलाते हुए

भारतीय विधान-परिषद्

शुक्रवार, 15 अगस्त, सन् 1947 ई.

भारतीय विधान-परिषद् कान्स्टीट्यूशन हाल, नई दिल्ली में 10 बजते ही समवेत हुई। अध्यक्ष (मा. डा. राजेन्द्र प्रसाद), भारत के गवर्नर-जनरल, श्रीमान लार्ड माउंटबैटन तथा श्रीमती माउंटबैटन के साथ परिषद् भवन में प्रविष्ट हुये।

शुभ कामना के संदेश

***अध्यक्ष:** कतिपय प्राप्त सम्वादों को मैं पढ़कर सुना देता हूं।

1. **संयुक्त राज्य के प्रधान मंत्री का तार, पं. जवाहरलाल नेहरू के नाम:**

   ''इस ऐतिहासिक अवसर पर मैं और संयुक्त राज्य के मंत्रिमंडल के मेरे सहकर्मी, भारतीय सरकार और भारतीय जनता के प्रति अपनी प्रसन्नता और शुभ-कामना समर्पित करते हैं। हमारी यह आन्तरिक अभिलाषा है कि भारतवर्ष सुख-शान्ति के साथ आगे बढ़ता जाए और विश्व की शांति और समृद्धि को समुन्नत बनाने में हाथ बटाये।''

2. **कैंटरबेरी के आर्कबिशप का संदेश, पं. जवाहरलाल नेहरू के नाम:**

   ''इस समय जब कि इंडिया और पाकिस्तान स्वतंत्र राज्य बन गये हैं और अपने शासन का सारा दायित्व उन्होंने अपने ऊपर ले लिया है, इस देश की ईसाई जनता की ओर से मैं आपको अपनी प्रसन्नता और शुभ-कामना समर्पित करता हूं।''

---

*इस संकेत का अर्थ है कि यह अंग्रेजी वक्तृता का हिन्दी रूपान्तर है।

3. **चीन प्रजातंत्र के प्रेसीडेंट जनरल च्यांगकाईशेक का संदेश, इंडिया के प्रधान मंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू के नाम:**

''इस शुभ अवसर पर जब भारत की जनता स्वतंत्रता के एक नवीन युग का महोत्सव मना रही है, उस उज्ज्वल एवं महती सफलता के लिए, जिसकी प्राप्ति के लिए आपने तथा महात्मा गांधी ने इतनी प्रमुखता और उदारता से भाग लिया है और जिसके संबंध में मुझे विश्वास है कि वह स्वाधीनता, समानता तथा प्रगति के प्रति सारे उद्योगशील राष्ट्रों के लिए प्रेरणा का एक महान् साधन सिद्ध होगी। मैं आपको तथा आपके देशवासियों को हार्दिक बधाई देता हूं। सफलता एवं महानता से परिपूर्ण भारत के उज्ज्वल भविष्य के प्रति मेरी शुभकामनाएं स्वीकार कीजिएगा।''

4. **कनाडा के प्रधान मंत्री का संदेश, भारत के प्रधान मंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू के नाम:**

''इस अवसर पर, जबकि भारत अपना शासन पूर्णत: अपने हाथ में ले रहा है, मुझे इस बात की बड़ी ही प्रसन्नता है कि मैं आपको और आपके द्वारा भारतीय सरकार और जनता को, कनाडियन सरकार और वहां की जनता की हार्दिक शुभकामनाएं समर्पित करता हूं।''

5. **आस्ट्रेलिया के प्रधान मंत्री का संदेश, भारत के प्रधान मंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू के नाम:**

''इस ऐतिहासिक अवसर पर जिसका महोत्सव 15वीं अगस्त को मनाया जा रहा है, मैं भारतीय सरकार और भारतीय जनता को आस्ट्रेलिया की सरकार और वहां के निवासियों की शुभकामनाएं समर्पित करता हूं।

आस्ट्रेलिया के लोग इस बात की खुशी मना रहे हैं कि आपके देश ने एक स्वतंत्र सर्वाधिकार सम्पन्न राष्ट्र का पद प्राप्त किया है और ब्रिटिश राष्ट्रमंडल का साथी सदस्य होने पर आपका स्वागत करते हैं।

विश्वासपूर्वक यह आशा की जाती है कि आपकी परम्परा, आपकी प्राचीन संस्कृति और भावना, जिससे इस परिवर्तन काल को सुगम बनाने की आपको प्रेरणा प्राप्त होती है, भारतवासियों के मंगलमय भविष्य और उनकी महत्ता को सुरक्षित रखेंगी।''

6. नानकिंग की प्रबंधकारिणी सभा युवान के सभापति का संदेश, भारत के प्रधान मंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू के नाम:

''इस ऐतिहासिक अवसर पर जब भारतवर्ष अपनी चिरसंचित अभिलाषा प्राप्त कर रहा है, मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि मैं आपको तथा भारत के लोगों को अपनी हार्दिक बधाई देता हूं। चीन के लोगों को इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि एशिया महाद्वीप में एक और महान राष्ट्र का अभ्युदय हुआ है। भारत और चीन की मिली हुई सीमा 2,000 मील लम्बी है और इन दोनों देशों का पारस्परिक संबंध कई शताब्दियों तक घनिष्ठ और मैत्रीपूर्ण रहा है। हम दोनों राष्ट्र गत महायुद्ध में एक साथ थे और निस्संदेह हम दोनों ही अपने विश्वशांति के उद्देश्य की ओर अग्रसर होते जायेंगे। आपकी सतत सफलता तथा भारतवासियों के सुख और समृद्धि के लिए मैं अपनी हार्दिक शुभेच्छाएं समर्पित करता हूं।''

7. इंडोनेशिया के प्रजातंत्र की ओर से डा. स्योडार्सनों का संदेश, पं. जवाहरलाल नेहरू के नाम:

''स्वाधीन भारतीय राष्ट्र की स्थापना पर इंडोनेशिया के प्रजातंत्र को इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि वह उसके प्रति अपनी हार्दिक प्रसन्नता, सहानुभूति और मैत्री की भावना व्यक्त करता है।

इंडोनेशियन प्रजातंत्र भारतवर्ष को अपना मित्र समझता है जिसने उसके संकट और कष्ट के काल में सदा सहायता दी है और देगा। दोनों देशों की राष्ट्रीयता का आधार मानवता है, अत: इंडोनेशिया यह आशा कर सकता है कि सन्निकट भविष्य में दोनों देशों के बंधन और प्रगाढ़ हो जायेंगे—न्याय और शान्ति के लिए तथा उन लाखों मनुष्यों के सुख-स्वातंत्र्य के लिए, जो एक दीर्घकाल से वैभव और सम्पत्ति की अपार राशि रखकर भी दीन-हीन जीवन व्यतीत कर रहे हैं—इन दोनों देशों का मैत्री-बंधन और प्रगाढ़ हो जायेगा।

भारतवासी वर्षों से प्रख्यात नेताओं के नेतृत्व में रहे हैं और निस्सन्देह वे और अधिक सुखद और मंगलमय भविष्य की ओर अग्रसर होते जा रहे हैं। भारत न केवल न्याय और सुख-समृद्धि का देश होगा बल्कि एशिया की शान्ति का वह प्रधान रक्षक होगा।

इंडोनेशियन प्रजातंत्र की सरकार तथा वहां के निवासी, श्रीमान् को, आपकी सरकार को और आपके देशवासियों को इस ऐतिहासिक अवसर पर सुख-समृद्धि के लिए अपनी हार्दिक शुभेच्छायें समर्पित करते हैं।''

8. नेपाल सम्राट के मंत्री का संदेश, पं. जवाहरलाल नेहरू के नाम:

''भारतीय राज्य की स्थापना पर मेरे सहकर्मी तथा मैं हार्दिक अभिनन्दन व्यक्त करते हैं। राज्य और वहां के निवासियों की सुख-समृद्धि के लिए हम अपनी शुभ कामनाएं समर्पित करते हैं।''

9. ओसलो से नार्वे के प्रधान मंत्री तथा स्थानापन्न वैदेशिक मंत्री का संदेश पं. जवाहरलाल नेहरू के नाम:

''भारतवासियों के इस राष्ट्रीय महोत्सव के महान दिवस पर मुझे इस बात का गौरव है कि मैं आपको आपके देश की सुख एवं समृद्धि के लिए अपनी शुभकामना भेजता हूं।''

लार्ड माउन्टबैटन का भाषण

अध्यक्ष: क्या मैं महामहिम से सभा के समक्ष भाषण देने को कहूं?

श्रीमान गवर्नर-जनरल: विधान-परिषद् के अध्यक्ष और सदस्यगण,

आज मैं आपको सम्राट का एक संदेश देना चाहता हूं। सम्राट का संदेश इस प्रकार है:

''इस ऐतिहासिक दिन, जबकि भारत ब्रिटिश राष्ट्रमंडल में एक स्वतंत्र और स्वाधीन उपनिवेश के रूप में स्थान ग्रहण कर रहा है, मैं आप सबको अपनी हार्दिक शुभ-कामनाएं भेजता हूं।''

''आपके इस स्वाधीन महोत्सव में प्रत्येक स्वतंत्रता-प्रिय राष्ट्र भाग लेना चाहेगा, क्योंकि पारस्परिक स्वीकृति द्वारा सत्ता का जो यह हस्तान्तरण हुआ है, उससे एक ऐसे महान लोकतंत्रीय आदर्श की पूर्ति हुई है जिसे ब्रिटेन और भारत दोनों देशों के लोग समान रूप से कार्यान्वित करने के लिए कटिबद्ध रहे हैं। यह बड़ी ही उत्साहवर्धक बात है। यह सब शान्तिपूर्ण परिवर्तन द्वारा सम्पन्न हो सका है।''

''भविष्य में आपको बड़ी जिम्मेदारियों का भार वहन करना है किन्तु जब मैं आपके द्वारा प्रकट की गयी राजनीतिज्ञता तथा किये गये त्यागों का विचार करता

हूं, तो मुझे विश्वास हो जाता है कि भविष्य का भार आप समुचित रूप से वहन कर सकेंगे।''

''मैं प्रार्थना करता हूं कि सर्वशक्तिमान परमात्मा का आशीर्वाद आप को प्राप्त हो और आपके नेता आने वाले कार्यों को बुद्धिमत्तापूर्वक कर सकें। मेरी यह भी प्रार्थना है कि संसार के राष्ट्रों के प्रति संबंधों में आप मैत्री, सहिष्णुता और शान्ति की भावना से अनुप्राणित हो सकें। अपनी जनता की समृद्धि तथा मानव जाति के कल्याण के लिए आपके प्रयत्नों में मेरी सहानुभूति सदा आपके साथ रहेगी।''

छः महीने से भी कम हुआ कि जब श्री एटली ने मुझसे भारत का अंतिम वायसराय होने को कहा था। उन्होंने यह भी स्पष्ट कर दिया था कि यह कोई सरल कार्य न होगा, क्योंकि सम्राट की सरकार जून, 1948 तक भारतीयों को सत्ता हस्तान्तरित करने का निश्चय कर चुकी थी। उस समय बहुतों ने अनुभव किया था कि सम्राट की सरकार ने सत्ता हस्तान्तरित करने के लिए बहुत थोड़ी अवधि रखी है। प्रश्न था कि यह महान कार्य 15 महीनों के अन्दर किस तरह समाप्त हो?

भारत में आये मुझे एक सप्ताह भी नहीं हुआ था कि मैंने अनुभव किया कि जून, 1948 की अवधि बहुत थोड़ी नहीं बल्कि बहुत अधिक थी। साम्प्रदायिक मनमुटाव तथा उपद्रव इतनी अधिक मात्रा में बढ़ गये थे कि इंग्लैंड से रवाना होते समय मैं उनका अन्दाजा नहीं लगा सका था। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि यदि सम्पूर्ण उप-महाद्वीप में अव्यवस्था से बचना है तो शीघ्र ही कुछ न कुछ निर्णय होना चाहिये।

मैंने सभी दलों के नेताओं से तुरन्त बातचीत प्रारम्भ कर दी और इसके परिणामस्वरूप 3 जून वाली योजना सामने आई। इसके स्वीकार किये जाने को संसार भर में राजनीतिज्ञता का एक उत्तम उदाहरण कहा गया है। नेताओं से प्रत्येक अवस्था में प्रकट रूप से बातचीत द्वारा ही इस योजना का विकास हुआ। इसकी सफलता का मुख्य श्रेय भी इन नेताओं को ही है।

मुझे विश्वास है कि ऐसी परिस्थिति के लिए, जिसमें समस्यायें जटिल हों और उत्तेजना इतनी अधिक हो, प्रकट रूप से बातचीत करना ही उपयुक्त मार्ग हो सकता था। मैं यहां नेताओं की बुद्धिमत्ता, सहनशीलता तथा सद्भावनापूर्ण सहायता की प्रशंसा करना चाहता हूँ, जिसके कारण पूर्व निर्धारित समय से साढ़े दस महीने पहले ही सत्ता हस्तान्तरित की जा सकी।

जिस बैठक में 3 जून वाली योजना स्वीकृत हुई थी उसमें मैंने नेताओं के आगे विभाजन के शासन संबंधी परिणामों के विषय में एक विचारपत्र उपस्थित किया था और उसी समय हमने इतिहास की एक सबसे बड़ी शासन संबंधी कार्रवाई करने के लिए एक व्यवस्था भी स्थापित कर दी थी। यह कार्रवाई 40 करोड़ निवासियों वाले इस उप-महाद्वीप के बंटवारे और ढाई महीने से भी कम समय में दो स्वाधीन सरकारों को सत्ता हस्तान्तरित किये जाने के संबंध में थी। इन बातों को शीघ्रता से सम्पन्न करने का कारण यह था कि एक बार विभाजन का सिद्धांत स्वीकार करने के बाद शीघ्रातिशीघ्र उसे कार्यान्वित करने में ही सब दलों का हित था। सच तो यह है कि पहले जितनी शीघ्रता से काम होना सम्भव समझा जाता था, वह हुआ उससे भी कुछ कम समय में। इस आश्चर्यजनक परिणाम को प्राप्त करने के लिए जिन मंत्रियों तथा कर्मचारियों ने रात-दिन लगकर परिश्रम किया है, उनकी जितनी ही प्रशंसा की जाए, थोड़ी है।

मैं भली-भांति जानता हूं कि स्वाधीनता जिस प्रसन्नता को लाई है वह आपके हृदयों की इस उदासी से कुछ फीकी पड़ गयी है, क्योंकि यह (स्वाधीनता) अखण्ड भारत में न आ सकी। बंटवारे के शोक ने आज की घटनाओं के आह्लाद को कुछ कम कर दिया है। आपके नेताओं ने कठिन निर्णय करके जिस प्रकार देशभक्तिपूर्ण राजनीतिज्ञता का परिचय दिया है, उसी प्रकार आपने अपने नेताओं का समर्थन करके उदारता तथा यथार्थता की भावना का परिचय दिया है।

मेरी स्थिति को सहानुभूतिपूर्वक समझकर इन राजनीतिज्ञों ने मुझे सदा के लिए अपना ऋणी बना लिया है। उदाहरण के लिए, उन्होंने अपनी इस मूल मांग पर जोर नहीं दिया कि ट्रिब्यूनल का अध्यक्ष मैं बनूं। इसके अलावा पंजाब और बंगाल के बंटवारे की जिम्मेदारी से भी मुझे छुटकारा देना उन्होंने आरम्भ ही में स्वीकार कर लिया। उन्होंने ही सीमा-कमीशन के अध्यक्ष तथा सदस्यों का चुनाव किया, उन्होंने ही यह निश्चय किया कि कमीशन किन बातों पर विचार करे और निर्णयों को अमल में लाने का दायित्व भी उन्होंने वहन किया। आप यह अनुभव करेंगे कि अगर नेता ऐसा न करते तो मैं बड़ी असम्भव स्थिति में पड़ जाता।

अब मैं देशी रियासतों की समस्या को लेता हूं। 3 जून वाली योजना में केवल ब्रिटिश भारत में सत्ता-हस्तान्तरण की व्यवस्था की गई थी। रियासतों के संबंध में तो सिर्फ एक पैराग्राफ में यह कहा गया था कि सत्ता हस्तान्तरित होने पर रियासतें, जिनकी संख्या 565 है, स्वतंत्र हो जाएंगी। यह एक और महती समस्या थी और

इस संबंध में सभी तरफ आशंका थी। परंतु रियासत-विभाग स्थापित होने पर सम्राट के प्रतिनिधि की हैसियत से मैं इस जटिल समस्या को भी हाथ में ले सका। रियासत-विभाग के प्रधान दूरदर्शी राजनीतिज्ञ सरदार वल्लभभाई पटेल को इसका श्रेय प्राप्त है कि एक ऐसी योजना तैयार हो सकी जो मुझे भारत के स्वाधीन उपनिवेश के लिये तथा रियासतों के लिए-दोनों के लिए-समान रूप से हितकर जान पड़ी। अधिकांश रियासतों के भौगोलिक संबंध भारत के स्वाधीन उपनिवेश से हैं और इसलिए इस समस्या को हल करने में उसकी दिलचस्पी भी अधिक है। यह एक तरफ रियासतों के राजाओं और उनकी सरकारों की तथा दूसरी तरफ भारत सरकार की यथार्थता और उत्तरदायित्व संबंधी भावना की ही विजय है कि दोनों पक्षों को स्वीकार होने योग्य प्रवेशपत्र (Instrumentation of Accession) बनाया जा सका और वह भी इतना स्पष्ट और सरल कि तीन सप्ताह से भी कम समय में प्राय: सभी संबंधित रियासतों के प्रवेशपत्र तथा "यथापूर्व" (Stand still) समझौते पर हस्ताक्षर हो सके। इस प्रकार 30 करोड़ मनुष्यों को इस उप-महाद्वीप के अधिकांश भाग की एक और अखण्ड राजनीतिक व्यवस्था स्थापित हो सकी है।

प्रमुख महत्व की रियासतों में हैदराबाद ही एक ऐसी रियासत है जो अभी तक शामिल नहीं हुई है। जनसंख्या, क्षेत्रफल और साधनों की दृष्टि से हैदराबाद की स्थिति अनूठी है। उसकी अपनी विशिष्ट समस्यायें भी हैं। पाकिस्तान में शामिल होने की तो हैदराबाद के निजाम की मन्शा नहीं है, लेकिन वे अभी तक भारत में शामिल नहीं हो सके हैं। निजाम ने मुझे विश्वास दिलाया है कि विदेशी मामले, रक्षा और यातायात के तीन आवश्यक विषयों में वे उस डोमिनियन से सहयोग रखेंगे जिसके प्रदेश से उनकी रियासत घिरी है। सरकार की स्वीकृति से निजाम के साथ बातचीत जारी रखी जायेगी और मुझे आशा है कि हम सन्तोषप्रद समाधान ढूंढ निकालेंगे।

आज से मैं आपका वैधानिक गवर्नर-जनरल हूं और आपसे अनुरोध करूंगा कि आप मुझे आज से अपने ही जैसा एक व्यक्ति समझें, जो भारत के हितों को अग्रसर करने के लिए सच्चे हृदय से प्रयत्नशील रहेगा। मैं यह देखकर अपने को सम्मानित अनुभव करता हूं कि आपके नेताओं ने मुझे आपका गवर्नर-जनरल बने रहने के लिए आमंत्रित किया है और आपने उसे स्वीकार कर लिया है। इसे स्वीकार करने में, मैं केवल इसी विचार से प्रेरित हुआ हूं कि आगे जो कठिन समय आने वाला है उसमें

शायद आपकी कुछ सहायता कर सकूं। भारतीय स्वाधीनता-कानून पर विचार करते समय आपके नेताओं ने 31 मार्च, 1948 को इस अन्तरिम काल का अन्त निर्धारित किया था। मैं अनुरोध करता हूं कि अप्रैल में आप मुझे मुक्त कर दें। यह नहीं है कि आपकी सेवा में रहकर मैं अपने आपको सम्मानित नहीं अनुभव करता हूं, किन्तु मैं यह जरूर महसूस करता हूं कि यथासम्भव शीघ्र ही भारत अपनी प्रजा में से किसी को गवर्नर-जनरल चुनने के लिए स्वतंत्र रहे। तब तक मेरी पत्नी और मैं आपके साथ और आपके बीच काम करके अपना सौभाग्य समझेंगे। सभी अवसरों पर हमारे प्रति जो समझौता, सहयोग, सच्ची सहानुभूति और उदारता की भावना व्यक्त की गई है, उनके लिए कृतज्ञता प्रकट करने को मेरे पास कोई शब्द नहीं हैं।

मुझे यह घोषणा करते हुये प्रसन्नता होती है कि मेरी सरकार ने (जैसा कि मुझे अब वैधानिक रूप से ऐसा कहने का अधिकार है और मुझे ऐसा कहते गर्व होता है) इस ऐतिहासिक अवसर पर कैदियों को उदारतापूर्वक क्षमा प्रदान करने का निश्चय किया है। सार्वजनिक नैतिकता और सुरक्षा को सर्वोपरि ध्यान में रखकर कैदियों की कितनी ही श्रेणियां तैयार की गयी हैं और राजनैतिक उद्देश्य पर खास ध्यान दिया गया है। फौजी अदालतों से जिन सैनिकों को सजायें दी गयी हैं, उनको छोड़ने में भी यही नीति बरती जायेगी।

आपके आगे कार्य महान हैं। युद्ध दो वर्ष पूर्व समाप्त हो चुका है। सच तो यह है कि दो वर्ष पूर्व इसी दिन, जब मैं भारत के महान मित्र श्री एटली के मंत्रिमंडल वाले कमरे में था, मुझे जापान के आत्मसमर्पण का समाचार मिला था। वह कृतज्ञता तथा खुशी का क्षण था क्योंकि 6 वर्ष तक विनाश और रक्तपात होता रहा था। परंतु भारत में हमने कहीं अधिक बड़ी सफलता प्राप्त की है, जिसे ''युद्ध के बिना ही शान्ति-संधि'' कहा जा सकता है। फिर भी युद्धजन्य हानि के चिन्ह संसार भर में दिखायी दे रहे हैं। भारत को भी, जिसने युद्ध में वीरतापूर्ण भाग लिया था—और इसका साक्षी दक्षिण पूर्वी एशिया से अपने अनुभव के कारण मैं खुद हूं—अपनी आर्थिक व्यवस्था में असामंजस्य होने और अपने वीर योद्धाओं के हताहत होने के रूप में मूल्य चुकाना पड़ा। राजनैतिक समस्या में व्यस्त रहने के कारण आर्थिक सुधार के काम में बाधा पड़ी है। अब राष्ट्र के सुख और समृद्धि की व्यवस्था करना, खाद्य, कपड़ा तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं के अभाव की पूर्ति का प्रबंध करना और एक

सामंजस्यपूर्ण आर्थिक व्यवस्था का निर्माण करना आप ही का काम है। इन समस्याओं के निपटारे के लिए आपके तात्कालिक तथा पूर्ण हार्दिक प्रयत्न और दूरदर्शितापूर्ण आयोजन की आवश्यकता है। किन्तु मुझे विश्वास है, जन, साधन तथा नेतृत्व का अभाव न होने के कारण आप अपने इस कार्य में सफल हो सकेंगे।

भारत में जो कुछ हो रहा है उसका केवल राष्ट्रीय महत्व ही नहीं है। एक स्थिर तथा समृद्धशाली राज्य की स्थापना संसार की शान्ति के लिए सबसे अधिक अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की बात है। भारत की आर्थिक और सामाजिक उन्नति, सैन्य दृष्टि से इसकी महत्वपूर्ण अवस्थिति और उसके साधनों की दृष्टि से, इन घटनाओं का विशेष महत्व है। यही कारण है कि सिर्फ ब्रिटेन और स्वाधीन उपनिवेश ही नहीं बल्कि संसार के सब महान राष्ट्र उत्सुकता से इस देश की प्रगति दिलचस्पी से देखेंगे और इसकी समृद्धि और सफलता की कामना करेंगे।

इस ऐतिहासिक घड़ी में हमें यह न भूल जाना चाहिए कि भारत महात्मा गांधी का—अहिंसा द्वारा उसकी स्वतंत्रता लाने वाले महान सूत्रधार का—कितना बड़ा ऋणी है। आज उनकी अनुपस्थिति हमें खल रही है और हम उन्हें बताना चाहते हैं कि उनका ध्यान हमें कितना अधिक है।

श्रीमान् अध्यक्ष महोदय, मैं आप तथा पिछली अन्तःकालीन सरकार के अन्य सदस्यों को सूचित करना चाहता हूं कि आपकी तरफ से मुझे जो सहयोग और समर्थन मिलता रहा है, उसकी मैं कद्र करता हूं।

अपने प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू के रूप में आपको साहस तथा सूझबूझ वाला एक संसार प्रसिद्ध नेता प्राप्त है। उनके विश्वास और मंत्रित्व से मुझे अपने कार्य में असीम सहायता प्राप्त हुई है। अब उनके नेतृत्व में और उन्होंने जिन साथियों को चुना है उनकी सहायता तथा जनता के सच्चे सहयोग से भारत शक्ति और प्रभावपूर्ण स्थिति प्राप्त कर सकेगा और संसार के राष्ट्रों के बीच अपना उचित स्थान भी पा सकेगा। *(अरसे तक तुमुल हर्षध्वनि)*

अध्यक्षः योर एक्सेलेंसी और मेम्बराने असेम्बली, मैं आपसे दरख्वास्त करना चाहता हूं कि बादशाह सलामत के पास आप इस असेम्बली की तरफ से शुक्रिया का संदेश भेज दें, उस संदेश के लिए जो उन्होंने इतनी मेहरबानी करके हमारे पास भेजा है। जिस काम में आज हम लगने जा रहे हैं उसमें उनकी हमदर्दी और मेहरबानी हमारे साथ रहेगी, यह जानकर हम इस काम को ठीक तरह से अंजाम दे सकेंगे।

अध्यक्ष: मुझे सभा को यह सूचना देनी है कि फ्रांस के वैदेशिक मंत्री श्री एम. गिराड से भी शुभ-कामना का एक संदेश मिला है जो उन्होंने फ्रांस की सरकार तथा अपनी ओर से भेजा है। खेद है कि सम्वाद की इबारत मेरे पास नहीं है, पर अन्य सम्वादों के साथ, जिन्हें मैंने आज सुनाया है, यह परिषद् की कार्रवाई संबंधी पुस्तिका में दर्ज कर लिया जाएगा।

योर एक्सेलेंसी, आप से अनुरोध है कि आप श्रीमान् सम्राट को इस सभा की ओर से इसका निष्ठापूर्ण अभिनन्दन का सम्वाद तथा उनके शुभ सम्वाद के लिए जो उन्होंने महती कृपा करके हमें आज भेजा है, इसका हार्दिक धन्यवाद भेज दें। उस महान् काम को पूरा करने में, जिसे हम आज उठा रहे हैं, सम्राट के इस सम्वाद से हमें बड़ी प्रेरणा प्राप्त होगी और मुझे इसमें रंचमात्र भी सन्देह नहीं है कि हम ग्रेट ब्रिटेन से एक मित्र की तरह के सम्पर्क की बड़ी प्रसन्नता से आशा रखते हैं। मुझे आशा और विश्वास है कि सम्राट की दिलचस्पी, सहानुभूति और उनका अनुग्रह, जिससे वह सदा ही प्रभावित रहे हैं, भारत को पूर्ववत् प्राप्त होते रहेंगे, और हम उन्हें पाने योग्य होंगे।

(यह संदेश तथा अमेरिका के प्रेसीडेंट का संदेश परिषद् में पढ़े नहीं गये थे, पर कार्रवाई में शामिल कर दिये गये हैं।)

10. मो. जारजेस बिडाल्ट, वैदेशिक मंत्री, पैरिस की ओर से, पं. जवाहरलाल नेहरू के नाम:

"अपनी सरकार की ओर से तथा अपनी ओर से मैं इस ऐतिहासिक तिथि का अभिवादन करता हूं जब कि भारतवर्ष को विश्व के उन महान् स्वाधीन राष्ट्रों के समकक्ष श्रेणी में आने का गौरव प्राप्त हुआ जो शांति स्थापना के कृत संकल्प हैं और हृदय से संसार के सभी लोगों की सुख-समृद्धि की कामना करते हैं। श्रीमान् से मेरा अनुरोध है कि इस अवसर पर आप हमारे इस पुनर्प्रदत्त आश्वासन को स्वीकार करें कि इन दोनों देशों की पारस्परिक मैत्री के लिए मैं सतत प्रयत्नशील रहूंगा और इसका मुझे सर्वोपरि ध्यान है।"

15 अगस्त, 1947 को वायसराय हाउस, नई दिल्ली में पद की शपथ लेते डा. राजेन्द्र प्रसाद

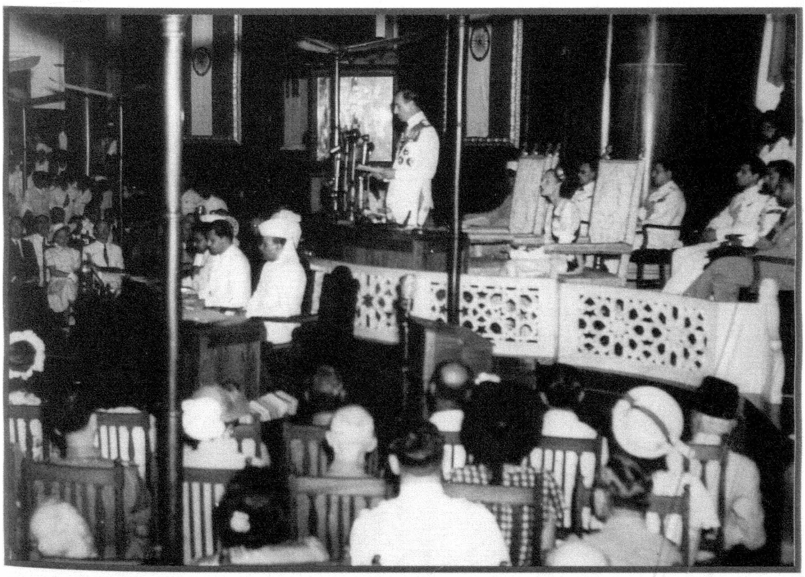

15 अगस्त, 1947 को विधान परिषद के अध्यक्ष, डा. राजेन्द्र प्रसाद,
विधान परिषद को संबोधित करते हुए

15 अगस्त, 1947 को भारत के गवर्नर-जनरल लार्ड माउंटबेटन का विधान परिषद् में भाषण

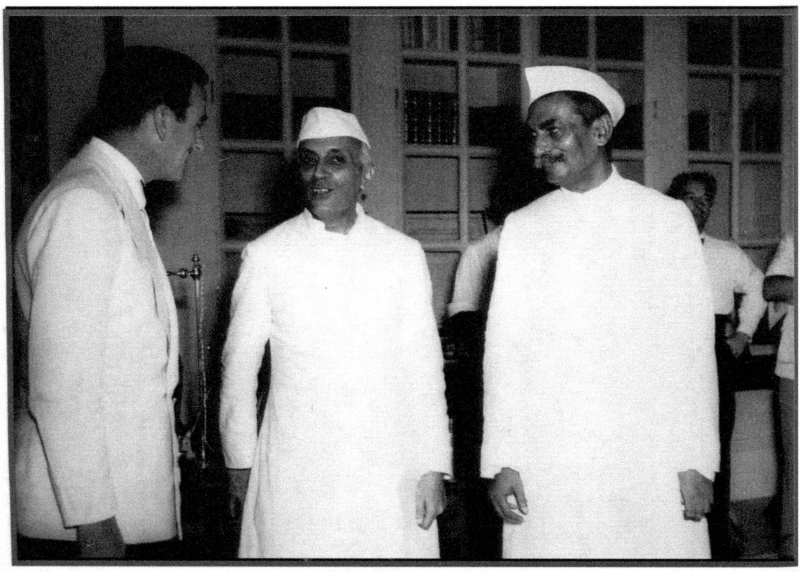

15 अगस्त, 1947 को पंडित जवाहरलाल नेहरू तथा
डा. राजेन्द्र प्रसाद के साथ लार्ड माउंटबेटन

लार्ड माउंटबेटन, डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी तथा अन्यों के साथ बातचीत करते हुए

11. अमेरिका के राष्ट्रपति द्वारा संदेश

अमेरिकन दूतावास:
नई दिल्ली (इंडिया)
15 अगस्त, 1947

श्रीमान्, मुझे गौरव है कि अमेरिका के राष्ट्रपति से प्राप्त निम्नलिखित संदेश को आपके पास भेजने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हो रहा है:

"इस चिस्मरणीय अवसर पर मैं अमरीका की सरकार और उसकी जनता की ओर से आपके प्रति और प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू तथा भारतीय डोमिनियन की जनता के प्रति हार्दिक शुभकामनाएं प्रकट करता हूं। भारत ने संसार के सर्वसत्ता सम्पन्न राष्ट्रों की पंक्ति में स्थान पाया है। उसके इस नये और उन्नत पद का हम स्वागत करते हैं। नये स्वाधीन उपनिवेश को अपनी सतत मैत्री और सद्भावना का आश्वासन देते हैं और पुन: अपना यह दृढ़ विश्वास प्रकट करते हैं कि भारत संसार में शांति स्थापना और सभी लोगों की प्रगति में तत्पर रहेगा तथा संसार में पारस्परिक विश्वास और सम्मान के आधार पर आश्रित समाज की स्थापना की होड़ में विश्व के राष्ट्रों की पहली पंक्ति में खड़ा होगा। भारत के सम्मुख बहुतेरी गम्भीर समस्यायें उपस्थित हैं; परन्तु उसके साधन विशाल हैं और मुझे विश्वास है कि उसकी जनता और नेताओं में अपनी इन भावी समस्याओं को सुलझाने की सामर्थ्य है। आगे आने वाले वर्षों में अमरीका इस नये और महान राष्ट्र की जनता का सदा मित्र रहेगा। मेरी यह हार्दिक आशा है कि भूतकाल की भांति भविष्य में भी अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में हम लोगों में घनिष्ठ और लाभदायक सहयोग बना रहेगा और हमारे पारस्परिक संबंध घनिष्ठ और सद्भावनापूर्ण बने रहेंगे।"

इस अवसर पर भारतीय उपनिवेश के गवर्नर-जनरल का पद ग्रहण करने पर श्रीमान् को मैं बधाई देता हूं और साथ ही उच्चतम प्रतिष्ठा प्रदान करने का आपको विश्वास दिलाता हूं।

भारतीय उपनिवेश के श्रीमान गवर्नर-जनरल—हेनरी टी. ग्रेडी

अध्यक्ष: इस शुभ घड़ी में जब हम स्वतंत्रता के अधिकारों को, आजादी के अख्तियारों को अपने हाथों में लेने जा रहे हैं, हमारा पहला कर्तव्य है कि हम उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करें जिन्होंने इस दिन को लाने के लिए अपनी जिन्दगी लगा दी और तरह-तरह के कष्ट सहे और मुसीबतें झेलीं। इस ऐतिहासिक अवसर पर (इस तवारीखी मौके पर) हम अपने राष्ट्र के निर्माता महात्मा गांधी को भी अपनी भक्ति अर्पित करते हैं जिन्होंने इन कठिन दिनों में हमारी रहनुमाई की है और हमें अनुप्राणित किया है, और आज अपनी वृद्धावस्था में भी जो अधूरा रह गया है उसे पूरा करने में अपनी अद्‌भुत शक्ति लगा रहे हैं।

हमने आज जो स्वतंत्रता पायी है वह हमारे तप और त्याग और कुर्बानी का फल है। साथ ही हमको यह भी मानना चाहिये कि उसके लाने में संसार और दूसरे राष्ट्रों की स्थिति भी सहायक और मददगार रही है। हमें यह भी मानना चाहिये कि ब्रिटिश जाति ने भी अपने इतिहास और संस्कृति के अनुसार अपने तमुद्दन और तवारीख के मुताबिक अपने उन उदारचेता और दूरदर्शी नेताओं और राजनीतिज्ञों—अपने दूरअन्देश और फय्याज खयाल वाले लीडरों—के स्वप्नों और वचनों को पूरा किया है, जिन्होंने इस दिन की भविष्यवाणी की थी और समय-समय पर इसे लाने की प्रतिज्ञा की थी। आज हमें इस बात की खुशी है कि उस जाति के प्रतिनिधिस्वरूप नुमाइन्दे की तरह हमारे बीच में वाइकाउण्ट माउण्टबैटन आफ बर्मा और उनकी धर्मपत्नी मौजूद हैं, जिन्होंने अंतिम दिनों में इतनी मेहनत और उत्साह के साथ काम किया है। आज से हिन्दुस्तान पर ब्रिटिश प्रभुत्व खत्म होता है और हमारा ब्रिटेन के साथ ऐसा संबंध कायम होता है जो बराबरी का है और जिससे दोनों देशों की भलाई है और दोनों को लाभ हो सकता है।

हम जानते हैं कि देश में इस स्वतंत्रता प्राप्ति से जो उल्लास, जो खुशी और जो उत्साह होना चाहिये वह इसका बंटवारा हो जाने के कारण किरकिरा हो गया है। हमारा काम है कि जो हमारे साथ रह गया है उसको हम ऐसा सुंदर, सुव्यवस्थित, सुसंगठित और समुन्नत करें कि बिछुड़े हुए प्रदेशों को फिर हमसे मिल जाना बहुत अधिक लाभप्रद मालूम हो। हम आशा करते हैं कि हम अपने व्यवहार से, अपनी कार्यदक्षता से उनको फिर अपनी ओर वापस ला सकेंगे। यह जोर-जबर्दस्ती से नहीं हो सकता। जोर-जबर्दस्ती का कहीं भी अच्छा अन्त नहीं होता। वह एक चक्र है जिसका आदि-अन्त कहीं नहीं है। हम यह उद्देश्य अपने सद्‌व्यवहार से पूरा कर सकते हैं। ऐसे लोग जो इस बंटवारे को पसन्द नहीं करते, पर जिनके घरबार उस

पार में पड़ गये हैं, उनसे अनुरोध है कि वे वहां ही डटे रहें और जिस हिम्मत और उत्साह से उन्होंने स्वराज्य-प्राप्ति में काम किया है उसी से अब भी काम लेते रहें। जो नया शासन और नई गवर्नमेण्ट वहां कायम हो रही है उसको हम अपना आशीर्वाद और शुभकामनाएं भेजते हैं और चाहते हैं कि वह अपने उस बड़े काम में, जो आज वह शुरू करने जा रही है, पूरी तरह कामयाब होवे। हमारा पूरा विश्वास है कि वह वहां के सभी रहने वालों के साथ बिना कोई फर्क किये इंसाफ और न्याय का बर्ताव करेगी। हमारी सहानुभूति तो वहां के सब लोगों के साथ है ही। हम चाहते हैं कि वह अपनी वफादारी और अपनी हिम्मत से अपनी जगह वहां हासिल और कायम कर लेवें।

इस दिन हमें खुशियां मनानी हैं, मगर उससे भी अधिक अपनी जिम्मेदारियों को समझना है। हम गुजिश्ता को भूलें और आइन्दा की ओर अपनी आंखें फेरें और ऐसा हिन्दुस्तान बनावें जिसका हम सपना देखते रहे। हमारा किसी भी देश के साथ कोई झगड़ा नहीं है और हम उम्मीद रखते हैं कि कोई दूसरा देश हमारे साथ झगड़ा मोल नहीं लेगा। हमारा इतिहास बताता है और हमारी संस्कृति सिखाती है कि हम शांतिप्रिय हैं, और रहें। हमारा साम्राज्य, हमारी फतह दूसरे प्रकार की रही है। हमने दूसरों को जंजीरों से, चाहे वह लोहे की हों या सोने की भी क्यों न हों, कभी बांधने की कोशिश नहीं की। हमने दूसरों को अपने साथ लोहे की जंजीर से भी ज्यादा मजबूत मगर सुन्दर और सुखद रेशम के धागे से बांध रखा है और वह बन्धन धर्म का है, संस्कृति का है और ज्ञान का है। हम अब भी उसी रास्ते पर चलते रहेंगे और हमारी एक ही इच्छा और अभिलाषा रहेगी। वह अभिलाषा यह होगी कि हम संसार में सुख और शान्ति कायम करने में मदद पहुंचा सकें और संसार के हाथों में सत्य और अहिंसा का वह अचूक हथियार दे सकें जिसने हमें आज आजादी तक पहुंचाया है। हमारी जिन्दगी और संस्कृति में कुछ ऐसा है जिसने हमें समय के थपेड़ों के बावजूद जिन्दा रहने की शक्ति दी है। अगर हम अपने आदर्शों को सामने रखे रहेंगे तो हम संसार की बड़ी सेवा कर पावेंगे।

आज से हम कानूनी तरीके से अपने भाग्य के विधाता बने हैं और इस देश को शान्त, सुखी और समुन्नत बनाने का सारा भार हमारे ऊपर आ गया है। जो स्वराज्य हमने हासिल किया है वह खोखला रह जायेगा, अगर हमने देश में रहने वाले सभी वर्ग, जाति और धर्म वाले लोगों में यह विश्वास पैदा नहीं किया कि वह यहां सुरक्षित हैं, उनकी उन्नति और तरक्की के रास्ते में कोई बाधा नहीं डाल सकता है, उनको

धर्म और धर्माचार की पूरी आजादी है, उनकी भाषा और संस्कृति, जबान और कल्चर पर कोई आघात नहीं पहुंचा सकता है, आदिम जातियों और दूसरे पिछड़े हुए लोगों की उन्नति के लिए उस समय तक विशेष आयोजन और प्रयत्न होता रहेगा—खास मदद होती रहेगी—जब तक वह सबों की बराबरी में न आ जायें, अछूतपन को सपने के संकट की तरह हम भूल गये। मजदूर और किसान और दूसरे हर प्रकार के श्रमजीवी, मेहनत करने वाले किसी प्रकार से शोषित नहीं होने पावेंगे, सभी लोगों को अपने विचारों को प्रकट और प्रचारित करने का, अपने खयालों की इशायत का मौका और अधिकार है। जब इस देश में खाने के लिए पूरा अन्न होने लगेगा और फिर दूध की नदियां बहने लगेंगी, जब हमारे जवान लोग खेतों और कारखानों में हंसते-हंसते काम किया करेंगे, जब हर झोंपड़े और पल्ली में घरेलू धंधों के साथ-साथ हमारी युवतियां अपने मीठे स्वर अलापती रहेंगी। जब इस देश के सुखी घरों पर और हंसते हुए चेहरों पर सूरज और चन्द्रमा अपनी किरणें छिटकायेंगे तभी हमारा स्वराज्य सफलीभूत होगा।

काम बहुत बड़ा है, बहुत मुश्किल है और सब लोगों की सहायता और सहयोग के बिना यह पूरा हो नहीं सकता। देश के सभी लोगों से अनुरोध है कि वह इसमें पूरी सहायता करें। हम जानते हैं कि आज देश के अन्दर कई विचारधारायें चल रही हैं। कितने ही दल हैं जो संगठित रूप से अपने विचारों का प्रचार करना और देश द्वारा उनको मंजूर कराकर उनके ही ढांचे में विधान और हमारे सामाजिक जीवन को ढालना चाहते हैं। जहां एक ओर इन सबको अपने विचारों के प्रचार का पूरा अधिकार होना चाहिये, दूसरी ओर देश को यह अधिकार है कि उनसे वह देश के प्रति सच्ची वफादारी का दावा करें और उनका फर्ज है कि वह वफादारी वे दें। हम सबको यह मानना होगा कि इस समय सबसे अधिक जरूरत निर्माण और रचना की है, संघर्ष की नहीं, ठोस तामीरी काम की है बहस की नहीं। हम आशा करते हैं कि सभी मिल-जुलकर इस बड़े काम को पूरा करेंगे। हम चाहते हैं कि हमारे किसान ज्यादा से ज्यादा अन्न पैदा करें, कारखानों के मजदूर ज्यादा से ज्यादा माल पैदा करें और व्यवसायी और व्यापारी लोग अपनी बुद्धि और चातुरी जनता जनार्दन की सेवा में लगावें, और सबके लिए सुन्दर व्यवस्थित और सुखी जीवन, जिन्दगी का साधन, सामान जुटा देवें और सबके लिए आत्मोन्नति (तरक्की) का रास्ता साफ कर दें।

जनता और जनता के प्रतिनिधियों के अलावा एक और वर्ग है जिसकी जिम्मेदारी भी कम नहीं है। वह है हमारे देश की सेना और सरकारी मुलाजिमों की। जो लोग आज तक हम पर और जन साधारण पर हुकूमत करते रहे हैं उनको अब से सेवक

और खादिम का जामा पहनना होगा। हमारी फौज ने अपनी बहादुरी और युद्ध कौशल का सबूत दुनिया के अनेकों रण क्षेत्रों में दिया है। आज तक वह दूसरे प्रकार से संचालित हो रही थी। आज वह राष्ट्रीय सेना, कौमी फौज बन गयी जिसके ऊपर देश को सुरक्षित, महफूज रखने का भार होगा और जो जनता को दबाने के लिए नहीं उठाने के लिये, उन्नत करने के लिए, रखी जायेगी। अब हमारे देश के रहने वालों के लिए फौज के किसी विभाग में, चाहे वह जमीन, पानी या आसमान में काम करता हो, कोई भी ऐसी जगह नहीं जो न मिल सके। इतना ही नहीं, उनको जल्द से जल्द ऊंचे से ऊंचे ओहदे तक पहुंचकर काम संभालना है। उसी तरह जो सरकारी मुलाजिम हैं उनको भी अब अपने को देश का शासक न मानकर देश का सेवक मानना होगा। जिस तरह स्वतंत्र देश के सरकारी मुलाजिम जनता की सेवा करते हैं उसी तरह इनको भी सेवा करनी होगी। अपनी सारी योग्यता, काबलियत और शक्ति का रुख दूसरी तरफ उनको फेरना पड़ेगा और जहां वह आज तक रोब-दाब से काम लिया करते थे वहां उन्हें अब केवल सेवा-भावना से काम करना होगा, जैसे स्वतंत्र देशों के सरकारी मुलाजिम किया करते हैं। जनता और गवर्नमेण्ट की तरफ से उनको भरोसा होना चाहिये कि उनके रहन-सहन के लिए देश की परिस्थिति के अनुकूल, यहां की हालत के मुताबिक जहां उनको रहना है पर्याप्त प्रबंध, काफी इन्तजाम किया जायेगा।

हम उन देशी रियासतों का स्वागत करते हैं जो हमारे संघ में शामिल हो गई हैं और रजवाड़ों की जनता के प्रति हम अपनी सद्भावना प्रकट करना चाहते हैं और उनके नरेशों और रईसों को हम विश्वास दिलाना चाहते हैं कि उनके प्रति हमारा कोई द्वेष नहीं है, उनको चाहिये कि वह इंग्लैंड के राजा का अनुकरण करें और प्रजातंत्र का नियंत्रित अधिकार ही अपने हाथों में रखें। उनको भूलना नहीं चाहिये कि यूरोप में जहां दूसरे देशों के राज सिंहासन चकनाचूर हो गये, अंग्रेजी राजा की सत्ता दो बड़ी लड़ाइयों के बाद भी आज पहले जैसी ज्यों की त्यों खड़ी है।

विदेशों में प्रवासी भारतवासियों को, चाहे वह अंग्रेजी उपनिवेशों में बसे हैं या और जगहों में, हम विश्वास दिलाना चाहते हैं कि उनके सुख-दुख में हमारी गहरी दिलचस्पी है और उनके लिये दिलों में सद्भावना है। देश में जो अल्पसंख्यक लोग हैं उनको हम विश्वास दिलाना चाहते हैं कि उनके साथ न्याय और इन्साफ का बर्ताव होगा और उनके अधिकार (हक) सुरक्षित (महफूज) रहेंगे।

विधान बनाने का काम जो बाकी है उसको जल्द से जल्द पूरा करना चाहिये ताकि हम अपने बनाये विधान के मातहत रहने लग जायें और काम शुरू कर दें।

इस विधान को बनाने में सबकी सहायता आवश्यक है। ऐसा सुन्दर उसे बनाना है जिसमें जनमत प्रधान रहे और सेवा और जनता की उन्नति उद्देश्य रहे, और सबको इस बात का विश्वास रहे कि वह अपने धर्म, संस्कृति, भाषा, विचार सबको सुरक्षित रख सकते हैं और उनकी तरक्की के रास्ते में किसी किस्म की बाधा नहीं हो सकती। इसको बनाने में विदेशों के अनुभव, तजुरबा और विधान (कायदे) से हम लाभ उठावेंगे। अपनी संस्कृति और परिस्थिति से जो कुछ मिल सकता है उसे लेंगे और जहां जरूरत होगी आज की प्रचलित सीमाओं को, चाहे वह शासन-पद्धति की हो अथवा सूबाओं की, लांघकर नयी सीमायें बनायेंगे। हमारा उद्देश्य है कि हम ऐसा विधान बनायें जिसमें जनमत की प्रधानता रहे और जिसमें व्यक्ति को केवल स्वतंत्रता (आजादी) ही न मिले, पर वह स्वतंत्रता (आजादी) लोकहित (खलक की बहबूदी) का साधन (जरिया) बन जाये।

आज तक इस देश के लोग देश को आजाद करने के लिए संकल्प किया करते थे और इस कार्यसिद्धि के लिए त्याग और बलिदान की प्रतिज्ञा किया करते थे। आज दूसरे प्रकार के संकल्प और प्रतिज्ञा का दिन आया है। हम में से कोई ऐसा न समझे कि त्याग का दिन बीत चुका और भोग का समय आ गया। जो देश को उन्नत करने का महान कार्य हमारे सामने है उसमें आज तक हमने जितनी त्याग की भावना दिखलाई है उससे कहीं अधिक दृढ़ प्रतिज्ञा के साथ तत्परता, त्याग और कार्य-पटुता दिखलाने का समय है। इसलिए एक बार फिर भी भारत की सेवा में लग जाने का संकल्प करना है और ईश्वर से प्रार्थना करनी है कि जिस तरह से उसने हमारे पहले के संकल्प को पूरा किया उसी तरह से वह इसको भी पूरा करे।

राष्ट्रीय पताका का उत्तोलन

अध्यक्षः अब हिज एक्सेलेंसी झन्डोत्तोलन का संकेत देंगे।

(तोप की आवाज सुनाई पड़ी।)

श्रीमान् गवर्नर-जनरलः इमारत की छत पर झण्डा फहराने का यह संकेत है।

अध्यक्षः अब सभा 20 अगस्त को, 10 बजे के लिए स्थगित होती है।

माननीय सदस्यगणः महात्मा गांधी की जय, पं० जवाहरलाल नेहरू की जय, लॉर्ड माउण्टबेटन की जय।

इसके बाद सभा बुधवार, 20 अगस्त, सन् 1947 के प्रातः 10 बजे के लिए स्थगित हुई।

पंडित जवाहरलाल नेहरू का भाषण

15 अगस्त 1947

दृढ़संकल्प के साथ नई जिम्मेदारी का सामना*

मेरे देश भाइयो,

भारत और भारत की स्वतंत्रता के हित में अपनी सेवा अर्पित करने का सौभाग्य मुझे बहुत वर्षों से रहा है। आज मैं पहली बार भारतीय जनता के प्रथम सेवक के रूप में, उसकी सेवा और सुधार के लिए प्रतिज्ञाबद्ध होकर, अपने पद से आप से बोल रहा हूं। मैं यहां इसलिए हूं कि आपकी ऐसी इच्छा थी, और मैं यहां तभी तक हूं, जब तक कि आप अपना विश्वास देकर, मेरा सम्मान करते हैं। हम आज स्वतंत्र और पूर्ण सत्ताधारी लोग हैं और हमने अपने को अतीत के बोझ से मुक्त कर लिया है। हम संसार की ओर स्पष्ट और मैत्री-पूर्ण आंखों से और भविष्य की ओर आस्था और विश्वास के साथ देखते हैं। विदेशी आधिपत्य का बोझ दूर हो गया है, लेकिन स्वतंत्रता अपनी अलग जिम्मेदारियां और भार लाती है और उन्हें हम स्वतंत्र लोगों की भावना से ही, आत्म-संयम के साथ और उस स्वतंत्रता की रक्षा और विस्तार करने के निश्चय से वहन कर सकते हैं। हमने बहुत कुछ हासिल कर लिया है; परन्तु हमें अभी इससे अधिक हासिल करना है। तो आइए हम अपने नए धंधों में, दृढ़ता से और उन ऊंचे सिद्धांतों को ग्रहण करते हुए, जिन्हें कि हमारे महान नेता ने सिखाया है, लग जाएं।

सौभाग्य से महात्मा गांधी मार्ग-प्रदर्शन के लिए, हमें प्रेरणा देने के लिए और सदा आदर्श अध्यवसाय का पथ दिखाने के लिए हमारे साथ हैं। बहुत दिनों से उन्होंने हमें सिखाया है कि आदर्श और उद्देश्य उन साधनों से पृथक नहीं किए जा सकते जो कि उनकी सिद्धि के लिए उपयोग में लाए जाते हैं; अर्थात् अच्छे उद्देश्यों की सिद्धि अच्छे साधनों द्वारा ही संभव है। यदि हम जीवन की महान बातों की ओर लक्ष्य करते हैं, यदि हम भारत का स्वप्न बड़े राष्ट्र के रूप में देखते हैं, जो कि शांति और स्वतंत्रता का अपना प्राचीन संदेश दूसरों को दे रहा है, तब हमें स्वयं बड़ा बनना है और भारत माता की योग्य सन्तान बनना है। संसार की निगाहें हम पर हैं और वे पूर्व में इस स्वतंत्रता के जन्म को ध्यान से देख रही हैं और विचार कर रही हैं कि इसका अर्थ क्या है।

*स्रोतः सलेक्टेड वर्क्स आफ जवाहरलाल नेहरू, द्वितीय सीरीज, खण्ड 3, जवाहरलाल नेहरू स्मारक निधि, तीन मूर्ति भवन, नई दिल्ली, 1985, पृष्ठ 137-138

हमारा पहला ध्येय यह होना चाहिए कि हम सब प्रकार के आंतरिक झगड़ों और हिंसा का अन्त कर दें, जो कि हमें कलुषित करके गिराते हैं और जो कि स्वतंत्रता के पक्ष को हानि पहुंचाते हैं। ये जनता की महान आर्थिक समस्याओं पर, जिन पर तुरन्त ध्यान देने की आवश्यकता है, विचार करने में बाधक होते हैं।

अपनी दीर्घकालीन पराधीनता और विश्वव्यापी युद्ध और उसके परिणामों ने हमारे आगे बहुत-सी अत्यावश्यक समस्याओं को एक साथ डाल दिया है। आज हमारी जनता के लिए भोजन और वस्त्र और अन्य आवश्यक वस्तुओं की कमी है, और हम मुद्रा-स्फीति और बढ़ती हुई कीमतों के बवंडर में पड़ गए हैं। हम इन समस्याओं को तुरन्त हल नहीं कर सकते, साथ ही उनके हल करने में देर भी नहीं लगा सकते। इसलिए हमें बुद्धिमत्ता के साथ ऐसी योजनाएं बनानी हैं जिनसे हमारी जनता का बोझ कम हो और उनके रहन-सहन का स्तर ऊंचा उठे। हम किसी का बुरा नहीं चाहते, लेकिन यह बात स्पष्ट रूप से समझ लेनी चाहिए कि अपनी चिर-पीड़ित जनता के हितों का ध्यान हमें सबसे पहले होना चाहिए और अन्य स्वार्थों को उनके आगे झुक जाना चाहिए। हमें अपनी दकियानूसी भूमि-व्यवस्था को शीघ्र ही बदलना है और हमें एक बड़े और संतुलित पैमाने पर उद्योग-व्यवसायों को उन्नत करना है, जिससे कि देश की संपत्ति बढ़े और लाभ उचित रूप में वितरित हो सके।

उत्पादन आज की सर्वप्रथम आवश्यकता है और उत्पादन में रुकावट डालने या उसे कम करने का प्रत्येक प्रयत्न राष्ट्र को, और विशेष रूप से हमारे बहुसंख्यक श्रमिकों को, हानि पहुंचा रहा है। लेकिन केवल उत्पादन पर्याप्त नहीं, क्योंकि इस का परिणाम यह हो सकता है कि संपत्ति खिंच कर कुछ थोड़े से हाथों में आ जाये। यह उन्नति के मार्ग में बाधक होगा और आज के प्रसंग में अस्थिरता और संघर्ष उत्पन्न करेगा। अतएव समस्या को हल करने के लिए उचित और न्याय वितरण अत्यन्त आवश्यक है।

भारत सरकार के हाथ में इस समय जलप्रवाह के नियंत्रण द्वारा नदियों की घाटियों के विकास की, बांधों और जलागारों और सिंचाई के साधनों के निर्माण की, और पन-बिजली की शक्ति के विकास की कई बड़ी योजनाएं हैं। इनसे खाने की वस्तुओं के उत्पादन में तथा सभी तरह के औद्योगिक विकास में सहायता मिलेगी। ये कार्य सभी योजनाओं के लिए बुनियादी हैं और हम इन्हें जल्दी-से-जल्दी पूरा करना चाहते हैं, जिससे कि जनता को इनका लाभ मिल सके।

इन सब बातों के लिए शांति की स्थिति और सभी संबंधित लोगों का सहयोग और कठिन और निरंतर श्रम आवश्यक है। इसलिए हमें इन महान और करने योग्य कामों में लग जाना चाहिए और आपस में झगड़े-फसाद को भूल जाना चाहिए। झगड़ा करने का समय अलग होता है और मिल-जुलकर उद्योग करने का अलग। काम करने का समय अलग होता है और खेल-कूद का अलग। आज न झगड़ा करने का समय है, न बहुत खेल-कूद का। यदि हम अपने देश और अपनी जनता के साथ घात नहीं करना चाहते तो आज हमें एक दूसरे से सहयोग करना चाहिये और मिल-जुल कर काम करना चाहिए और यथार्थ सद्भावना से काम करना चाहिए।

मैं कुछ शब्द नागरिक तथा सैनिक राजसेवकों से कहना चाहूंगा। पुराने अन्तर और भेद मिट गए हैं और आज हम सभी भारत के स्वतंत्र बेटे और बेटियां हैं और अपने देश की स्वतंत्रता का तथा उसकी सेवा में लगने का हमें गर्व है। हम समान रूप से भारत के प्रति निष्ठा रखते हैं। हमारे सामने जो कठिन समय है उसमें हमारे राज-सेवकों और विशेषज्ञों को बड़े महत्व का भाग लेना है और हम एक साथी की भांति उन्हें भारत की सेवा में लगकर ऐसा करने का बुलावा देते हैं।

जय हिन्द!

सचिवालय भवनों के बाहर स्वाधीनता दिवस मनाता जनसमूह, 15 अगस्त, 1947

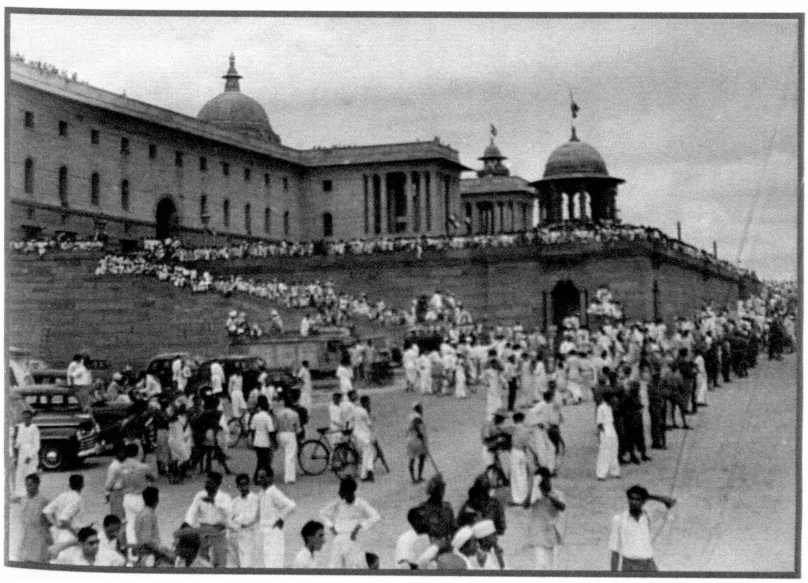

स्वाधीनता दिवस समारोह, 15 अगस्त, 1947

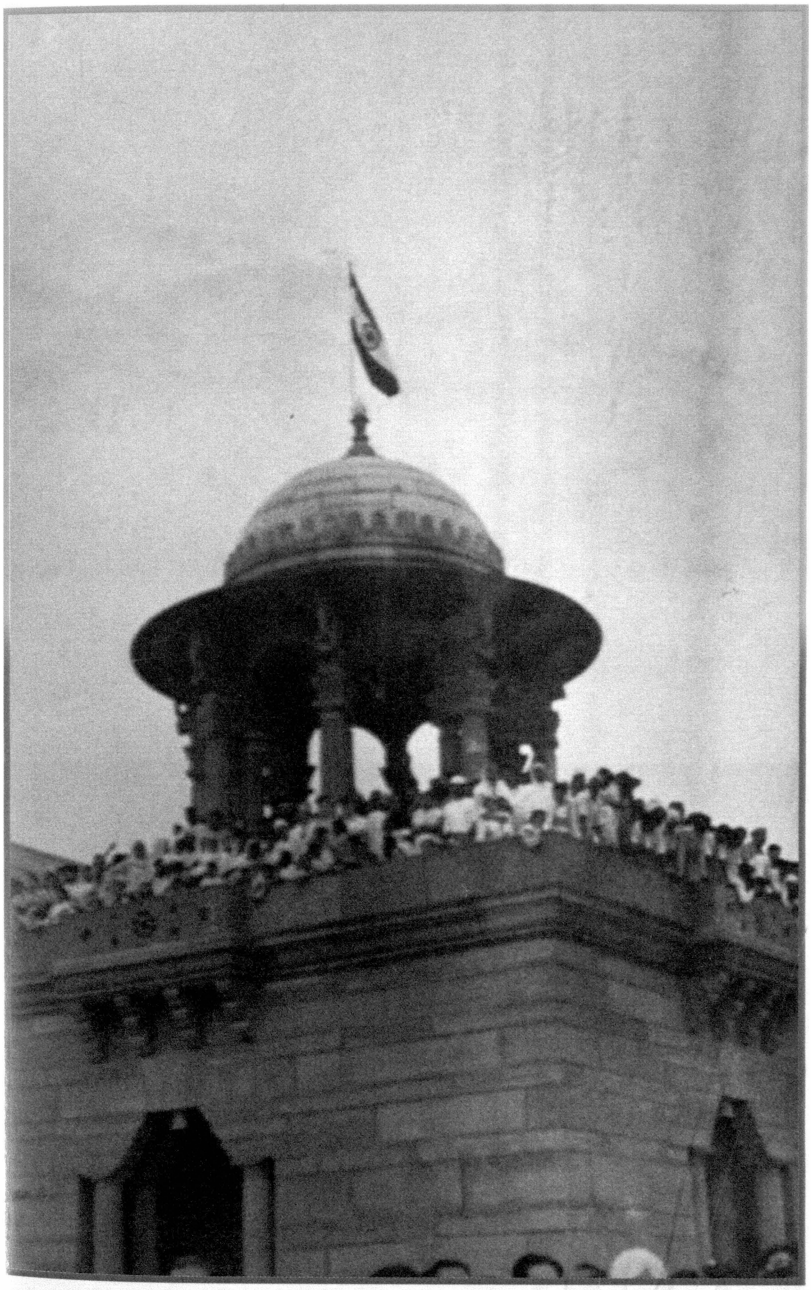

नई दिल्ली में सचिवालय भवन की छत पर खड़े लोग, 15 अगस्त, 1947

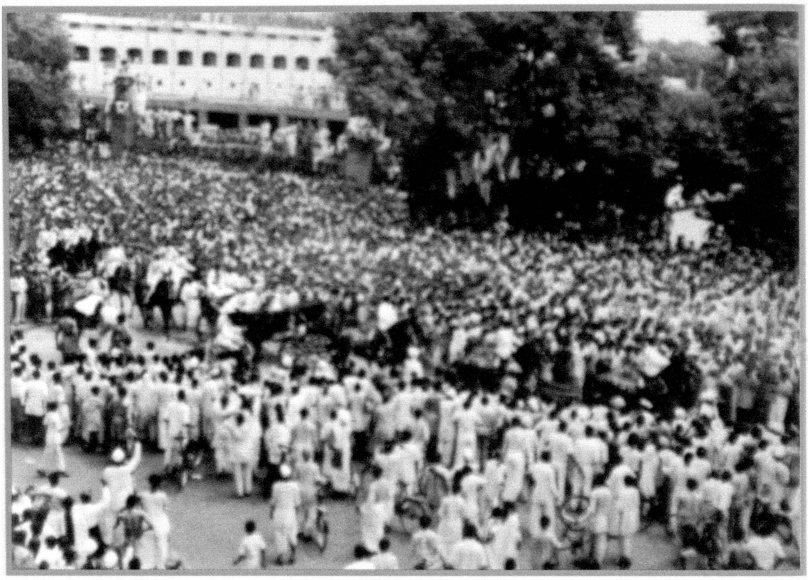

15 अगस्त, 1947 को नई दिल्ली में स्वाधीनता दिवस समारोह

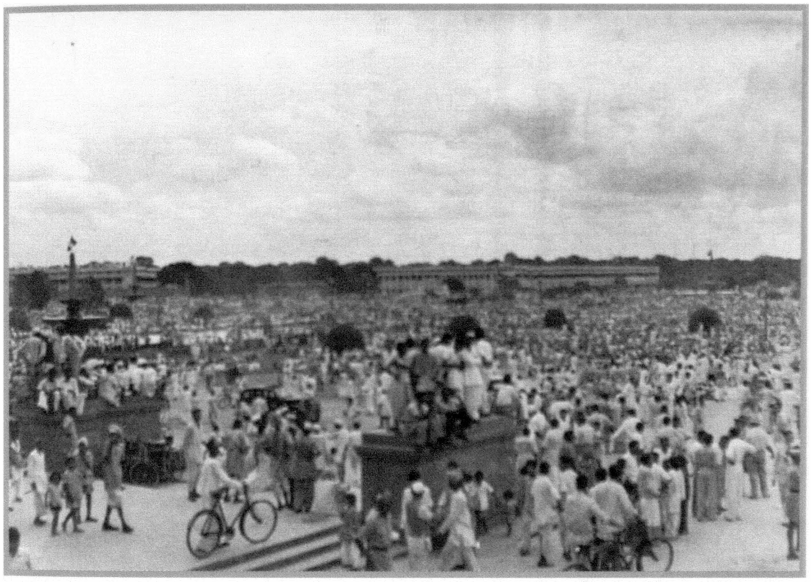

वायसराय हाउस (वर्तमान में राष्ट्रपति भवन) के बाहर स्वाधीनता दिवस समारोह,
15 अगस्त, 1947

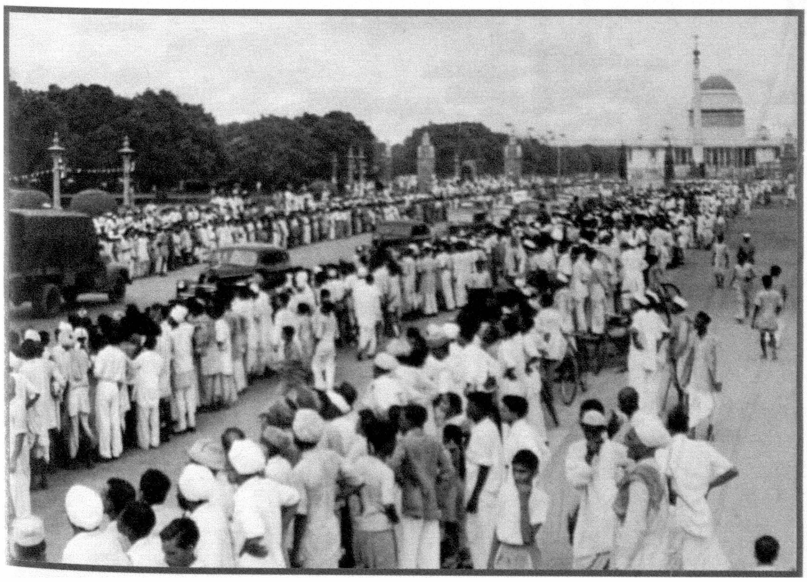

स्वाधीनता दिवस समारोह, 15 अगस्त, 1947

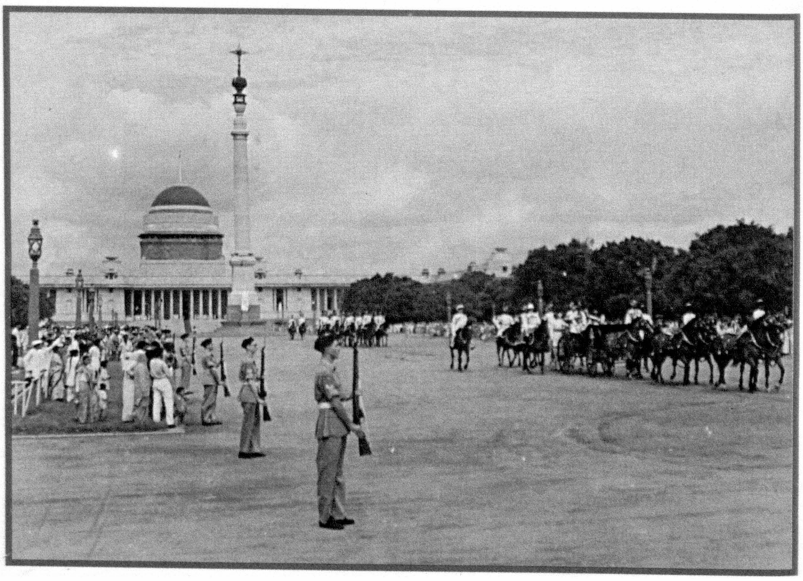

पंडित जवाहरलाल नेहरू तथा लार्ड और लेडी माउंटबेटन 15 अगस्त, 1947 को नई दिल्ली में स्वाधीनता दिवस समारोहों में जनसमुदाय को बधाई देते हुए

डा. राजेन्द्र प्रसाद का भाषण प्रसारण

15 अगस्त 1947

भारत में आज़ादी की भोर*

आज हमने अपने देश के शासन की जिम्मेदारी संभाल ली है और हम उस सर्वशक्तिमान ईश्वर का धन्यवाद करते हैं जिसने यह संभव किया। हम उन सबके प्रति, जिनके बलिदान ने हमें इस महान अवसर के योग्य बनाया और महात्मा गांधी के प्रति जिनके नेतृत्व में हमने यह उपलब्धि हासिल की, अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हैं। हम अब अपने महान राष्ट्र का भाग्य बना या बिगाड़ सकते हैं। अकर्मण्यता, उदासीनता और कायरता हमें नीचे गिरा सकती है और इसलिए अपनी जिम्मेदारियों का पूर्ण निर्वहन करके हमें अपने देश को प्रगति और खुशहाली की ओर ले जाना होगा। अभी हमारे लिए आराम से बैठकर अपनी मेहनत का फल चखने का समय नहीं है; दुनिया हमें देख रही है कि हम अपनी नई आज़ादी को कैसे सफल बनाते हैं और हम कैसे अपने देश को शांति और प्रगति की ओर ले जाते हैं।

भारत में भिन्न-भिन्न धर्मों और मतों के लोग रहते हैं—उनमें से कुछ बहुत ही अल्प संख्या में हैं। चाहे कोई एक व्यक्ति है, कोई छोटा समूह है अथवा कोई बड़ा वर्ग है, सभी के साथ न्याय और निष्पक्षता बरती जानी चाहिए। सबके लिए प्रगति का अधिकार सुनिश्चित किया जाना चाहिए; अल्पसंख्यकों को यह विश्वास दिलाया जाना चाहिए कि उनके विरुद्ध धर्म और मत की भिन्नताओं के कारण कोई भेदभाव नहीं होगा और शेष लोगों की भांति ही उन्हें समान अधिकार, अवसर, शांति और प्रगति प्राप्त होगी।

युद्धोपरांत हमारे समक्ष बहुत सारी समस्याएं हैं। हमारे पास सभी प्रकार की चीजों की कमी है, अर्थात्, रोटी, कपड़ा और मकान की कमी है। हमारे यहां उत्पादन की ही कमी नहीं है बल्कि उत्पादन के साधनों का भी अभाव है। अत:, हमारे सामने समस्या यह है कि इन कमियों को कैसे दूर किया जाए, जीवन की जरूरतों को कैसे पूरा किया जाए और बढ़ती कीमतों को कैसे रोका जाए।

*स्रोत: 18 अगस्त, 1947 के 'दि हिंदू' में यथा प्रकाशित

उदाहरण के लिए खाद्यान्न की कमी को लीजिए। इसमें कोई संदेह नहीं है कि खाद्यान्न की कमी है परन्तु हमें जो कीमत चुकानी पड़ती है वह कमी की तुलना में बहुत अधिक है। घाटा 12.5 प्रतिशत है। हमें 300 से 400 प्रतिशत तक कीमत चुकानी पड़ती है। अन्य दिशाओं में भी यही कहानी है। मेरे विचार से इसके दो कारण हैं: पहला यह कि सभी वस्तुओं की कीमतों में परस्पर निर्भरता है और दूसरा यह कि वस्तुओं की कमी है जबकि क्रय शक्ति खूब है। इसका इलाज सभी दिशाओं में उत्पादन बढ़ाकर किया जा सकता है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि देश के बहुत से भागों में भारी अभाव है और अकाल की स्थिति पैदा हो गई है।

नमक कर को समाप्त करने का अर्थ होना चाहिए था सस्ता नमक परन्तु आज न केवल इसकी कीमतों में भारी वृद्धि हुई है बल्कि कुछ स्थानों पर नमक ही उपलब्ध नहीं है। हमें एक ओर तो उत्पादन बढ़ाना होगा और दूसरी ओर लोगों को अभाव की स्थिति का अनुचित लाभ उठाने से रोकना होगा। हम सबको, चाहे हम कृषक, श्रमिक या व्यापारी हों, अपने देश की मदद करने के लिए मिलकर प्रयास करने चाहिए।

अंग्रेज सरकार के खिलाफ संघर्ष की अवधि समाप्त हो चुकी है और अब शांतिपूर्ण और रचनात्मक प्रयास करने का समय आ गया है। मैंने उत्पादन बढ़ाने की ओर आपका ध्यान दिलाया है जहां खूब प्रयास करने की गुंजाइश है और इस कार्य में सभी सहायता कर सकते हैं। शिक्षाविद् अपने क्षेत्र में उपलब्धि हासिल करें; स्वास्थ्य और रोगों का मुकाबला करने में रुचि रखने वालों को बड़ी समस्याएं हल करनी हैं तथा जो भारत की भौतिक समृद्धि बढ़ाना चाहते हैं उनके लिए भी बड़े अवसर सामने हैं। हम अपनी जरूरत की सभी चीजें खुद पैदा नहीं करते। कुछ बहुत छोटी, पर आवश्यक वस्तुओं का उत्पादन भी यहां नहीं होता है।

मैं पुन: कृषि और भारत में दुग्ध आपूर्ति बढ़ाने की जरूरत की बात करता हूं क्योंकि ये हमारे अस्तित्व के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। यदि हमें खाद्यान्न उत्पादन बढ़ाना है तथा पशु और दुग्ध आपूर्ति की स्थिति बेहतर करनी है तो हमें बहुत सोचना-विचारना और कठोर परिश्रम करना होगा।

बाहरी दुनिया के साथ हमारे संबंध सुदृढ़ होने चाहिएं। हमें अपने देश के कार्यों के लिए दृढ़निश्चयी, अनुशासित और सक्षम युवा शक्ति की जरूरत है।

भारत छोटे गांवों का देश है। हमारे गांवों में पुनर्निर्माण के बड़े कार्य किये जाने हैं, जिसे हमने अब तक नजरअंदाज किया है। हमें न केवल कृषि बल्कि ग्रामीण उद्योगों पर भी अधिक ध्यान देना है। हमारे पास विशाल जनशक्ति उपलब्ध है। इसका सर्वोत्तम उपयोग न करना मूर्खता होगी। हमें अवश्य ही ऐसी योजना बनानी चाहिए ताकि विशाल जनसंख्या भोजन और वस्त्र जैसी आधारभूत आवश्यकताओं से वंचित न रहे। इसे हासिल किया जा सकता है और मुझे विश्वास है कि हम इसमें असफल नहीं होंगे।

सरकार का कार्य मुश्किल है और कभी-कभी तो अरुचिकर भी। इसमें एक तरफ तो जनता की संरक्षा शामिल है तो दूसरी तरफ उन लोगों का दमन जो समाज में अशांति फैलाते हैं या अन्य लोगों की कठिनाइयों का अनुचित लाभ उठाते हैं। संघर्ष से हासिल हुई नव स्वतंत्रता के इस नाजुक समय में हमें अवश्य सभी का सहयोग प्राप्त करना चाहिए और संयम तथा अनुशासन से काम करना चाहिए। यह समय हमारे कठिन परिश्रम का है, प्रयास करने का ऐसा विशाल क्षेत्र हमारे समक्ष है जिसमें सभी अपनी व्यक्तिगत इच्छा के मुताबिक परिश्रम कर सकते हैं। राष्ट्र सभी लोगों की मदद और सहयोग से प्रगति के सोपान पर आगे ही आगे बढ़ सकता है।

लाल किले पर राष्ट्रीय ध्वज फहराने के पश्चात् प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू का भाषण

16 अगस्त, 1947

ध्वज का सम्मान*

हम आज एक ऐतिहासिक मौके पर इस प्राचीन किले पर, अपनी खोई दौलत वापस पाने के लिए इकट्ठा हुए हैं। यह ध्वज किसी व्यक्ति विशेष या कांग्रेस की जीत का प्रतीक नहीं, बल्कि पूरे देश की जीत का प्रतीक है। भारत का यह स्वतंत्र ध्वज केवल भारत की ही नहीं बल्कि समूचे विश्व की आजादी और लोकतंत्र का प्रतीक है। भारत, एशिया और पूरे विश्व को इस महान दिवस पर खुशी मनानी चहिए।

यह किला कितनी ही दुश्वारियों का साक्षी रहा है। आप यह भी जानते हैं कि पिछले 27 सालों में क्या हुआ: हमने इसी झंडे के तले संघर्ष किया और बलिदान दिए। इस अवधि में क्या हुआ, मुझे वह सब आपको बताने की जरूरत नहीं है। बस केवल इतना याद रखना है कि हमने एक संकल्प लिया था कि हम इस ध्वज के सम्मान और गौरव की रक्षा के लिए अपने प्राण भी न्यौछावर कर देंगे और, चाहे कुछ भी हो जाए, इसे झुकने नहीं देंगे। हमने इस संकल्प को पूरा किया है। महात्मा गांधी के अद्‌भुत नेतृत्व और मार्गदर्शन में देश ने आजादी हासिल की है। हमारे संघर्ष का तरीका भी अन्य देशों से अलग था। बीच में हम थोड़ा लड़खड़ाए भी, लेकिन आखिरकार मंजिल पर पहुंच ही गए। आज यदि किसी व्यक्ति को इसका श्रेय दिया जा सकता है, तो वह गांधीजी हैं।

आज के दिन हमें उन लोगों को याद करना है जिन्होंने आजादी की लड़ाई में मुसीबतें सहते-सहते अपने प्राण दे दिए। मैं सबका नाम तो नहीं ले सकता लेकिन सुभाष चंद्र बोस के नाम का जिक्र जरूर करूंगा जिन्होंने देश के बाहर जाकर विदेश में आजाद हिंद फौज बनाई और देश को आजाद कराने के लिए बहादुरी से लड़े। उन्होंने विदेश में भी भारत का झंडा लहराया, पर जब वाकई लालकिले पर उसे फहराने का वक्त आया तो अपना सपना पूरा होते देखने को वे नहीं हैं। आज उनका अपने वतन लौटने का दिन था, पर दुर्भाग्यवश वे इस संसार में नहीं रहे।

---

*स्रोत: सलेक्टेड वर्क्स ऑफ जवाहरलाल नेहरू, द्वितीय सीरीज, खण्ड 4, जवाहरलाल नेहरू स्मारक निधि, तीन मूर्ति भवन, नई दिल्ली, 1986, पृष्ठ 2-3

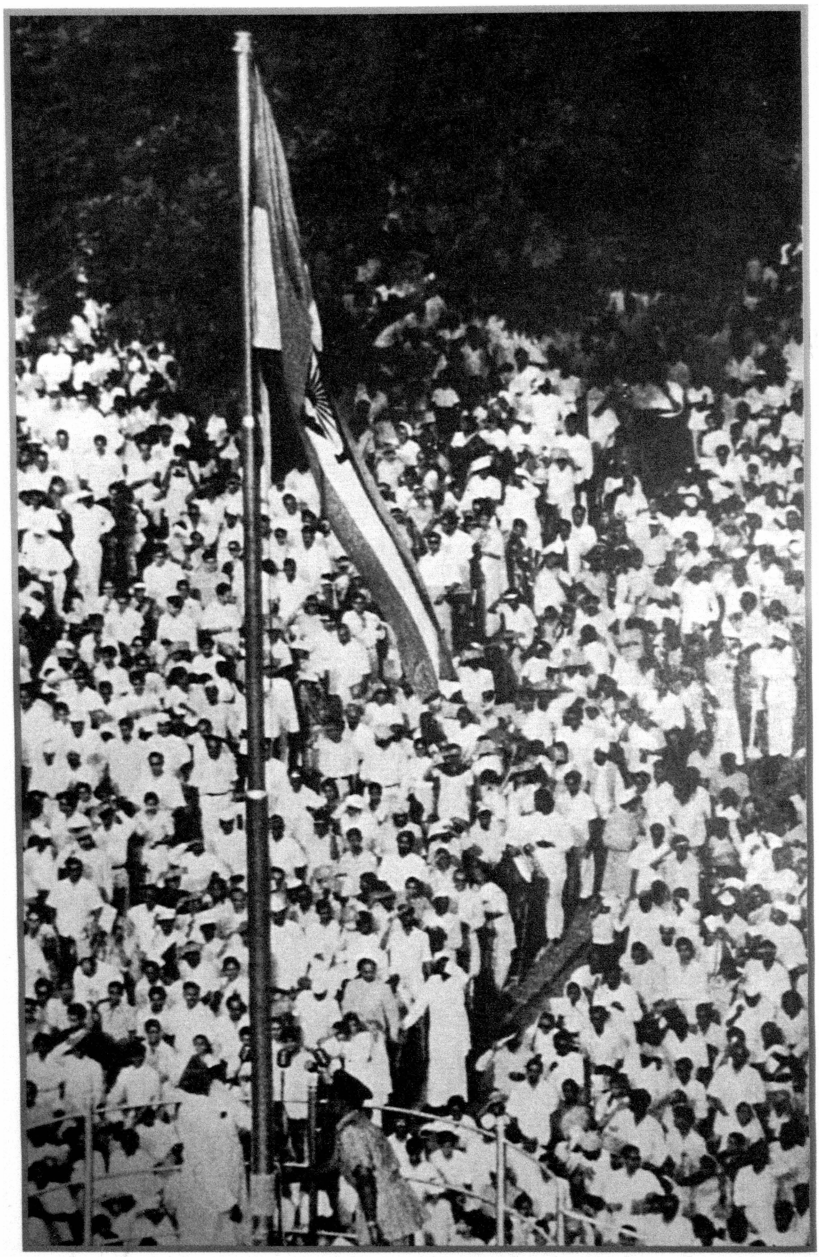

16 अगस्त, 1947 को लाल किले पर राष्ट्रीय ध्वज फहराते पंडित जवाहरलाल नेहरू

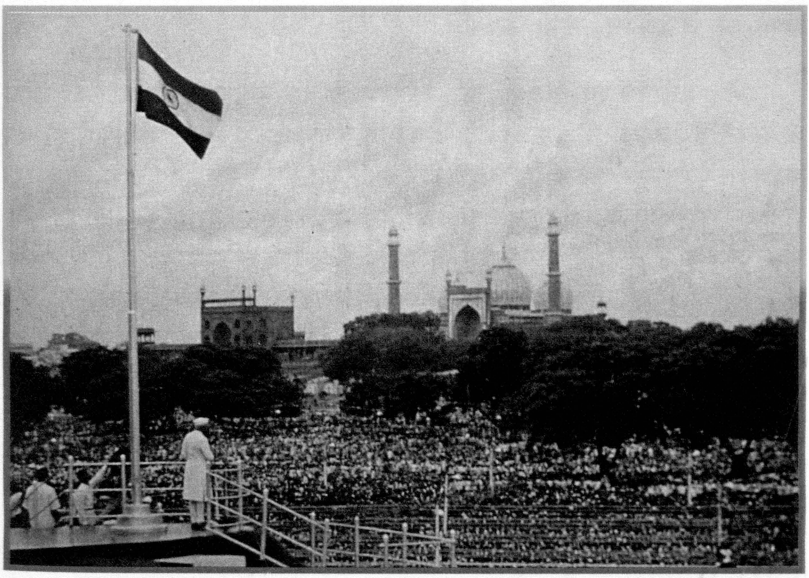

16 अगस्त, 1947 को लाल किले के प्राचीर से राष्ट्र को सम्बोधित करते पंडित जवाहरलाल नेहरू

सरकार का पहला काम होगा: मुल्क में शांति और सौहार्द कायम करना और सांप्रदायिक संघर्ष को कठोरता से दबाना, क्योंकि कोई भी सरकार कानून का राज मानने वाले नागरिकों की दुर्दशा देखकर चुप बैठी नहीं रह सकती; कानून न मानने वालों से निपटने में कोई भेदभाव नहीं बरता जाएगा। यह कहना मुनासिब नहीं होगा कि इस देश में किसी खास मजहब या पंथ की हुकूमत होगी। जो भी इस ध्वज के प्रति आस्था रखते हैं उन्हें नागरिकता का समान अधिकार मिलेगा, चाहे उनकी जाति या मजहब कुछ भी हो। लेकिन जो झगड़ा पसंद और मुश्किल पैदा करने वाले लोग हैं वे हमारे दुश्मन हैं और उनसे सख्ती बरती जाएगी। सरकार यह काम जनता के पूरे सहयोग के बिना नहीं कर पाएगी।

हमारे सामने दूसरी चुनौती है: गरीबी, बीमारी और अशिक्षा को खत्म करना और लोगों का जीवन स्तर ऊंचा उठाना।

हमें भारत को एक मजबूत और शक्तिशाली देश बनाना है। वे ही देश महान हो सकते हैं जिनकी नींव मजबूत है। हमने आजादी पाई है और इसके साथ ही हम पर बड़ी-बड़ी जिम्मेदारियां आ गई हैं जिनका निर्वाह हमें कारगर ढंग से करना होगा। जनता के सहयोग के बिना हम आगे नहीं बढ़ सकते। हम यहां प्रधान मंत्री या कोई मंत्री के रूप में नहीं हैं बल्कि देश के विनम्र सेवक के रूप में हैं। हमारी सरकार का भरसक प्रयास रहेगा कि वह सच्चे तौर पर जनता का प्रतिनिधित्व करे। अब आम जनता ही देश की वास्तविक शासक है तथा उसी पर सरकार की मजबूती या कमजोरी निर्भर करेगी। हम सब जो यहां सरकार में हैं, इसलिए हैं क्योंकि जनता ऐसा चाहती है। हम अपना पद उसी क्षण छोड़ देंगे जिस क्षण जनता चाहेगी।

आप सब इस बात से वाकिफ हैं कि पहले भारत कितना प्रभावशाली रहा है। आज यह उससे भी अधिक प्रभावशाली हो सकता है। हमारा देश या तो मजबूती से खड़ा हो सकता है या फिर गिर सकता है। यदि यह खड़ा होता है तो यह अनेक अन्य देशों से ऊंचा खड़ा होगा। यही समय है कि वह खड़ा होकर अन्य राष्ट्रों की सहायता करे। वस्तुत: हमारी आजादी एशिया ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व के दूसरे राष्ट्रों की आजादी का भी संकेत करती है। अत: आज का दिन सिर्फ हमारे लिए नहीं, बल्कि सारे संसार के लिए आनन्द मनाने का दिन है। आप सब, जो लाखों की संख्या में यहां एकत्रित हुए हैं, यह याद रखें कि दुनिया के लाखों लोगों की निगाहें आप पर टिकी हुई हैं।

मैं यहां अपनी सशस्त्र सेनाओं का भी उल्लेख करना चाहूंगा जो राष्ट्रीय गौरव की स्रोत हैं। अब ये सशस्त्र सेनाएं हमारे देश की हैं न कि किसी विदेशी शासन की। इस राष्ट्र तथा इसके ध्वज के सम्मान की रक्षा करना इसका कर्त्तव्य होगा। हमें इस बात की शपथ लेनी चाहिए कि हम एक हैं और एक रहेंगे तथा आम जनता तक आजादी एवं समृद्धि का लाभ पहुंचाने का काम करते रहेंगे। हमें अपने प्रयास से उस मुकाम तक पहुंचना होगा जहां इस देश में कोई गरीब नहीं होगा, कोई भूखा नहीं रहेगा, कपड़े या शिक्षा से वंचित नहीं होगा। यद्यपि हमने आजादी पाई है, पर यह मील का एक पत्थर मात्र है, यह विश्व शांति तथा समृद्धि के हमारे उच्चतर लक्ष्य तक पहुंचने की यात्रा का प्रथम चरण है। हमें अभी बहुत दूर तक जाना है।

स्वाधीनता दिवस समारोहों की प्रेस कवरेज

The Bombay Chronicle

Dedicated To Mahatma Gandhi—The Father Of Our Nation

Hindustan, Hamara

Vande Mataram!

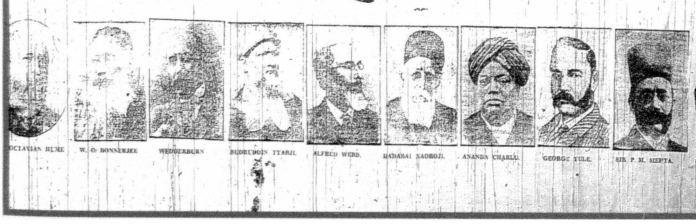

Courtesy: "Freedom's Struggle"

On this historic day, India salutes to the sacred memory of Netaji Subhas Chandra Bose!

Halfway House Of Freedom

By K. F. Nariman

August 15, 1947, will be one of the memorable dates in India's history as a which possibly began with the battle of Plassey if not with the granting of the Charter to the East India company by Queen Elizabeth.

Much water and much blood have passed under the Indian bridges during these centuries, and perhaps it is because of that circumstance, and particularly because of the character of the culminating phase of the British connection with India, that many of us today are not in a position properly to assess this great moment. Yet it is essential that we should see this historic event in proper perspective.

What has actually happened definitely falls short of the ideals which Indians have cherished from time immemorial, and for realising which recent generations served and sacrificed with absolute self-forgetfulness. The goal at which we have aimed has been free and united India. By a strange irony the advent of our freedom has marked the destruction of Indian unity in the historical sense of that very considerable deliverance. Nor, on the other hand, should we seek to magnify its import or its implications. The occasion indeed calls for our taking stock of our national situation with humility and detachment. I can well understand the feelings which have inspired Mahatma Gandhi to declare that Independence Day should be observed with prayerful hush, searching rather than with formal celebrations.

The two things need not be necessarily mutually exclusive. The people of India have been denied any real happiness for so long that it is only right that they should get away from their eternal melancholy for only for a spell of legitimate celebration. And this occasion may well mark the beginning of a more joyous attitude to life on the part of the Indian people. The funereal atmosphere which has hung like a pall on the soul of India must now be dissipated and India should move on to a new plane of mental and physical activity, and ambition.

But this new activity and ambition breeds fanaticism, and fanaticism in its turn spawns bigotry, intolerance, narrowness and sectarianism. India has been glutted with the poisonous outcroppings of this foul brood.

FACES TOWARDS DAWN

It is my profound conviction that these inner packers, long neglected, were more responsible than any other single factor for the partition, dismemberment of India. The political agents, corrupt politicians and misguided zealots my books each played their part in severing Indian unity, but neither individually nor collectively could they have succeeded if it were not for the fact that our whole outlook and organisation was already so conditioned as to be responsive to their machinations.

All Indians (male) now turn their faces to the new dawn. We cannot raise the full strength of the entire national freedom on rotten ground of division. We are honestly difficult going to be called the Union of India. It will not be enough if the Union of India is merely a political device to bring under one head the various units that happen to be within the boundaries of India. We must have a genuine sense of unity, a unity which will be a long time before it becomes a living reality. Slowly enough it will be, I hope

★ कार्य पत्रिये ★
आजाद हिन्दुस्तान की राजधानी से प्रकाशित होने वाला—हिन्दी का एकमात्र प्रगतिशील मासिक
नया कदम
मूल्य वार्षिक ५) एक प्रति ॥)
लिखिये—"नया कदम" कार्यालय
बल्ली मारान, दिल्ली

प्रभात-संस्करण

TELEPHONE: 40015
ELEGRAMS: "TIMES"

हिन्दुस्तान
Hindustan

Regd. No. L. 3794.

THE HINDI DAILY WITH THE LARGEST AND WIDEST CIRCULATION OF ALL HINDI DAILIES IN INDIA

स्वतंत्र भारत की सर्वश्रेष्ठ
नील कमल
गोरेजंक महानिधि, कुलवंती सिंह सेन की सती आत्मकथा तथा दासी पुराण के लेखक अंकित
वार्षिक ६) प्रति कापी ॥)
नील कमल कार्यालय
२२४ एक्सटेंशन रोड, नईदिल्ली।
(परेड-का मैदान)

वर्ष १४ अङ्क २५४ ★ नई दिल्ली, शुक्रवार, श्रावण सौर ३०, १८०५ | NEW DELHI, FRIDAY, AUGUST 15, 1947 ★ मूल्य दो आना

शताब्दियों की दासता के बाद भारत में स्वतंत्रता का मंगल प्रभात

बापू की चिर तपस्या सफल

भारतीय विधान परिषद द्वारा शासन सत्ता ग्रहण

रात के १२ बजे शंखध्वनि के साथ स्वतन्त्रता की घोषणा

जय हिन्द! आज भारत स्वतन्त्र है। दो शताब्दियों की दासता के बाद आज देश के प्राण व विश्व-वन्द्य महात्मा गांधी की चिर तपस्या फलीभूत हुई है और इस स्वतन्त्र वायुमण्डल में सांस ले रहे हैं। इस ऐतिहासिक अवसर पर देश के कोने-कोने में स्वतन्त्रता-समारोह की धूम है और दिवाली मनाई जा रही है।

नई दिल्ली, १४ अगस्त

आज आधी रात के समय विधान परिषद ने जिसमें हिन्दुस्तान के लोगों के चुने हुए प्रतिनिधि शामिल हैं, सार्वभौम सत्ता अपने हाथों में ली और उसके सदस्यों ने गम्भीरता पूर्वक हिन्दुस्तान और उसके लोगों की सेवा की शपथ ली।

७८ मिनिट तक परिषद की बैठक होने के बाद, जिस में उसने शासन सत्ता अपने हाथ में ली और लार्ड माउन्टबेटन को गवर्नर जनरल के रूप में नियुक्ति का समर्थन किया, डा० राजेन्द्रप्रसाद और पं० जवाहर-लाल नेहरू लार्ड माउन्टबेटन को परिषद के निर्णय की सूचना देने गवर्नरी भवन में गये।

इसके बाद श्रीमती हंसा मेहता का हिन्दुस्तान के नारी समाज की ओर से परिषद को भेंट किया हुआ राष्ट्रीय झण्डा फहराया गया। भवन के बाहर खड़े हुए हजारों लोगों ने

हमारा राष्ट्र गान

वन्देमातरम् !
सुजलाम् सुफलाम् मलयजशीतलाम्,
शस्य श्यामलाम्, मातरम् !
वन्देमातरम् !
शुभ्र ज्योत्सनाम्, पुलकित यामिनीम्,
फुल्ल कुसुमित द्रुमदल शोभिनीम् !
सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्,
सुखदाम् वरदाम् मातरम् !
वन्देमातरम् !

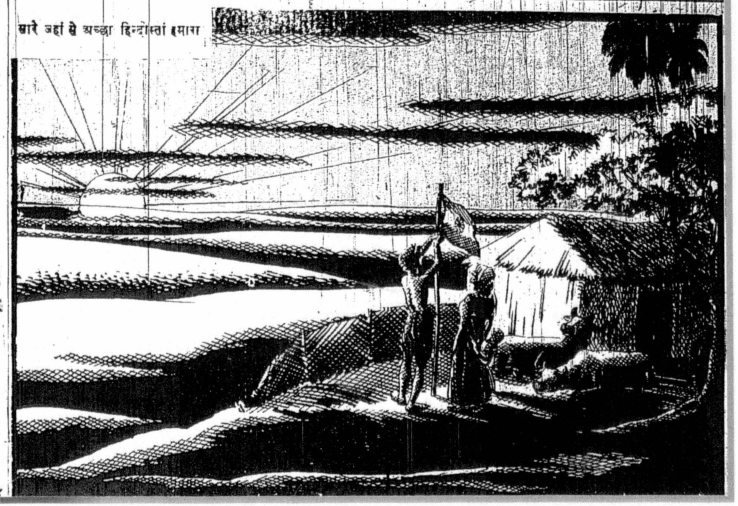

hant For
Indian Freedom

India to-day
From 1942, to
Himalayan dreams
and majestic
love absent an idea,
that never occurred to me
we stories of years ago,
and special attention to some
freedom, a thrill voice
Parliament that it should be the
first strong from
they body, but with a great soul,
started as a gentle wave
finally made the entire Indian
Ocean roll.
Just as one wave after another is
The ocean
is made on national aspirations
awakened,
about with the spirit of freedom
the forces of revolution gathered
speed,
unfurled, and incredibly triumphed
in the
Eastern Exit and West and on
common ground.
that is mistake.
but Independence can be,
almost a War!
story will tell you!
has never happened before!
brave, forward
on in the chariot of Time!
life approaching the mountain
peaks!
double your efforts to climb!
satisfaction will you arrive at your
ideal!
high beautiful, noble and unselfish
the

The Nation of Indian Freedom
is fervently dedicated, on
glorious day of the fifteenth of
ust, 1947, as a message of good
from China.

CHIA-LUEN LO,
Ambassador of The Republic of
China.

K. Natarajan.

dia is divided but only to be re
in a little closer than ever. The
tal mission of the BOMBAY
RONICLE is actively to promote
present. Every moment since the
pendence Act was enacted, we
e our artificial is the division
ve impossible it would be to
the two parts distinct.

FREEDOM CALLS
FOR
CONSECRATED
SERVICE

On this auspicious day we
pledge ourselves anew to the
publication of increasingly
better books in the service
of the Nation.

Hind Kitabs Limited
BOMBAY

GREETINGS FROM FAR AND NEAR

Inspiring Messages Of Goodwill On Free India's Birthday

The People Are Immortal

By G. M. Syed

I AM a Sindhi of Pakistan and I am proud that with great happiness in the fulfilment of the high hopes that it had aroused in our downtrodden masses.

There are some people who have sent to the glorious of India a sure sign of outpacing a permanent state of mutual war-fare and growth of mutual fascism. In the two neighbouring Dominions. I can only hope that the future that they will falsify these gloomy forecasts.

It is the masses who have been behind the Congress and the League in achieving their respective goals. It is unfortunate that the true bargain of the masters can be for ever frustrated and the early reclination of their hopes and dreams indefinitely postponed, just because they exists in our midst an alien conspiracy of the upper classes to keep the masses divided and permanently engaged in mutual hatred and fratricidal blood-shed.

RISE TO THE OCCASION

I feel confident that the genius of our great leaders will be bound to rise to the occasion and assert itself in a firm resolve to build the future on the foundations of true freedom and justice. Instead of mourning over the tragedies of the past, it should be the sacred duty of all lovers of Freedom, both in Pakistan and Hindustan, to see that our future is moulded on the basis of a healthy rivalry between the two States in the service of humanity, and equality to its citizens irrespective of caste, a comradely hand of hope and help to the down-trodden, exploited people all over the world.

Whatever may be our private feelings and sentiments, let us not forget that although India has been partitioned, the common people shall live for ever. The people are immortal, in every land, its history has shown from time to time. August 15th only marks the day of a fresh resolve on the part of our common people to rid themselves of their indigenous enemies, even as they have subdued the foreign enemy.

E. P. Galacher,
M.P.

"I welcome the new opportunity provided by the transfer of power to Indian people. A great step has been won, but it is only a stage on the way to real freedom and independence. Hindus, Muslims, Untouchables, Sikhs and others must now exercise their common brotherhood, heal the wounds of the past and bridge all sectarian divisions and, as a united people, take

Cole's Message

"I am delighted to have the opportunity of sending a message of goodwill to the people of India on their achieving independence, which I, like all Englishmen have always ardently desired to claim for them as their right.

The people of India and they only have long to face many very great problems to face, mainly the terrible problem of settling the ordinary man and woman's peaceful and orderly to which they have been accustomed.

May they find the right leaders and the right balance between agricultural and industrial development, and between claims of economic advancement and of other things to good life, such as health, service, education, political training and of self-government, toleration based on good fellowship and mutual respect.

I know Pt. Nehru to be a man with qualities needed not merely for their country, but also for world leadership with good life for the mass of people as the supreme end in view.

I hope—I must express how much I hope — that despite the past, the advance of the Indian people will be made in friendly and equal association with the British people which have so many problems of their very own to solve, rather than which confront India.

There is among the British scientists a great fund of goodwill to-wards the Indian people and I hope that Indians who have much to forgive will not be reluctant to let the past throw their goodwill away. I don't say they will. The omens are a good deal better than before. Let us two people, across a world grown small with mutual respect with each other the best of the future and as much goodsense as it is given to man to show in the management of our common affairs."

C. D. H. COLE.

Dr. Syed Mahmud,
Minister, Bihar

"It is in the duties of a thing that the BOMBAY CHRONICLE which has all along valiantly and fearlessly espoused the cause of the freedom of India should bring out a special supplement to celebrate this momentous occasion, when the people of India will be vested with the power of governing themselves, and of shaping their own destiny. The 15th of August will mark the turning point in the history of India, as it heralds the dawn of India's freedom."

Sir Chunilal Bhaichand Mehta

"August 15th will be a Red Letter Day in the history of India—that is

Eamon De Valera,
President Of The Irish Free State

"Ireland wishes India god-speed and hopes that in freedom the Indian people will find unity, prosperity and happiness for themselves and an opportunity to play a significant part in promoting the well-being of the whole human race."

Azikiwe,
President, National Council Of Nigeria Cmerons.

"On behalf of 30 million people of Nigeria, whose cause is now being espoused in London by a political delegation of seven, I offer congratulations to the people of India on this historic occasion when they have abrogated to themselves the right to an independent national existence.

"The experience of India will be an inspiration to us and a lamp to guide our feet in the path of Freedom."

M. Kratchvil,
Ambassador Of Czechoslovakia, London

"As the representative of a small nation which has always been progressively minded, I am glad to hear of progress made by other nations.

"I wish your people every possible success in future."

EDITH MOORE,

"We salute the progressive leaders of India whose constructive genius are clear. We salute them as architects of new India, which is going to be called the brightest jewel in the British crown—a jewel that is the greatest of treasures—the crown to best of man's endeavours."

Janaganamana

Janaganadhanaa Adhinayaka Jayahe!
Bharata-bhagya-vidhata!
Punjaba Sindha Gujarata Maratha
Dravida Utkala Vanga
Vindhya Himachala Jamuna Ganga
Uchchala Jalathitaranga
Tava shubha name jage
Tava shubha ashisa mage,
Vahe tava jaya pathai
Janaganna Mangaladayaka Jayahe!
Bharata-bhagya-vidhata!
Jayahe! Jayahe! Jayahe!

'B. G. Kher,
Premier Bombay

"Sir Pherozeshah Mehta who founded the "Bombay Chronicle" was one of the pioneers of the nation's struggle for freedom. After years of struggle India has now emerged into the light of freedom.

"On this day of rejoicing we should do well to ponder deeply on how best we can make use of our liberty so that our country may become strong and prosperous in order to play a worthy part in the affairs of the world. By presenting facts fairly and truthfully and guiding public opinion in constructive and fruitful channels the Press can redeem the public to understand and exercise their new responsibilities in a fitting manner. I wish the "Bombay Chronicle" and its readers a bright happy future."

Dr. M. D. Gilder,
Minister, Bombay

"India has gained its independence by means which are unique in the history of the world. It is now for us to see that the independence so hardly won and preserved unblemished for all time and is used for the betterment of the condition of the common man.

"The task before us in Himalayan and cannot be accomplished unless each one of us—unite and pull together. Now that we have the power to do good, let us rejoice; let us forget our temporary differences and let us all co-operate in creating a new economic order in which equality of opportunity shall prevail and every man shall be assured of the necessities of life. This shall India be able to hold up her head in the County of Nations and point the way to others."

L. M. Patil,
Minister, Bombay

"It is in the fitness of things that your paper is bringing out a special supplement to celebrate the memorable event of the ushering of the complete Indian Independence. It is after constant toil and hitherto unparalleled hardships of thousands of our countrymen that India has achieved her independence."

K. M. Munshi

"Independence has come sooner than anybody dreamt of. It is now for us to be ready to be worthy of it, to be strong enough to keep it, and to use it with the best advantage to humanity and the cause of freedom. It is necessary that we should shed the old outlook and develop the discipline and strength of mind by which alone strong and great nations are made."

Lord Halifax,
Ex-Viceroy, India

"The new governments in India

Pressing Problems

(By ALLADI KRISHNASWAMI)

The 15th of August 1947 is a great day in the History of India, being the day of emancipation of an ancient people from foreign domination for over a century and a half.

It marks the crowning achievement of the long struggle for freedom fought under the banner of successive political leaders, the greatest of them all being of course Mahatma Gandhi, under whose leadership for the last 27 years the country has fought in a way to compel freedom with the weapon of non-violence.

The Indian Independence Act would redounds to the credit of Great Britain and its present leadership. With-out it, Britain has registered the "Quit India" demand of a nation claiming freedom as its birthright. This moment of India's emancipation may be to some extent tempered by the thought of some pockets of India going out of the Indian Union.

Hope Of Re-union

If only India can muster her unlimited human resources and if prince peasant and labourer can harness their energies to the task of strengthening the bonds of union in India, there is every hope that ere long the separated parts of India will come into closer relationship with the rest of India.

But it is not the end of our problems. Millions face privation, hunger and disease and to conquer these petty quarrels will need all the patriotism and sectional self-interest laid aside. India's keep its political freedom by harnessing the enthusiasm and energy of the people to the requirements of an Independent Nation.

Given the goodwill and co-operation of the people and the press, we are sure the ability to surmount these difficulties.

Chulan Husain Hidayatullah,
Governor, Sind.

"The complete transfer of power to the people of India is undoubtedly the most unique event in the history of our country.

"The Dominion Constitution, given the new government and the Legislature ample power to undertake measures of far-reaching character. Even the transition from the Dominion Status to the Republican constitution and the republican constitution

To India's Flag

Proud ensign of a vast Dominion,
Unfurled, unchallenged, high, today
you stand!
Waving from housetops in the fateful land,
Proclaiming Freedom's goal through suffering won!
For you in hills have rotted jazar-eon
And daughters, patriots breath, in ruthless hand.
Hazel blest for you, and, rallying in a band,
Have braved the bludgeon, bayonet and the dab.
Well may you sport your saffron, white and green,
For the fetters of a foreign rule no more.
Shall hold the people down. Sunrise has come!
A day dawns, let him behold the scene,
With echo answering from land and shore,
The rousing strains of "Vande Mataram."

J. D.
15th August 1947.

Dr. Rajendra Prasad's Message

Thanks to Mahatma Gandhi and the great national leaders who preceded him, India has taken its share in the historic pilgrimage of human progress. The ruthless pursuit of foreign domination which we celebrate today is the nation's victory through its own efforts.

But it is not the end of our problems. Millions face privation, hunger and disease and to conquer these petty quarrels will need all the patriotism and sectional self-interest laid aside. India's keep its political freedom by harnessing the enthusiasm and energy of the people to the requirements of an Independent Nation.

Given the goodwill and co-operation of the people and the press, we are sure the ability to surmount these difficulties.

Chulan Husain Hidayatullah,
Governor, Sind.

"The complete transfer of power to the people of India is undoubtedly the most unique event in the history of our country.

"The Dominion Constitution, given the new government and the Legislature ample power to undertake measures of far-reaching character. Even the transition from the Dominion Status to the Republican constitution and the republican constitution

Let us Salute
THE FLAG OF
FREE INDIA

The Hindustan Times

LARGEST CIRCULATION IN NORTHERN, NORTH-WESTERN AND CENTRAL INDIA

NEW DELHI: FRIDAY, AUGUST 15, 1947.

QUALITY PUBLICITY SERVICE

DESIGNERS & PRINTERS

INDIA INDEPENDENT : BRITISH RULE ENDS

CONSTITUENT ASSEMBLY TAKES OVER

MOUNTBATTEN'S APPOINTMENT AS GOVERNOR-GENERAL ENDORSED

COLOURFUL CEREMONY MARKS BIRTH OF NATION

(By Our Special Representative)

NEW DELHI, Thursday.—At midnight tonight the Constituent Assembly, consisting of the chosen representatives of the Indian people, assumed sovereign power and the members solemnly took the pledge to serve India and her people. "We end today a period of ill fortune and India discovers herself again," said Pandit Nehru in calling upon the members to take the new pledge.

Earlier the President of the Constituent Assembly, Dr Rajendra Prasad, said: "To all we give the assurance that it will be our endeavour to end poverty and squalor and its companions, hunger and disease, to abolish distinctions and exploitation and to ensure decent conditions of living."

After the Assembly had sat for 75 minutes, during which it assumed powers of governance and endorsed the appointment of Lord Mountbatten as Governor-General, Dr Rajendra Prasad and Pt. Nehru proceeded to the Government House to inform Lord Mountbatten of the Assembly's decisions. Later, the National Flag presented to the Assembly by Mrs Hansa Mehta on behalf of the women of India was hoisted amidst cheers of thousands who had gathered outside the Council House.

The climax was reached when at the last stroke of midnight there was blowing of conches and spontaneously the cry of "Mahatma Gandhi ki Jai" went up. That these were the first words uttered by the representatives of Indian people on attaining freedom was an expression of the people's gratitude to the architect of the nation to whom both Pandit Nehru and Dr Rajendra Prasad paid glowing tributes in their speeches.

The birth of a free India was witnessed by diplomatic representatives of the nations

INDIA'S BIG THREE—Earl Mountbatten, Governor-General of India, Pandit Nehru, Prime Minister, and Dr Rajendra Prasad, President of the Constituent Assembly—at the Government House where the two Indian leaders went after the midnight session of the Constituent Assembly to inform Earl Mountbatten that the Constituent Assembly had assumed sovereign powers and had endorsed his appointment as Governor-General

Governors Sworn In As Free India Is Born

The new Governors of Indian provinces were sworn in at midnight on Thursday.

In the midst of rejoicings from Hindus, Jains, Hindu, Christians, Muslim and Sikh Holy Scriptures, Mrs Sarojini Naidu was installed at Lucknow as the first Indian Governor of the U.P. in a Free India.

The oath of allegiance and office was also administered by the Chief Justice of Allahabad High Court in this ill-lit, but room of Government House which was fully packed. After the seven-gun ceremony Mrs Sarojini Naidu administered oath of office and secrecy to the Premier, Pandit Govind Ballabh Pant, and three other Ministers, Sri Satyanarayan, Mr Hafiz Mohammad Ibrahim and Sardar Bishen Singh.

Mr Jaisukhlal Hathi from Surat is sworn in as Governor of Bihar at Government House in Patna at midnight tonight. The ceremony took in

THE PLEDGE

After the last stroke of midnight all members of the Constituent Assembly took the pledge of dedication to the service of the nation, the people and the cause of humanity.

The following is the pledge:

"At this solemn moment when the people of India, through suffering and sacrifice, have secured freedom, I, ... a member of the Constituent Assembly of India, do dedicate myself in all humility to the service of India and her people in the end that this ancient land attain her right-

NEW STAR RISES IN THE EAST

LEADERS TELL NATION OF TASKS AHEAD

The appointed day has come—the day appointed by destiny—and India stands forth again after long slumber and struggle, awake, vital, free and independent, says Pandit Jawaharlal Nehru in a message to the nation on Independence Day.

"The past clings on to us still in some measure and we have to do much before we redeem the pledges we have so often taken. Yet the turning point is past, history begins anew for us, the history which we shall live and act and others will write about.

"It is a fateful moment for us in India, for all Asia and for the world. A new star rises, the star of freedom in the East, a new hope comes into being, a vision long cherished materialises. May the star never set and that hope never be betrayed!

"We rejoice in that freedom, even though clouds surround us, and many of our people are narrow-minded and difficult problems encompass us. But freedom brings responsibility and burdens and we have to face them in the spirit of a free and disciplined people.

"On this day our first thoughts go to the architect of this free nation, the Father of our nation who, embodying the old spirit of India, held aloft the torch of freedom and lighted up the darkness that surrounded us. We have often been unworthy followers of his and have strayed from his message, but not only we but succeeding generations will remember this message and bear the imprint in their hearts of this great man of India, magnificent in his faith and strength and courage and humanity. We shall never allow that torch of freedom to be blown out, however high the wind or stormy the tempest.

"Our next thoughts must be of the unknown volunteers, the soldiers of freedom who, without praise or reward, have served India even unto death.

"We think also of our brothers and sisters who have been far out from us by political boundaries and who unhappily cannot share in full in the freedom that has come. They are of us and will remain of us whatever may happen, and we shall be sharers in their good and ill for our sake.

Attlee's Greetings To Nehru

My colleagues in the United Kingdom Government join with me in sending to this historic day greetings and good wishes.

[illegible] to the [illegible] point in the [illegible] people of India. It is our earnest wish that India may [illegible] to [illegible] in [illegible] and [illegible] and I, for my part, and we [illegible] contribute to the [illegible] peace and prosperity of the world.

Atlee

Prime Minister.

In a message to Pandit Nehru, Pandit Nehru's reply to the Prime Minister of the United Kingdom said: "On behalf of my colleagues in the Government of India and myself I wish to express our grateful thanks for your message of greeting on this historic day when India emerges into freedom. That freedom means much to India but it also means much to Asia and the world. We hope to utilize that freedom for the advancement of the people as well as for the further peace of the world and prosperity of the world.

THOSE WHO HAVE LED THE NATION TO INDEPENDENCE

आज

प्रधान सम्पादक—बाबूराव विष्णु पराड़कर

तारका पता—आज बनारस
टेलीफोन नं० ५०

वर्ष २७, पूर्ण संख्या ७९९८ | काशी, रविवार सौर १ भाद्रपद २००४, शु० श्रावण शुक्ल १ संवत २००४, तारीख १७ अगस्त १९४७ •• | मूल्य डेढ़ आना

आज
एक प्रतिकी दर
सालिक ... ३)
छमाही ... १॥)
तिमाही ... ७)
एक प्रतिका मूल्य डेढ़ आना
सोमवार विशेषांक दो आना
आज : खलीफ कबीर रोड : बनारस

गोविन्द सुधा
मलेरिया और हर किसके
ज्वरकी परीक्षित और
सुपरिचित महौषधि
हर जगह मिलती है
गोविन्द सुधा कम्पनी कलकत्ता

दिल्लीके लालकिलेपर तिरंगा झंडा—नेताजीकी इच्छा पूर्ण

शकी भूखी-नंगी जनताकी सेवा सबसे पहला कर्तव्य

रतीय स्वतन्त्रताके बाद समस्याओंमें वृद्धि
प्रधानमन्त्रीकी हैसियतसे नेहरूजीका सर्वप्रथम भाषण

नयी दिल्ली, १६ अगस्त। आज प्रातःकाल ८॥ बजे तन्त्र भारतके प्रथम प्रधानमन्त्री पण्डित जवाहरलाल रूने दिल्लीके लालकिलेपर राष्ट्रीय पताका फहरायी। २॥ लाख ऊपर दर्शक उपस्थित थे।

नयी दिल्ली, १५ अगस्त। भारतके प्रधान मन्त्रीकी हैसियतसे के नाम सर्वप्रथम सन्देश देते हुए पण्डित जवाहरलाल नेहरूने कहा के इतिहासमें जिस पराधीनताके विदेशी पाशमें हम जकड़े हुए थे वह ण्ट-शब्द होकर गिर गया है। आज कोई बन्धन नहीं है, हम ते हैं, दिलीके लालमें गर्वसे हम अपना सिर ऊंचा उठा सकते हैं।

विश्व कल्याणकी चेष्टा

स्वतन्त्र भारतका लक्ष्य
स्वाधीनताकी प्राप्तिपर पंतजी

कानपुर, १५ अगस्त। आज रात एक लाख जनसमुदायकी विराट सार्वजनिक सभामें भाषण करते हुए प्रधानमंत्री पण्डित गोविन्दवल्लभ पन्तने कहा—जिस प्रकार गौतमबुद्ध, अशोक तथा हर्षवर्द्धन आदिके समय हमारा देश संसारके दूसरे देशोंकी आर्थिक, सांस्कृतिक तथा अध्यात्मिक उन्नतिके लिए [illegible]

भारतकी नयी सरकार

पाउण्टबाटन द्वारा शपथ ग्रहण

नयी दिल्ली, १५ अगस्त। आज सवेरे प्रमुख देशी नरेशों, राजनीतिक मुखी और फौजी अफसरोंके समक्ष गवर्नमेण्ट हाउसके दरबार हालमें लार्ड माउण्टबाटन, पण्डित जवाहरलाल नेहरू तथा श्री जगजीवनरामके अतिरिक्त मन्त्रिमण्डलके अन्य सभी सदस्योंने शपथ ग्रहण की। ८-२० बजे सवेरे मन्त्रिमण्डलके सदस्य दरबार हाल आये और लार्ड माउण्टबाटन अपनी पत्नीके साथ ८॥ बजे आये। बीचमें सिंहासन रखा था और [illegible]

पाकिस्तान मंत्रिमण्डल

मन्त्रियोंमें पदोंका विभाजन

कराची, १५ अगस्त। पाकिस्तानके गवर्नर जेनरलने प्रथम पाकिस्तानी मन्त्रिमण्डलके मन्त्रियोंमें निम्नलिखित प्रकारसे विभागोंका वितरण किया है।

श्री लियाकतअलीखां [प्रधानमंत्री]
परराष्ट्र ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल सफैर और रक्षा
श्री आई० आई० चुन्द्रीगर—व्यापार, उद्योग और तामीरात, श्री गुलाममुहम्मद
अर्थ सरदार अब्दुर्रब निश्तर—यातायात
श्री गजनफरअलीखां—स्वास्थ्य, कृषि और स्वास्थ्य, श्री योगेन्द्रनाथमण्डल—कानून और श्रम, श्री फजलुर्रहमान—स्वराष्ट्र

विश्वद्वारास्वतन्त्रभारतकास्वागत

देश-विदेशमें राष्ट्रध्वजका उत्तोलन
भारतीय जनतामें अपूर्व उत्साह-सारे देशमें समारोह

नयी दिल्ली, १५ अगस्त। आज देश विदेशमें विद्यमान भारतीयोंने अपूर्व उत्साहके साथ भारतकी स्वतन्त्रताका अभिनंदन किया। विभिन्न देशोंमें स्थित भारतीय दूतावासोंपर भारतका राष्ट्रध्वज फहराया गया। इस समारोहके अवसरपर भारतीय संघके प्रधानमंत्री नेहरूको संदेश भेजनेवालोंमें, फ्रांस, चीन, रूस, अमेरिका, बर्मा, स्याम, वियतनाम प्रजातंत्र, आस्ट्रेलिया आदि विश्वके प्रायः सभी छोटे बड़े राष्ट्रोंने भारतकी स्वाधीनताका अभिनंदन किया है तथा भविष्यमें सहयोग और मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाये रखनेका आश्वासन दिया है। विश्वके विभिन्न भागोंमें विद्यमान भारतीयोंने इस उत्सवको समारोहके साथ मनाया।

प्रभात-संस्करण

TELEPHONE: 41093
TELEGRAMS: "TIMES"

हिन्दुस्तान
Hindustan

Regd. No. L. 3794.

THE HINDI DAILY WITH THE LARGEST AND WIDEST CIRCULATION OF ALL HINDI DAILIES IN INDIA

प्रमुख राष्ट्रीय मासि
कमल
विशेषांक प्रकाशित हो गया। रेलवे स्टे तथा अपने एजेंट से करीदें, या रु) भे कर मंगायें। नेताओं के चित्र, कहानियां राष्ट्रीय ध्वजा, बालकों, महिलाओं के लेख मूल्य विशेषांक १) साधारण ॥ वार्षिक चंदा ५) मैनेजर पर विशेषांक मुफ्त
कमल वकीलपुरा, दिल्ली

वर्ष १४ अङ्क २२६ *

नई दिल्ली, रविवार, भाद्रपद सौर ३२, २००४ NEW DELHI, SUNDAY AUGUST 17, 1947 * मूल्य एक आना

स्वाधीनता-प्राप्ति के उपलक्ष में देशव्यापी समारोह

करोड़ों नर-नारी नई आशा व उमंग से उल्लसित

दिल्ली में स्वाधीनता-समारोह के अभूतपूर्व दृश्य

लाल किले पर राष्ट्रीय झण्डा फहराया गया: लाखों नर-नारियों द्वारा पं० जवाहरलाल नेहरू तथा लार्ड माउंटबैटन का राजसी स्वागत

भारतीय विधान-परिषद द्वारा शासन-सत्ता ग्रहण करने के बाद ही सारे देश में उत्साह व उल्लास छा गया। १५ अगस्त को भारत के समस्त नगरों, कस्बों तथा गांवों में स्वाधीनता-दिवस बड़े समारोह व शान से मनाया गया।

भारत से बाहर भी १५ अगस्त का दिन बड़ी खुशी व उमंग से मनाया गया। मास्को और वाशिंगटन के भारतीय दूतावासों पर तिरंगे झण्डे फहराये गये और श्रीमती पंडित तथा श्री आसफअली ने इस अवसर पर भाषण दिये।

१५ तथा १६ अगस्त को भारत की राजधानी में स्वतंत्रता-समारोह की जो ऐतिहासिक घटनाएं हुई हैं वे अमर रहेंगी। इस अभूतपूर्व समारोह का प्रारम्भ १५ ता० के सवेरे ६ बजे गवर्नर जनरल, प्रधान मन्त्री व अन्य मंत्रियों के शपथ-ग्रहण के साथ हुआ और पहले दिन सवेरे [illegible]

कानपुर जिला जेल में कल स्वतंत्रता समारोह के सम्बन्ध में १५३ बन्दी रिहा किये गये। विदित हुआ है कि शीघ्र ही लगभग २०० और बन्दी मुक्त किये जायेंगे।

अलीगढ़

अलीगढ़ में सार्वी मैदान पुलिस लाइन्स, जिला कांग्रेस कमेटी कार्यालय तथा समस्त सरकारी भवनों पर झंडे लगाने के पश्चात शहर कांग्रेस कमेटी के कार्यालय से प्रभात फेरियां निकाली गयीं। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के पटांगण पर विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर ने राष्ट्रीय झंडा फहराया। जयपुर लाइब्रेरी में एक विशाल जलसा निकाला गया तथा सैयदे पहर ३ बजे एक सार्वजनिक सभा हुई। नगर को खूब सजाया गया और रात को रोशनी की गई।

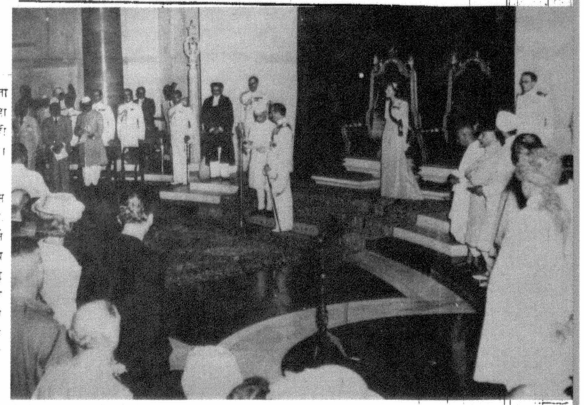

शुक्रवार को सवेरे लार्ड माउन्टबैटन बैधानिक गवर्नर-जनरल के पद की शपथ ग्रहण कर रहे हैं।

DELHI EDITION

The Hindustan Times Weekly

Regd. No. L. 4090

LARGEST CIRCULATION IN NORTHERN, NORTH-WESTERN AND CENTRAL INDIA

VOL. XXXV, NO. 328 NEW DELHI: SUNDAY, AUGUST 17, 1947 PRICE TWO ANNAS

HEARTY GREETINGS
From our Leader, workers and friends
R. S. GANESHDAS
DHOOT & Co.
FURNISHERS & DECORATORS
DELHI

Tricolour In Every Home; Cheering Crowds Cry 'Jai Hind'

INDIA'S MILLIONS REJOICE

Lord Mountbatten addressing the C.A. on Friday morning. Dr Rajendra Prasad is seated on the left.

BOUNDARY COMMISSION AWARD TODAY

DEFENCE COUNCIL DECISIONS TO STOP RIOTS

DOMINION MINISTERS TO CONFER AT AMBALA

(By Our Special Representative)

SCENES OF SPLENDOUR IN THE CAPITAL

SALVO OF GUNS HERALDS DAWN OF NEW AGE

NATIONAL STANDARD UNFURLED OVER RED FORT

By Our Special Representative

NEW DELHI, Saturday.—Soul-stirring events, crowded into 24 hours, marked the celebration of Independence Day. Beginning with the swearing-in of the Governor-General and of the Prime Minister and other Ministers at 9 a.m. yesterday and ending with the unfurling of the National Flag by Pandit Nehru over the Red Fort at 9 a.m. today, the capital witnessed scenes unparalleled even in its colourful history.

Pandit Nehru as the first Prime Minister and Lord Mountbatten as the first Governor-General were the heroes of the drama. They got receptions which any monarch or President would have envied. The outburst of popular joy was like the burst of a dam and the mighty torrent breaking through all barriers.

At least 200,000 swarmed round the Council House when the sovereign Constituent Assembly was addressed by Lord Mountbatten and the National Flag was unfurled over the Council House dome. More than 500,000 gathered in the Grand Vista on the occasion of the parade near India Gate when the National Flag was broken and the Governor-General and the Prime Minister saluted it.

There was a State Banquet at Government House followed by one of the biggest receptions ever held. This morning about 7,50,000 people gathered at the Parade Ground outside the Red Fort and the biggest cheer burst as Pandit Nehru [illegible]

Lord Mountbatten and Dr Rajendra Prasad greet each other at Government House shortly after the midnight session of the C.A. on August 14.

INDIA'S ACHIEVEMENT GREATEST IN HISTORY

MOUNTBATTEN'S TRIBUTE TO GANDHIJI

"ARCHITECT OF FREEDOM THROUGH NON-VIOLENCE"

संसद में स्वतंत्रता की 25वीं, 40वीं और 50वीं वर्षगांठ के अवसर पर स्मरणोत्सव

स्वतंत्रता की 25वीं वर्षगांठ

प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी स्वतंत्रता की 25वीं वर्षगांठ पर 14-15 अगस्त 1972 की मध्यरात्रि में केन्द्रीय कक्ष में विशिष्ट जनों को सम्बोधित करते हुए। मंच पर विराजमान हैं भारत के राष्ट्रपति श्री वी.वी. गिरि; उप-राष्ट्रपति और राज्य सभा के सभापति, श्री जी.एस. पाठक; और लोक सभा अध्यक्ष, डा. एस.एस. ढिल्लों।

भारत की स्वतंत्रता की 25वीं वर्षगांठ मनाने के लिए 14 और 15 अगस्त, 1972 की मध्य रात्रि को संसद भवन के केन्द्रीय कक्ष में एक समारोह आयोजित किया गया था। भारत के राष्ट्रपति, श्री वी.वी. गिरि; उप-राष्ट्रपति और राज्य सभा के सभापति, श्री जी.एस. पाठक; प्रधान मंत्री, श्रीमती इंदिरा गांधी; और लोक सभा अध्यक्ष, डा. जी.एस. ढिल्लों ने स्वतंत्रता सेनानियों, संविधान सभा के सदस्यों, केन्द्रीय मंत्रियों, संसद सदस्यों और अन्य गण्यमान्य व्यक्तियों को संबोधित किया। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान अपने जीवन का बलिदान देने वाले शहीदों की याद में दो मिनट का मौन रखा गया।

स्वतंत्रता की 40वीं वर्षगांठ

राष्ट्रपति श्री आर. वेंकटरमन भारत की स्वतंत्रता की 40वीं वर्षगांठ के अवसर पर 13 अगस्त 1987 को संसद भवन के केन्द्रीय कक्ष में उपस्थित विशिष्ट जनों को संबोधित करते हुए। मंच पर विराजमान हैं प्रधान मंत्री, श्री राजीव गांधी और लोक सभा अध्यक्ष, डॉ. बलराम जाखड़।

भारत की स्वतंत्रता की 40वीं वर्षगांठ मनाने के लिए 13 अगस्त, 1987 को संसद भवन के केन्द्रीय कक्ष में एक स्मरणोत्सव का आयोजन किया गया था। भारत के राष्ट्रपति, श्री आर. वेंकटरमन; प्रधान मंत्री, श्री राजीव गांधी; लोक सभा अध्यक्ष, डा. बलराम जाखड़; और राज्य सभा की उप सभापति, श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील ने संसद सदस्यों को संबोधित किया। देश की स्वतंत्रता के लिए अपने जीवन का बलिदान देने वाले शहीदों की याद में सभी विशिष्ट जनों ने दो मिनट का मौन रखा।

स्वतंत्रता की 50वीं वर्षगांठ

भारत के राष्ट्रपति श्री के.आर. नारायणन भारत की स्वाधीनता की 50वीं वर्षगांठ पर 14-15 अगस्त, 1997 की मध्य रात्रि को संसद भवन के केन्द्रीय कक्ष में विशिष्टजनों को सम्बोधित करते हुए। चित्र में केन्द्रीय गृह मंत्री श्री इन्द्रजीत गुप्त; राज्य सभा की उपसभापति डा. (श्रीमती) नजमा हेपतुल्ला; प्रधान मंत्री श्री इन्द्र कुमार गुजराल; लोक सभा अध्यक्ष, श्री पी.ए. संगमा; ब्रिटिश हाउस ऑफ कामन्स की अध्यक्ष सुश्री बेट्टी बूथरायड तथा केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री, श्री एस.आर. बोम्मई भी दिखाई दे रहे हैं।
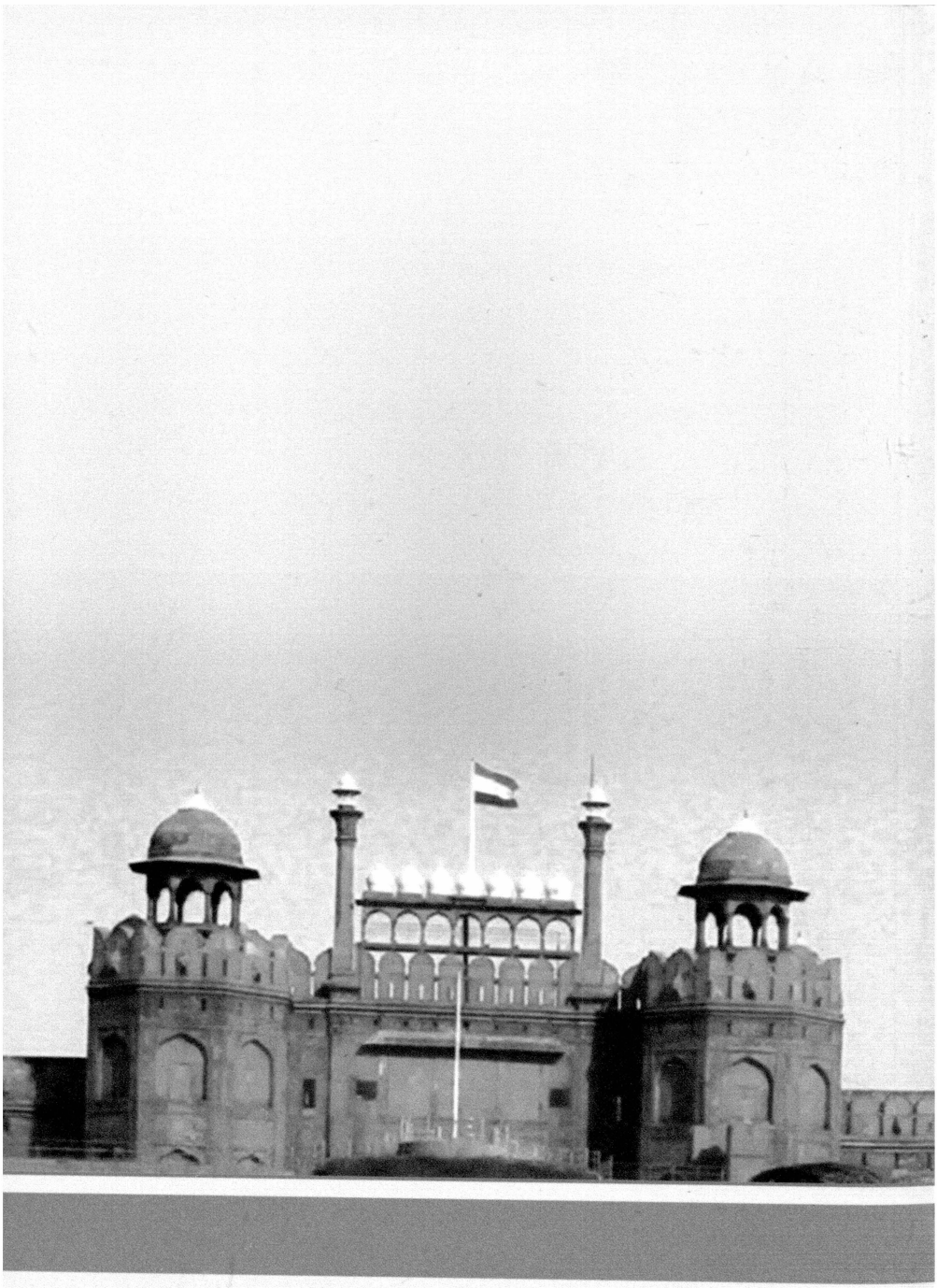
भारत की स्वतंत्रता की 50वीं वर्षगांठ मनाने के लिए संसद भवन के केन्द्रीय कक्ष में 14-15 अगस्त, 1997 की मध्य रात्रि को एक स्मरणोत्सव का आयोजन किया गया था। भारत के राष्ट्रपति, श्री के.आर. नारायणन ने सम्मानित जनों को संबोधित किया। राष्ट्रपति के भाषण का हिन्दी रूपांतर प्रधान मंत्री, श्री आई.के. गुजराल ने पढ़कर सुनाया। भारत की स्वतंत्रता के लिए अपने जीवन का बलिदान देने वाले शहीदों की याद में सभी विशिष्ट जनों ने थोड़ी देर मौन रखा।